を 322

डेशक गणिक।।

भारत भारताथ यान, मिश्च कह श्रांतिनी।
भारिश्वास करम क्रांति कर अहला ।
क्रिश्वास करम क्रांति कर अहला ।
क्रिश्वास स्वतिक्षयः मक्ति महत्त्व आह.
क्रिश्वास स्वतिक्षयः महत्त्व क्रियास्य स्वतिक्षयः ।
क्रियास स्वतिक्षयः स्वतिक्षयः स्वतिक्षयः ।

भागाः

गर छी न तत विक संग अगतित उम छाटन गांग गांग माट्याछ छ गहें में अगोंने दिए विक्रितित क्रवाशन जिल्ला मर्स्ट मांज क्रिति गर्देन में क्रिक्ट मर्स्ट अंग विक्रम स्वर्गी कुछ वर्तमान अस अप्राणित क्रिक भारत विक्र जाविश संख्या

कट्ट गरी उस अक मन सिट्टनस ্রিছকাল করি চল তীর্থ পর্বাটন ।। ভিনার সংগার সার, এগ্রন্থদন। শায়াগালে বন্ধি সত অনারণ B ্বির একত আদি করিবাছি ছির। बाब। डील स्थि स्टा बिकाल बजीह । कीरण कीपूर्ण महस्रमा कृति (मकाप्रदेश). इंट्रेड विकामी जिल्लाभा अवि । শুনিফ কহিব তবে ছিল স্কেশ্স: ल्ला पूर्व देखारा गया का निवा १ ४४ ॥ रिन्द्य कि यन उद्द इन आध्याह । এক নিৰেদন মৃত্যে আছে হে আমার ও जाशनि गर्रे छ निष्ठ, गाउँ वशक्त २ है। जिल्लामिय कह, कर्व मिहरूव h ্বি হাসি গুণাকর করিল স্বীকার। স্ংশোপনে দুইজনে হৈল অভিসার॥ বিভুত্ত দিন পারে তবে সপুরা পাইজন ু কুও তাজিয়। হরি গথা জন্ম নিল ।। বেই রূপে বেই ছামে করিল বিহার ে দেবিয়। দৌহার অতি আনন্দ অপরি

উথ: হৈতে সমত্ত্র হয়ে দুইজন। নমুন্ত হইয়া পার গেল রন্দাবন । नूरेक्ट्रेंन माना जीव कति शर्वाहेन। शक्त श्रामित क्या भनामक गरा। অতি ওর। মারকাদি কবি দরশন। প্রাণেতে আমি মাথা করিল মুওন : ত্রে কত দিম পরে বারাণ্ট্রী পান ম্দিনাৰকাৰ আটু কৈবিলেন প্ৰক্ৰ এরপুর্ বিক্রেখনে ব্রিচা জন্ম অলিভাৰ চলে লোকে না করে বিভান -সমূর গণনে চলে হইয়া তৎপ্র: খন্ট পক্ষে উপনীত বিহল নগর।। অতি এম্য নীলগিরি গিরিল প্রধান ! মধা দেবী কামিকা রূপেতে মূর্ভিগান।। रिश्वकर्मा श्वाचिम्बंड (मर्तिब मन्दित। সুর**পুরী সম**পুরি ভাত্তর বাহির।। मिथे कार्येगित औड, विज हरेकर। ब्यामित्र भारत यथ। करि महम्म । · দেবীর সন্মুধে যুগা করি খেগোসুন। विक्रव शक्षि शार्त मारक प्रदेशन ।

্উপক্রমণিকা।

দেখিয়া বিষয় চিত দিজ সর্কোশর।

তথাকরে জিজাদিল যোড় করি কর।

কহ মহাশয় কেবা, পুরুষ রতন।

দেবতা, গন্ধকা, যক্ষ, রক্ষ, কোন লন।

কোথায় নিবাস এই কাহার নন্দ্র

নীলানির আল রূপে মন্নথমোহ

হতি জিনি কে ন্যুনী বুলি ভার্যা হবে।

ভানিয়া ইয়াংহালি কন্ ভান্কর।

ভানিয়া ইয়াংহালি কন্ ভান্কর।

ভানিয়া ইয়াংহালি কন্ ভান্কর।

যদি জারা সহায় নহিত। তবে আজি প্রমাদ ঘটিত ॥ কামের গভীর সিন্ধুজ্ঞলে। বলহীনা পড়িত বিকলে !! নবীনা না শিখনে সাঁত'র হায় আজি কি হইত তার।। তবে বার্ণে জর্জার নাগর। সহায় বিহীন সুকাতর 🛭 কাতরে প্রিয়ার ধরি করে। न ता धनी अम शूकि श्रत ॥ ছলেতে বুঝি প্রিয় বচন : অধিক**্রি**সে করে দাহন।। চির বিরহৈতে তন্ম জ্বরা। ত্যকে ধৈর্যারে হয়ে ধরা।। **লাজ** ভয় গেয়ে বাহিরে যায়। ব্যর শর ভয়ে ভর পলায়।। <u>্সক্রা</u>য় প্রিহীন হয়ে ধনী। क्टर किम अटर खनमनि।। সত্য **শরেশ**র অরাসনে। প্রাধ্বাহিরার আর ক্ষণে।।

যদি কোন হে থাকে উপায়। বোড়শোপিচার আদি পূজায়॥ ত্র। তোষ রতিরতি পতি। নতুবা নাথ নাহি নিক্সতি।। ইঙ্গিতে তবে জীমনমে। হ্ন। মহানুদেতে হয়ে মগন।। কাঁপিতে **কাঁপিতে** রামা ধরি। বিসাইল উরুর উপরি॥ লীলামর হয়ে মেঘাকার : ঢাকি আহে মুখ শশী তার।। কর কল করিয়ে প্রন। নাগরেন্দ্র খুলে আবরণ।। মুখ রাকা সুপ্রকাশ পায়। সাতি হুধা হুমালিতি ভায়॥ নাগরের চকোর নয়ান। বিষ্ণল হইয়া করে পান।। तमनात नेश हरा उपा করমুগে করিয়। সহস্থি।। দারে দারী দুহারে রাখিয়া यान क्या चारम औरविश्वा ।।

मध रुरा शान करत्र स्था। তৃপ্ত নহে আর বাড়ে কুধা।। অবলা ভাবিছে মনে মনে। विश्वि वली कतिन अक्टन ॥ লুটে ধন সকল আমার। ক্রমে বৃটিবেক যত আর ॥ লাজ আছে বসিয়া বাহিরে। **এ সম**য় কিছু লই ধীরে ॥ ভাবি সরসনা সে রসনে। মিলাইয়া অতি সুখ মনে॥ ধনী পান করে স্থাপুর। शरियां श्वी**ाग्र देशर्या मृ**त्र ॥ আধ আই খুলিল নয়ন। স্থে তারা হইল মগন।।

িহার্ছলে র**ি রমণের ফোড়ফোপ**ল ছারে পুজা

্ কৰি আৰিছিল। এসরতি, সহপতি, সঙ্গেতে । শামসগণ। কেল হে থাকিয়াস্তবে, দাহৰ কর অনুরে, পূজা নোড়শোপচারে, আমিয়া কর এছণ । আসন হুদিকমলে, পাদাবি নেত্র সলিলে, বিবহায়ি দীপোজ্জ্বলে, নৈবিদা গৌবনাপণি, চন্দনাক্ত তান প্রে, দিব জীচরণ প্রে, কিছিনী কছণ বাসো, পরিব মনরঞ্জন। নাথের বিরহায়িতে, সন কাষ্ঠ দিয়া তাতে, আত্তি প্রাথ হবিতে, আশি অর্থা সমাপণ। জীতারাচবণে কয়, কুল ধান লাজ ভয়,

मिश्ष्यम्।

নাগর থবি চক্র বদন,
চুম্বতি ঘন রক্ষে।
পূজন লয়ে আপনি রতি,
মন্মর্থ করি সঙ্গে॥
পূর্বক রণ, পঞ্চ বদন,
পূজন বিধি সারে।
সাদর করি,

পূজিল উপহারে। \
নিরজ কর, অপণ করি,
চন্দক দশ সঙ্গে।

यर्थत्र यम, पर्या उपिक. **इन्हर्भ किल इंट्रिक**!! **इश्वर भूथ,** व्यामान कति, সারিল শিব সেবা। স্থাপন করি, উক্লরোপরি. পূজতি নিজ দেবা ॥ জ্পন সভি, বাদন করি, शृक्त रिधि अदिना। উরু যুগল, আসন দিল. भित्र भित्र भारता প্রেম মিলিত, পূর্ব পুলক, অর্থ্য কুস্থম মানে। ্রেছ অমল, চন্দ্র জল. তায় করিল দানে। প্রাণ কুমুম অর্পণ অতি, যত্ন করি বিহ্বলে। উপশুল চয়, গন্ধ বিনতি, অপিল ধ্বরি কোলে।। जानत हज, धुर्भ निहम, मीश मधुत शास्त्र। (138) ·

(সাপকরণ, গাঁচ রমণ, जार्शन ति जारम।। দোলনগণ. স্পিস্থ্ পিউৰু বহু গণ্ডা। গোর স্থন, চুম্বনচয়, मर्फन्शन मुखा । জন্তন জন জীতন রস. বারিধি ভরি তাতে: পান সলিল, দান করিল; जानह हम मार्ड ॥ -খেদ সলিল, আচ্যনক. অপণ করি হাসে। কেভ্ৰুক চয়, পূৰ্ণ নিচয়, : অপিল মুখ বাদে ৷ শেষ করণ, আরতি ইই, छेम्राम क्षि नाही। कल्लाउ घन, जेक रहेन मीश वंशककारी॥ কৰ্মণ কৰ; नियम चम्, কুৰ্মতি পিক কণ্ঠা।

নুপুর রণ, রানিত সহ,
রায়তিবর ঘণ্টা।।
পূর্নিত পুন, রম্বুধি পুন,
রাচমনক চর্ব্যা।
নাথ উরসি, রাখি যুবতি,
অপিল স্কুখ শ্যান।
অসর ধরি, ব্যজন করি,
ভূপ্ত করিল তাবে।
মানন্দ অতি, বন্তি রতি,
পূজন রসসারে।।

বিহার ছলে পূজাতে যাগী। পদ্য।

पूजा अत्य क्रमूद्ध कारमत यांग करत।
रेज मान कर दिन किंगिंग हरत।।
वीक्ष लाख धंनीवरन नाथ कर किरह।
विकि अकि अकि कर लाख्य प्रतिहर।

বলিলে করিব আগে শিব আরাধন। তদন্তরে রতি সহ পূজিব মনন।। পূজান্তেতে হোম করি মন্মধে তুফিব। এবে একি কর নাথ কোথা তব শিব।। কোধায় মদন রতি পূজা আয়োজন। কোথা দেবী জ্ঞপানল কোথা ছোতাগ कुमात वलास धनि एहे प्रत्थ मद। यूर्गन मग्नज्जु ७३ क्ठम्म उर ॥ गग कर्ताञ्चल श्रिंपन जिल्लान । কদলীর তরু এই জঘন যুগল।। স্থানিতম্ব ঘট, চন্দ্রার চাদ্যালা ! অধিষ্ঠান হতিপতি দেখ কুলবালা॥ পুজিলাম শোড়বোপচারেতে মদন। <ि । शिक्त की स्राप्त स्था स्था का स्थान का स्थान कि स्था कि स দেখিয়া বুঝিতে নার এ আর কেমন। আবাহনে পূজি যজ্ঞান্তেতে বিসর্জন।। যজ্ঞ বেদি কটি তট এই যে তোমার। তদাধ ব**্জের কুও কামায়ি অপার**॥ শ্রুপা**ছে আমার কাছে আমি হোডা**চার্য্য হবিদানে মদনেরে তুবি হও থৈব্য।।

रेनिविषा प्रथंश विल कुठवंश धति। বদন চুষিয়া বলে আচমন করি॥ ত্তে শ্রুপ লয়ে কুণ্ডে অর্পণ করিল। প্রজ্ঞলিত কামানল জলিয়া উঠিল।। পেথিয়া কুমার দেয় সমনে আন্ততি। প্রোবেতে পূজা লন রতি রতিপতি॥ আবেসে অবস ধনী বলে আছা আছা। শিয়া কুমার ঘন বলে বহা বহা ।। অনল উত্তাপে লোহে তাপিত হইয়া। সর ঝর ঝরে ঘাম শরীর বাহিয়া।। পদ্ধতি প্রমাণ মন্ত্র সমাপ্ত হইল। ক্রপোপরি পূর্বুতে আফ্তি অপিল।। " বসু**ং জলোদ্ভব শীতল ভব "** বলি। জীবনমুঞ্জরী ধনী দিল দধি চালি ॥ পুরাহতি দিয়া যজে নিভায় অনল। प्रदेशका (भारत प्रांटर पूर्व क्रिये कन ॥ বজ্ঞা**ত্তেতে সদাল গর্ণরী করে লৈয়া।** मिकनान्त देवन प्राटश वाश्रितरू शिया।

शकामा विश्व

গুয়া। কিবে বিহরে নাগার নাগারী।

আনম্বে অফ অফোপরি।।

নবর্মে গ্রগর, কম্পাকে হার প্রন^{ী ন}

ফলে ধনী উঠে শিহরি।

কাহসিক, হতে পার, নব নাবিক নাগার।
ধীরে বাহে নব ভরি।।

তে। টকচ্ছন

ন্ত্রনার্ক্ত বিকাশিত হোরি স্থেশ ধরিয়া স্প নন্দন হাস্যমূথে। করিয়া কত কাকুতি কান্ত কহে। কর কামিনি শীতল কাম.দহে।। স্মর না কি ধনি অপনের কথা। করুণা করিয়ে কর পুর্ক্ত মথা।। বর ভূপ স্থতা কহিছে শুনিয়ে। কহিতেছ কিবা কিছু না বুনিয়ে। স্প পুত্ত কহে যদি নাহি মনে। করহ সৃতি দেখি ভরা নয়নে।। विन जीतमत्न कृष्टनाथ शतः। त्रमनी खुक वांशिन गिशि एतः ।। স্পপুত্র ধরে তুজ**্ব ভাবভরে**। थुनि वाम উরোজ বিমর্ক করে॥ খন⁷চুষি মুখে ভুজ রাখি গলে। थुनिएइ किं विकास वास्वरन ॥ অবলা অবলা হইয়া সরলা। কর বারিল বধুর পাতি ছলা॥ র**স-নাগর** কাতর বাক্য ক**ছে**। मृतू इाति धर्मी भूमि त्ना तटह ॥ বুঝি ভাব স্থনাগর ভাব ভরে। চিরসাধ মনোগত পূর্ব করে।। অতি চঞ্চল **মত্ত** করীর **ভ**রে। निनी क्रिक किना एटत निरुद्ध ।। করিয়া কত কাকুতি বাক্য কৰে: প্রিয় ছাড়হ ছাড়হ নাহি সহে।। **নহি পুষ্পিত হে** বয়সে তরুণা। **অধুনা ক্ষম হে** করিয়া করুণা।। मिलि कि इति स्थ भीत इति। রহি ভুঞ্জিতবে বহু কাল রবে ॥

মত বাকুতি **কামধুরা করিছে** ৷ দ্প আগ্রুজ আস্য মুখে ধরিছে বর-মাগর পণ্ডিত কামর্গে। क्य हुधि बूट्य जतरत नत्र । প্রিয়কান্ত রুমে অতি শান্ত হয়ে। **উপজে সুখ** हो मशुथि क्तृ हा ।! मूर कृषि निष्क तृश् व्यम्भूद्य। तमनी जग्न ছाड़ि विद्यान ऋरथ ভয় দূর হলে পর লাক ভয়ে। রয় মাত্র ভেষা গতগৰ হয়ে।। ময়**নে নয়নে বয়নে ব**য়নে। মিলিয়া মিলিয়া চরুণে চরুণে 😥 বসিকা রসিকে রভি রক্করে। फ़्रि कामब्र**रम मद्ररम** विक्रत ॥ নয়নাবলি চারি চকোর হয়ে। করিছে মন তৃপ্ত কি চন্দ্রলয়ে। অলি চারি কি বারিজ যুগ্রহরে: পরিতোষ হয়ে মধুপান ক্রে ॥ দুহ সাধ বিপরীত অধবলে। उथरल उन वाहिषि भध करल ॥

ত সরসজ্ন।

ম্পত্ত র্জমুড! রুমার্দ্ধ। নব রম কেলি। বিল**্স** তরকে॥ রমণ পণ্ডাল কারণ মতে: করিল প্রস্পার মুদ্রিত দত্তে॥ च्चय भगा। भग्नतम माधा माती। কত রম ভাষ করে ধ্রকারী॥ নিজ নিজ খেদ করে ধরি পাণি: কহিল মনোগত যে ছিল বাণী । পুনরপি মানস কেলি তরজে! विविध विलाम करत वह बरक ॥ নব রমণী নব ভাব বিকাশে। রজনী করে গত রজ বিলাসে।। দুহজন পুরিল মানস সাধা। निश्न पूर्वात तरमे कि हू वाथ।।। নিজপতি যদ্যপি আপন নারী। তবু রম গুপ্ত মহাস্থকারী।। অর্সিক যুক্ত নহে জাতি মূচে। স্থ্যসিক খোদিত এসৰ গুঢ়ে॥

গুণমোহন স্থা মনমুঞ্জরীর গৃহে গ্ৰহ্

রাণিনী দিন্ধকাপী, তাল জলদ তেতাল।

পদ্ধ। অধিক কি কৰ প্ৰাণ জানত আমি ঘেমন। मम । १६ छ। डिभाग, छन्त्र मन्दित नाम, कत उद्दे निर्देशन ।। कर्णक ना एसंबे याने তোহাৰ বদৰ খন ছতি চথাৰ, নগৰ জয় সজল, মুখে না সরে বচন।।

अमर।

হবে হাসি উঠি দোহে জল নিয়া মুখে ায়ুল ভোজন করি শুইলেম স্থেষে॥ রদের আবেদে নিদ্রা ধায় দুই জনে। স্থের রজনী পোহাইল সেইক্ষণে।। भाषा जानि उठिया हिनन पूरे क्या। त्किकन्ता मगीट्यां आहेल मिश्रान ॥ प्रिथि ह सम्भूथि लाटक छोकिन रमन। ঠারাঠারি করিয়া হাসিছে স্থিপণ।।

এগুনমোহন বৈদ্য আইল ভথায়। শীমনমুঞ্জরী মুখ ছেরি স্থপায়॥ ্ৰাসিয়া জিজ্ঞাদে কল্য বিবাহ হইল : গুনি ধনি চন্দ্র্যুথি নম্রয়ুখি ছইল ॥ ৈত্ত হাসিয়া কহে করিয়া বিনয়। তবদয়া হেতু সংখ এত স্থোদয়।। তবে কুমারের কাছে পাত্র পিয়।। মিলিল তাহার পার্ছে হাসিয়া হাসিয়া। প্রেং**সখা** দেখি মনমোহন উঠিয়া : নিলাসনে বসাইল আলিক্স নিয়াঃ কাহলেন গুল ছেও ভোগা সকাকাৰ। সকল সুখোদয় হইল আমারা। ংইফানে যাইব দেখিতে স্থাগনে। াচকে আমির পুন প্রিয়ার ভবনে 🖰 হক্ষতে আসিব যা**ইব হেথা তথা**। ে শাইল পাত্র পুত্র কন্যায় বারতা ॥ ওনিয়া কুমারী কহে বিনয় করিয়া। দেখ <mark>সথা আমি ফেন, না যাই মরিয়া</mark>।। েহ শূন্য করিয়া লইয়া যাবে প্রাণ। ूनक व्यक्तिया निरंद यम व्यक्तिया

ঞীগুণমোহন কহে না ভাব বিসায়। অবশ্য পাইবে তারে সায়**হু সম**য়।। তবে রাজকন্যা অতি বিহাদিত মনে। কুমারের কাছে গিয়া সজল নয়নে করে ধরি কছে নাথ যাবে স্থা স্থান। ভব সধা কহিলেশ মম বিদ্যানান সংগাণণে খিলি তরঃ আসিবে ফিরিয়া রছিলাম আমি পথে নেত্র আরোপিয়া চিত্রমোখনেরে করে মের স্থায়াদ! তার ভণে ঘূচিল আমার সে বিষাদ॥ मिथ यम जुलिया ना (थक अमामीरतः পুরুষ ভ্রমরজাতি তথ আন্থে ফিরে। **प्रिश मिल्मीत काल (यहे अलिकू**ल । প্রমত্তে জময়ে কুঞ্জে দেখি নানা ফুল এক ফুলে মধু থেয়ে অন্য ফ্লে যায়। পুনরপি তার পানে ফিরিয়া না চায় 🖟 তেমতি পুরুষমতি চঞ্চল সদায়। कुटनत्र कामिनीगर्ग जकुटन रकनात्र ॥ বিশেষে বিশেষ আনি আছি জ্বালাতন ভাবি নাথ পাছে পুন হয় হে খপন।।

मा कुँन मा कुन करह ठत्रर थतिरह। শুনিয়া কুমার কহে অধর চুমিয়ে 🖟 ন্ম দেহ দেহমাত্র তুমি মন প্রাণ। প্ৰাণ ছাড়া কেমনে বাঁচিব বল প্ৰাণ।। পায়ক সময় আমি নিশ্চয় আসিব। **েও বার্তা স্থাগণে কহিতে ঘাইব**া বে অঙ্গুরী **আছে সঙ্গে** কারে করি ভয় : বাইব আ**সিব যবে বেই ইচ্ছা হয়**।। গুনি বাজকন্যা তবে ঈষৎ হাসিল: हराद्वत वर्शकती लहेश आहेल !! হাসিলা **আপনি পদে দিলেন তাঁছা**র। প্রকী রূপ দেখিয়া মানিল চমৎকার !! হাসি হাসি ধনী চলি পড়ে স্থী গায়। শ্দিয়া সঙ্গিনীগণ অনিবি**ষে** চার।। াত মধ্যে রাজকন্যা এত রঙ্গ করি। েহিরে আনিল তবে পক্ষী করে ধরি॥ े उन्दर्शाहरन धर्मी हामि हामि क्या। দেশ **সংখ পক্ষী এক করি আছি ক্রের**॥ তত্ত মূল্য এ প্রক্ষীর করছ মির্ম। ্রনি মৃদুহাসি পাত্রপুত্র তারে কর।। (22)

ত্তপরা এ কান্তার যৌবন রতন : এই মত্তে এ প্রফীর মূল্য নিরূপণ্। শুনি পাত্রপুত্রে পক্ষী ধনা ধন্য কয়। লজ্জিত। হইয়াকন্যান্যু মূথে রয়।। হাসে পাত্রপুত্র আর হাসে স্থীগণ। পক্ষী বলে প্রিয়ে লক্ষা করত তাজন । मर। कर्डा कामा मह कहिएउ रध्यः किছ দোষ नाहि श्रिएय लड्डा कि कातः। এতেক কহিয়া তার লজ্জা এছি দিল। তবে স্পস্তা ব্যক্ত হানিতে লাগিল शकी भारत देशमानाक कतिन शहरा। স্থাগন স্মীপে গেলেন সেইক্ষণ। অফুবী খুলিং) দিতে বাসপুত চকে : অংশিক্ষন করিলেন স্থাগণ সক্তে।। আনদে হইল পূর্ণ সবাকার মন। শুজপুত্রে চাহিয়া কহিল স্থাগণ। **उद ऋट्य छशी मुदा आमारमह मन।** সরা হেখা আনিতে নাহিক প্রোজন 🖟 দলে পাঁচে হেথা মাত্র আপনি আসিৰে তাহে আমাদের তথ অধিক জানিবে।।

শুনি স্থাগণে পুনঃ দিরা আলিজন।
কহিছেন রাজপুত্র সপ্রেম বচন।
তোমাদের গুণে হইল এত স্থোদর।
শত্য আমি ঝণী হইলাম স্থানিকর।।
শুলিতে নারিব কড় তোমাদের ধার।
কবি কহে এই দেহ জীবন তোমার।।
ভিত্রমোহনেরে কুমারির কথা কর।
শুনিয়া হইল সেই প্রকল্প হারঃ।

भनभूक्षतीत मान्।

বাগিনী বিভাষ, তাল মধ্যমান ঠেকা।

গাও হে যাও বঁধু গার বঁধু তার কাছে যাও।
এখানে থাকিয়া কেন যামিনী পোহাও।।
এই মনে অনুমানি, মানে আছে কুমুদিনী,
অতেব কি গুণমণি, আইলে হেথায়।
নহি তব প্রিয় জন, হেথা কিবা প্রয়োজন,
যথা তব প্রিয় জন, বাওং হে তথায়।

রজনী হইল গত, নিশাকর সভগত, দেখাতে বহি আগত, আমে দিবা নিশি যায়।

भेन्द्र।

মহানদে মথ হয়ে সব স্থাগণে। সুখাকিতে ভাষেন সরস আলাপনে !! বাহা জ্ঞান সারাইরা জাছে হর্মনে: দিবাকর অন্তগেল ভ্রমে নাহি জামে 🕫 উদয় হয়েছে শশী পুর্নাসী পায়ে। দিকাজাতে আছে মবে ধৈষ্য ছারাইফে কতক্ষণে ভ্রম ভক্ষে রাজার তনয়। অঙ্গুরী অঙ্গুলে পরি পক্ষীরূপ হয়।। উড়িয়া যাইতে চাহে না পারে উড়িতে লোচন বিহীন যেন না পায় দেখিতে 🕫 ফাঁফর হইয়া সব স্থাগণে কয়। अक्रुशी भूलइ छाई जीवन म्भागा। ত্বরান্দুরী খুলি তারা জিজ্ঞানে কারণ। বছ বিলাপিয়া কছে জীমনমোহন।। मना दर्गादेव कुछ न्यांत्र देशन शूर्तामञ्च र्राक्षी (पट्ड ७ छ्रशटक पृष्ठ माहि इत्र 🗈

পক্ষীরে বিপক্ষ পক্ষা পক্ষ নাছি জানে । गांशक अमिजशंक अदिखियां दित्य । স্বনেহে যদ্যাসি হাই প্রিয়ার ভবন। হারে দারপালগণ ব্রধিবে জীবন। যাইতে প্রিয়ার বাদে না দেখি উপায়। হারা নিধি হাতে লয়ে হারাইর হায়। শাসিবাৰ কালে খেতে চরুলে ধরিয়া। ग्टब्क रहिल भिशः कान्तिश क्तिशा ায়কে আদিত কহিয়াছি ভার স্থান : াম আন্দো জাছে প্রিয়া পথ নিরক্ষণে ॥ মিশিগতে কেম্পে মাইব প্রিয়ালয়। অনুরাগে এ বিরাণে ত্যজিবে নিশ্চয় ।। ওইরগ মনাজিত এমনমোহন। গ্রবাধ করিছে মিলি সম সংগ্রাণ া হৈতা প্রিয় আন্দে কন্যা বা**সর শ**যায়। ্বেশা নৈরাশা হয়ে করে হায় হায়। ন'থ না আইল কেন আইল নিশানাথ। শশ্যৎ আসিছে বুঝি কৃতান্ত প্রভাত।। কান রক্ষীর **সঙ্গে রক্ষে ভোর হ**য়ে। সরকে আছে বঁধু আমারে ভূলিয়ে।।

নবৰয়া পেট্য় বুলি পুন না আদিব। জানিলে কেন গো মম্প্রাণ সম্পির " লাভ ভয় কুলমান দিলাম য'হারে অকুলে ফেলাতে স্থি উচিত কি ভারে এমত হইতে বলি যদিগো জানিব। **তে**বে কেন কুল ত্যক্তি অকুলে 'আসিব': এত দিনে জানিল'ন পুরুষ যেমন। 🕐 বুকিলে। সজনি পুনঃ ছইল অপন ।। আজি হইতে পুরুষের মুখ না হেরিব। ধিক ধিক হিক নারী আর ন। হইব ॥ দিক মুখ প্ৰাণ কেন না যাও ছাড়িয়া। এখন দেহেতে আছ প্রিয় না হেরিয়া এত বলি তাজে হার কুওল কন্ধ**া** পূরে ফে**লি** দিল আর **যতে**ক ভূষণ।। হায় হায় করে **খাস বহে** ঘন্ঘন্। क्छ महाजन क्छू इंट्र करिंग्जन । ক্ষণেক শ্য্যায় ক্ষণে রহে ধরতিলে करनक बाहिएत करन मधीरमत (कारन পরাধরে ধরাধরি ধরা নাহি খায়। অধিরায় ধীরাগণ যতেক বুঝায়।।

কিছুতে নামানি ধৈৰ্ব্য দ্বিপ্ৰহ্র গতে। मश्रीरमत कारल निमित्र करिश करिश्र र्माटक হেনকালে গু*ে*ভার উদয় হ**ই**ল। পক্ষী রূপে মৌনে মনমোহন আইল ॥ আন্তে ব্যস্তে স্থাগিণ খুলিল অফুরী। বাজপুত্র কহে কহ কোথ। প্রবেশ্বী ।। प्तान जान जानतेषु कर्ड् मङ्ग्रही । মনেতে আছুহে তাল ভাল মরি মরি।। দেখ দেখি সেই রূপ কি রূপ হয়েছে। ম। জানি বিরহানলে অংছে কি মরেচে। িয়াৰ বিচ্ছেদে বায় অত্যন্ত কাতৰ ' ित**्रेश्टरत (मरथ पू**ृहर्य मुश्लि **अस्**त्र 🗉 নগী কোলে হইতে প্রিয়ানিজ কোলে নয়ে। াহে আইলাম ধনি দেখহ চাহিয়া ৮ ারেক হেরমা হেরি পূর্ব চন্দ্রাননে । াঞ্জল চকরে তোব আস্থ্য স্থাদানে ৷ ন'থের পর**েশ ধনী পাইয়া** চেডন : ান ভরে মৌনে কছে মুদিয়া নয়ন।। ং স্থি কি শুনি কি আইল নিরদয়। ন্তুৰা **কেন অজ্হীনে ম্মাহুদ্**য়॥

কেন গো নির্বাগানলে মৃত ঢালি দিল।
কাদয়ে বিরহানল জ্বলিয়া উঠিল।
কি ফল বিফল সই বিদ্য়া এথানে।
কহজার বঁধু বঁধু ঘাইতে সেখানে।
হে সথি তাজিয়ে কভু নবীন কনলে।
ভামর কি মধুপান করে বাগি কুলে।
এতেক কহিয়া ধনী রহে মান ভরে।
গেখি শুনি কবিবর কহে মোহনেরে।
লাঘু মধ্য মান নয় যে ভাংবে কথার।
পায় ধরি ভালমান হয়েছে দুর্জিয়।

अभनत्गाहत्मत दिवा गत्यां ।

भारा।

याम महत्रावदत पूरि किन्मरमाह्म।
मजल नक्रेंट्स जारम विवादन मध्य ।
किन्स राजाम व्यक्ति मध्य प्रति।
ध्यमाम प्रकृत कर्ति मस्तिनीत मारम।

সকা<mark>তরে কহে প্রি</mark>য়া ত্যক্ত অভিযা**ন**। দেখ তব যানানলে দাইতেছে প্রাণ ।৷ কুত্ কুত্ কুত্ করে জমর ঝহারে। রবি রূপে এলো শশী মান দেখিবারে । श्क्षित रमनाशीरन कहे: (क्रांट हांग्र) ণবিষাদ বদনে কেন বৈবীরে হাসায় " ত্যেমার শপথ যদি জানি তোমাবিনে। হব। প্রাণ রাখ মহে দহে অঞ্হী**নে**।। ाठ दिन कामरा ध्रतिल नुहे भन। তপন কান্দিয়া ধনী কহে আধ আধ ।৷ ्रा श्वात **जारण तार्थ** निवातिरम् सन । জড়এব হইল <mark>নাথ নাত্থ</mark> দর্শন । ালণে তেম্মার কাছে এই নিবেদন: अङ्का कत्र. **मिरुनाथ खीरान भीरन** ॥ ্নি প্রিয়া **দুঃথে আর কান্দিতে** লাগিল। োলে বসাইয়া বজ্ঞে বয়ান মুচিল।। ^{ভবে} আর **ডিলে আর অন্তর না হব**। থাজাতীত একপদ পদ না বাড়াব।। ्नानी **रहे (तह ए७ हाजित छजुदत**। টুজপা**লে বান্ধি রাথ হুদি কারাগারে**॥

. একান্ডে একান্তে কা<mark>ন্তা করহ</mark> তা**জন**। গ্রিয়জন বিনা প্রাণে কোন প্রয়োজন এতেক বিনয় করি নেইতুক প্র**সক্তে**। সাওনা করিয়। ভাবে মুখানি তরজে হাসি দেতেই দোহামুধ চুম্বন করিল : অনতে মাতিয়া এন এবশ হইল ॥ • রতি উপক্রনা নাবে দেখি করে ধনী, ছি মেনে দিবস ওকি কর গুণ্যণি।। স্থীগণ **অংছে তাহে প্রভাত সম্**য় ! **হে নিলজ্ঞানিতা বা মৈগুনে আয়ুক্ষ**্ রায় কম ম্দম বাবেতে প্রাণ লয়। রুবিয়া বাহিতে <mark>পারি বাহে আ</mark>য়ুদ্র 'হাড়'ল যাচ**কে** লাজ হ**ইলে জু**ধা। বিশেষ কে কোথা ত্যজে ঝাদ পেয়ে 🕾 शामि धनी गटल नाश्रुजाम्हर्श वहन । কুপায় কে করে কোথা দুষ্তি ভোজন স্থাপাদে তথা **সহ আধার আ**হার। না শুনিয়া রতি মদে প্রমত্ত কুমার 🛭 হাসিয়া বাহিরে উঠি গেল স্থীগণ। निरादत त्रभी नाष्ट्र अनद्य त्रभा।

নময়ে রমণ রমণীরে কত রক্তে ।

সিহরিয়া উঠে ধনী মদন আতকে ।

সেপনে জ্বন ঘন হেলিছে দুলিছে ।

ক্রন্তের রক্তে নব নাগর প্রেলিছে ।

ক্র্যুল কলিকা কুচ কুছ স্থাপোডন ।

নাগর করেতে ধরি করিছে দলন ॥

ক্রে আশ প্রয়াস মানসেতে উল্লাস ।

ক্রি প্রন করে দেহিছ অধর চুছন ।

ক্রি পুন করে দেহিছ অধর চুছন ।

ক্রি পুন করে দেহিছ অধর চুছন ।

্ন্যার **গৃহে** রাজার ও রাণীর গন্ম।

রাগিণী মোলতানী, তাল হরি।
দাফি হয় হে দিবাকর।
করে করে করে নারে দেন নরবর।
ভানিয়াছি হড বরে, কন্যা, সম্ভালান করে,
নিবে মস পিডা মোহর, দান করে বর।

224

* পাইয়াছি নিম্ন পতি, জানে জীজগৎপতি; প্রমাণ আছ্যে তারা নাছি মম জন।। পদ্য

এইরপে রাজপুত্র আছমে ভথায়। 🍃 কভু কভু স্থাগণে দেখিবারে যায়।। গোপনেতে হুকুমার নিত্যভুঞ্জে রতি। লঙ্গিতে তাহারে কার না হয় শক্তি॥ চিরবিব**েছর তাপ আ**ছিল দোহার। নিত্য নিত্য নব রুসে কর্য়ে বিহার ' মর প্রমালাপে মর মাগরী মাগর। নবরাগে ভুঞ্জে রতি বর্ণনে বিত্তর !! বাদ্য সভ্যগীত আদি অশেষ প্রবন্ধে বিপরীত আদি রতী তুজে মহানদে अভिशात मार्कन द्वां निविद्यात । ি নারিলাম বাছল্য বর্ণনে গ্রন্থ বাড়ে 🗈 রাত্রি দিশ এই মত রতিরস রচ্চে। व्याष्ट्रके शहर कराय क्यांकीह मटक ॥ **এक मिन ताका जानी (मथिए) कन्या**त्र ' भाग मात्री गर्ज कति । आहेल उथाम

मृत इंटि ठा अवादि मिथ मधीश्रमः कन्यात मशीटनं शिया देकल निरंत्रमन ॥ শ্ৰা রাণী আহিছেন প্রমাদ ঘটিল। क्ष शिश्राभेटम धनी अनी अनी किन ॥ দ্রপ আসিবার পুর্বের নাথে পক্ষী করি। করে বসাইয়া ইতে তাছয় সুন্দরী॥ পক্ষী সচে হানি হাসি কহে নান। কথা। ্হনকালে রাণী স্প আইলেন তথা।। নুৱে হৈতে দেখি কন্যা সম্ভ্ৰমে উঠিয়া। প্রণাম করিল দোহে সন্নিধানে গিয়া। अभीकीं प कति एगाटर निवधि कन्यात्र । মুখা নে**খি ভাষে মহাস্তথে**র বন্যায়।। কৰে বৈদ্যরাজ গুণে অতি গুণবান। ঘোরব্যাধি হইতে করিল পরিত্রাণ।। তবে রাণী কয় পক্ষী কোথায় পাইলে। कर मूटना क्रिय कति शकी जानाईटन ॥ कना कह भूता निश्च क्य गारि कति। আপমি আইল উড়ি রাখিয়াছি ধরি। ानः भूमः अभ्या कतिया तानी कया। एन भकी कडू जामि ना सिथ निकास

भेषम् इंक्रियां धनी इतन करइ यंत्र। পক্ষীটি দেখিলে মাগো নরন মুড়ায় " **धरे शकी जामि शिरे**ग्नांकि यमविश्व। মনে মহাস্থ পাইয়াছি তদবধি । করোপরি আছে পক্ষী টুড়ি নাছি যান অতএব জান মাতা পঞ্চী নম প্রাণ রাজা কয় কন্যা পক্ষী ধরিলে কেমনে হেন পক্ষী কছু আমি ন। দেখি নয়তে কন্যা কয় থরিতে সুষত্র বাহি করি : উটিয়া বসিল আংসি মম করোপরি : ৰুক্ত আছে তরু পক্ষী উদিয়া না যায় : শুনিয়া হাসিলা করে পদী নিল লাল অলে হাত বুলাইয়া দেখে শান্ত অভি রাজা হইলেন অতি আননিত্ত মতি 🛭 রাজগৃত্র বসি তবে শ্ব**ওরের করে**। गरन गरन थार्गान श्रेष्ट्र ॥ তর্বেত পক্ষীরে ত্রেছ করি বছতর। क्रमा करत दिल तांका क्रिया आपता লহ নিজ প্রিয় পক্ষী রাথছ বতনে। ্শুনি রাজকন্য। নিল হরষিত মনে ॥

হরে করে হুপতি করিল সমাপ্র। মনে মনে কন্যা সাক্ষি করিল তপ্র : शत्न ভाবে गरः राना (एश काम्काद्व। গণতি দিলেন এবে জামাতা কন্যারে। ্ছপুত্র রাজকন্যা আর স্থীপণ ্ৰইরূপ তাবি মনে হালে সর্বজন ॥ ाका तत्व अठिविध्य शाक्तांब सूर्थ । লাজি দেখিলাম কৰা। তব হাস্য নুধ ।। ৰ বিলাম তব পীড়া নাহি কিছু আর। মতএব শুন ক্রা। বচন আমার।। ্র্যা স্বপ্ন মৃত্যু বোধ আছিল ভোমার। মিশা বলি ত'হা এতে জান স্থনিষ্কার।। म्मोन सिलिंड गडा, इंट्रेस निक्या ! 'ডাৰ **দেখি হৃদ্**য়ে **স্বপ্ৰকি সত্য হ**য় 🛭 অভএব **মনে বুঝি দেহ অনুমতি**। বিবাহ উদ্যোগ তব করিগে সংপ্রতি !! ্রনি ভয়ে স্পস্তা কাঁপিল অন্তরে। শুধা**ইল মুখ তার বাক্য নাহিস্ফ্রে**।। ए हे मार**्थश्वनी क्**तर्य नित्रीक्रण। পেথিয়ে কন্যার দুখ রাজা সেইক্ষণ॥

বুনিল এখন ব্যাধি নিঃশেষ না হয়।
পীড়া গেলে এ কথা বুনিতে সুনিশ্চয়
অভএব কিছু না কহিব এইক্ষণে।
কিছু দিনে আগনি বুনিবে গনে মনে
এচবলি পুন তারে কুহে প্রবোধিয়া।
ভাল এই কথা মনে দেখ বিচারিয়া।
কন্যারে এতেক কথা কহিয়া রাজন ।
ব্রিষ বিষাদ হয়ে রাজা রানী রয়।
হেথায় কন্যার মনে বাড়ে অতি ভয়
নর করি নাগরে লইয়া রসবভী।
বুক্তি করে ভারার ভারার পদগতি।

বোগী বেশের যুক্তাদি। সিন্ধু তাল আড়া।

भूगा। कांनि এই करता कांन अरम। कांनरशरः कांन रघटरव वथग स्मर्था मिल समकगरनः গুৰুদ্ভ ধন, যেন আমার মন; শমন দেশে না শায় ভূলে। ভারানামে বলে, অন্তে গলাজনে, ভিজায় কলৌ কালী বলে।

विश्वती .

ত হতি দৃঃতেখ ধনী, শুন মাধ গুণুমণি। আমাদের প্রমাদ নিক্র:

ে বিবাহের ভবেন কথা জানেশিলে পরে, কি কলিব ফুটি কিনা হয়।

্কছয়ে ধনি, সানিত্পান্ধনি,

অতিশার রাজার কথাত।

াশে হৈতে কত, সময়রে নিমন্ত্রিত, স্পৃত্যু অনুসিধে মতার ।।

বিক শাত গুণে, সুর্যাক **রূপে গুণে,** ধনে মানে পণ্ডিত শিধ্র।

বে কত শত ক্লাত, বাহি লবে মনোমত, আম পর হব অতঃপর।

ছভাবি পার নারী, অন্পক্ষত্ন করি, হরি হরি কাম গজনাব। দশাদোষে দৈব একি, ফাকির উপরে ফারি হায় চুরি হয় চোর মরে।।
ভান হাসি কয় ধনী, ভান নাথ গুনহ

কত কহ মিছে ধরি ছল।

ধনমান রূপ কুল, না দেখি তোমার জু. এবে কি উপায় নীখে বল ।

শুনি রাজগুত্র কয়, কেন ধনি কর হ যদিপ্রিয়া প্রিরহে আমায়:

गिनि गर्भ गभूषय, अञ्चलभू । उत्हे क

এতবলি মে সর্করী, সূত্রণ স্থাপে শেষ ক' প্রাতে পক্ষীরূপে গিত্র তথা:

মিলি সব সংগ্রহা, পরম্ আন্দ্র একাসনে কংস্প্রেয়া কথা ।

ভবে রাজপুত্র কয়, শুন শুন স্থা। বিপদ ঘটেছে মোর ভারি।

বিবাহিতা হতে রায়, আন্দেশিলা স্বকন

ষুক্তি কিছু নির্দারিতে নারি।।
শুনি সব স্থাগন, বিষাদে হুরে মগ্র প্রকাত্তে বসিয়া যুক্তি করে।

কিছু নাহি স্থির হয়; শ্রীরন্ধগোহন কয়; এক যুক্তি মনে মাত্র ধরে।। াত অভবৰ পরি, স্থাগৰে সঙ্গে করি, যাবে সেই সভার ভিতরে। ্রধে রাজবালা, তোমারে দিবেম গালা, এই যুক্তি সাইদে সন্তৱে " াঁহ ইছা ননে লয়, বিচারিলা মহাশাল, दुव किया कर् युद्धि मातः। ্নিয়া কুমার কল, এতে বহুদোষি হয়, অপ্ৰান হ্ইবে পিতার।। ্দুরে মুম্বর, নিম্ভুণ নরবরঃ তথার পাঠান কদাতিত। ं বিনা নিমন্তব, করি সভা আলমন, বতুৰোধ দেখহ নিশিত। াট স্বাস্থাচয়, কুহে যদি দেবে হয়, उठ्ठ इंश् कत्र श्रीकात । ান বিপদ পড়ে, স্ববোধের বোধ নড়ে, রাজপুল কহে পুনর্কার। 'বিলাম এই শেষ, হয়ে সামি যোগীবেশ,

গমন করিব সে সভায়।

এইমাত্র যুক্তি কয়, শুনি ইং৷ সংগ্রহ অভিপ্রার রুঝি দিল সায় । মনে যুক্তি বুলি সার, চলিলেন স্কুম্া পক্ষীরূপে প্রিয়ার ভবনে। शिक्षा मन कर्ड अंब, जिनिष्ठ मिर्निन मा पृथ्य द्वाथ तर्ह महेज्य । মহারানী চন্দ্রকা, দেখিতে আগন বাং क्षेट्रिय पूरे ज्वे कियां छदत । अकित आणि हांनी, अदिश कना द भ ... মুদুস্ত্র করে। (খদ ভরে।। বিসাহ ন। হল তেয়ে । সম্ভর জালিছে মেট রালা এথে সহাভাবে দুঃখ। **রথা সংগ্রে দিয়ামন:** দেহ কর জাল 🗥 বিবাহিতা হয়ে দায় সুখ ! এতেক কহিল রাণী, লজ্জায় না কছে বর্ণ तक्रमुक्षद्रीद्र भनी क्या। মারের যে অরুমতি, তাহাই জামার মা স্বয়দ্র। হইব নিশ্চয়।। मधीता मतम जात्न, जानाहर्न तानी दारः

ऋर्थ त्नी स्ट्रि कानाइस

ুনি তবে নরপতি, হয়ে আনন্দিত মতি, তার সঙ্গে দেখিতে আইল ।। कर्ड अञ्चित्र शिल पृथ्य। ারি দূরে গেল তোর, স্বন্তর শীতল ঘোর, আজি পাইলাম জতি দ্বধ ॥ ্বনি বাজা রঙ্কে, চন্দ্রকলা রাণী সংজ. গ্ৰহে গিছা আমন্দিত মনে। ের রাজিসিংহাসনে, বিনি ক্রে মজিগণে, व्यानाः रेष्टब्ब विश्वब्रुट्न ॥ ান জ্যোভিবেইনাগ্ৰ করি দিকা নিরূপ্ৰ. शंक्षित्र मित्र श्राप्तत । ু খ দিল নিরপের, রাজাগণে নিমন্তব, ধুক্তিমতে পাঠায় সত্র।।

সরস্বর সভা নির্মাণ।
রাণিণী বাহার, তাল কাওয়ালি।

ে। মূল মন ভুইতো মজালি আমারে।
নতুবা নিসামী হয়ে বেভেম জানশ্পেরে।

বিষয় বাসনা ছারো; হেডু ক্লমন্ত্রণা ভারো; কণক ক্লেব ভ্যেজি সোধারতি চাহরে।। পারাব

সভার নির্মানে আজ্ঞাদিল নরপতি। অভিপ্রায় বুঝি মন্ত্রিগণ তুরাগতি॥ মিযুক্ত করিল তাতে বহু কর্মিগণ। থেরপে উত্তম হয় করিছে রচন।। অতি সাবধানে তাকে রচে সভা স্থান। অর্চ্চাশ করিলেক দীর্ঘে পরিমাণ । ঐতেহ পঞ্চণত হস্ত স্থান পরিমর। চারিদিগে থেরি পথ রতিল স্থুন্তর 🙃 সভাষ্যে গুড়গণ নির্দাণ করিল। ত্রিশত ত্রিশত হস্ত অন্তর রচিল।। শুন্তে শুন্তে যুদ্দি উর্দ্ধ আবরণ করি। চিত্রচন্দ্র তপগণ তার তলে ধরি।। চারিদিকে ঢামর দিলেক খাটাইয়া। পদ্লবে ছেরিল ভড় স্থমিল করিয়া।। मर्क छेटई हाभत पूलिए भटनाइत । মধ্যস্থলে পুষ্পা হার রচিত স্থানর।।

মধ্যে মধ্যে স্থন্ত দুলিছে পূস্য ঝার।। চারিদিগে মাঞ্চল্য তোরণ রক্ষ তার। । দর্বজ্বে করে কর্ম আননিতে চিতে। हिशिल कमली द्रक गार्ग मुहेसिएड । ভূমিতলে খড়াইল চন্ত্ৰের জন। ংশকে আমেদিত স্থান কৰিল সকল ! উভয় স্থায়ের মধ্যে বিচিত্র স্থানন। ্মিল করিয়া সব করিন স্থাপন। পার্ষে দুই কন্ত মধ্যে স্থান রহে খুহে। : ভোয়াত পথ জন্য রাখিলেন তাহা । গ্রহরপে করিল সভার স্থনির্মাণ। তে রাজা সাইল করিল সুসন্মান ।। সাহর পূর্বেদিনে বহু নারীগণ। ত ইয়া আইল রাগী কম্যা নিকেতন ॥ াকী দেখি অতি মুখ হতেছে দ্বার। র্থানমিষে চাছিয়া দেখিছে দারবার॥ শ্লাচার কর্ম করি যত নারীগণে। ্র্নল আচার করে এক্রিত মনে॥ ौगन मन्यू अहीदह मर्द्या कहि। ারিয়া চলিল পথে মহাস্তরে ভরি।।

কানকে মঙ্গ স্থান তারে করাইয়া। বসন ভূততে ভায় স্তবে সাক্ষাইয়া।। **পরম** কৌভূতে গিয়া গৌরীর ভবনে। কুলবিধি পূজা কুৱাইল স্বাই মনে ! उण्यक्ता कर कब्रिट्ट गरने गरन। इक्टानदी इक्ताका भूताक एकरण। (प्रकाली ख्य मान खानगढ्य भारे তোমার চরণে মাত। এই বর চাই ।। এতেক প্রাণিন। করি প্রণিনি চরনে। নাৰীঘণ সহ আইলেন নিকেতনে। তাবে স্থাপ করিয়া ভাষার অধিবাস। কেছবা রহিল তথা কেছ গেল নাম। রাত্রে রাণী রহিলেশ লয়ে রাম্বিদ। ' গুহান্তরে তারা **সবে** করিলা, শরন । अभृत्य नात्थन थूलि भरमत जक्ती । हामिशा वर्ष्ण्य विशा अभग्नुअती। ্বিবাহের পূর্কে বিবাহের পর কর্ম। ি সাঁরিলেন দুইজন কহি কত মশ্ম।। ় তবে নিশা বঞ্চি অতি প্রত্যুষ সময়। রাক্ষকন্যা করে ধরি রাজপুত্র কর।।

েৰে যাই প্ৰিন্ন স্থাপন সভিয়ানে। নোগীবেশে মার ওরা ভাষর স্থানে : ঐতিলয়েছল রয়ে যোর বান পার্ছে। এবে ভাষ হিৰিতে পাৰিৱে অম্যান্ধ দ ন'ত ভাৰি হাছেম্বতা আনদিতা খতি নকীকাংশ বাক্তাল গোল শাত্ৰগতি দ महाला गर्न मिनि का पन बहार । সংক্রিয়ার বোর্গের রেশ নিরের এটা।শ্রুর ৮ িতুভি সংখ্যারলের লগাসতে। প্ৰায় অসম্ভেষ্ট্ৰ প্ৰিট্ৰেম মুক্তি ১ এর প্রায়ারে ভারের স্বর্জ চন্দরে। - এয়ের কৃষ্ণা হু**ল প্রার্থি প্রবর**ে। নত ভটে বাহালর পার মাত্যাল। করে নিন্দু জাপ্যমালা সংখ্যা নির্মাণ চ त्रका द्वाम **वर्ग जिल्ला मृत्या** ্ৰত্ৰে হ্ৰাছিল চিল্ছইলেন স্থা: मध्भव मञ् ठलिएलम अग्रहात । प्राणीदरम सर्व नाड़ी स्मिरनाई **सुरत** ॥ ্রভাকর কর কি করেতে ঢাকা যায়। ললীকার পদ **মন্মোহন খেও**রায়॥

11/2

ার্গাবেশে রাজার সভায় গমন।

रिकृताभी, जान मधागान छेका

. यन छात्राय भागाभाषाः। एति छङ्गित .उपातापातः भागान त्रियि द्राष्ट्रे शतः, नेद्रमाः इ.स.च भागः अस्ति वार्ष्ट्रियाभिषानः, कियमाः गदः य भागः अस्ति। द्राप्ति चार्यकाः, छात्रः इ.स.च स्वातीपातः जुनक् इत्यत् याः द्राप्त भागः, प्रतिदात देवनावाः भानः।

टर्भिनी ।

কাছিল অভি বড়ে, আপন দশ্য ন কিবা ভালিম ভড়ে, গায়ুরে: সৈনগা মনোহারী, কাম উদ্য কর মতেক কুলনারী, ভায়ুরে। এবলে ওকে সই, ওকেগো যায় ও একি ভুবন জয়ী, কান্তরে। কিরপ বার মারি, ধৈরজা নিল হ্লি শলীন যোগীবর. **जुरम गर्ना**ङ्ड. কি জটা শিরোপর, শোভেরে। িদ্ৰে বুদি বিধি, গঠেছে গুণ্নিধি, করিব কি অবৃধি, লোভেরে । .২বি কদন বিধু, 🐪 মানে চমক বিধু, কুলেরবধু বিধু, মাতেরে। ালতে কিবা কলিঃ লাজে পালুক ব'জ, प्रति औ क्रमहाल, मार्थरह ॥ न्त डेनरजां, क्षेत्रक गांकराजाः হইল রো**ধহত।, তারা**রে। হ'লের কোনে কায়, কুমার নাহি চায়, ভাগিষা চ**লি যায়,** তারারে ॥ ার সভায় শিয়া, সে সভা নির্থিয়া, त्रिल ताथानियाः धारतरतः। ্রনে জাগিতেছে, কত না ভাবিতেছে, কিছু না কহিতেছে, কারেরে। ইয়া আহাছন: অনেক রাজাগণ, করিল আগমন, ভথারে। ংগ্রেখেরত, যার যেমন মত, কহিছে কত মৃত, কথারে॥

মণিপুরাধিপতি, চন্দ্র হংস হপতি।
পূলক স্থান অতি, পূর্ণরে।
স্থিত মজিগণ, করিল জাগানউঠিল সভালন, ভূগরে।।
স্থাবে ব্যাইনা, আনেক ধন দিখা,
পূজে সুখ পাইনা, আদ্রে।
বা স্থানর জনা, মিলিয়া জনা অনা,
নহিছে ধুনা ধনা, লাবেনে।
তবেত মহামতি, পুলে স্থাজিত,
মনেতে সুখাজিত, পান্ধরে।
লইয়া অনুগতি, বানুরে।
স্কলে সুখে অতি, গানুরে।
স্কলে সুখে অতি, গানুরে।

মনমুঞ্জরার সয়হরে গমন ও রূপ বন্ন। বাহার, তাল আড়খেমটা।

ধুয়। এই করে। যা ভারা। মেন অন্ধ্রুকালে, গঙ্গাজনে, ভিহ্নায় নলে, ভারা তারা॥ ভারা বলৈ হদক্ষনে, হেরে ভার। মুদে ভারা। ভারা নাম ওণে ভার, একণা বিভয়, যেন জাবা না হই হার। ।

এক रिन इन्म।

ওণাকর কয় শুন্ছ তবে। প্রভাত কালেতে হেখায় সংব दश्व शभद्रम हमती मनि दमनी भएटल मिलिज धमी। তথ্য ত। হাত: আদর কবি। বদাইল তাত্তে করেতে ধবি ॥ ত**েতে নে স**ং রূপের রাশি। সুমকল কত করিছে হাসি 🗈 অমলা আমলা মাথায় তার উছর্তন দিল বিমলা গায়॥ भना छानिन मनिन भिद्र। हमना मुक्ति यू-चूक होदत ॥ রঙ্গদা কত্তেক করিয়া রঙ্গ। পরায়ে বসন ঢাকিল অঞ্ ॥ বেণী **বিনাই**য়া বিনদাসার। পুষ্প গুচ্ছ দিল অথ্যেতে তার।। हेन्द्रमुथी फिल मिन्द्रत डाटन । অলকা সাজায় পত্ৰক জালে ॥ তিলকা তিলক নাশায় করে। শ্যামবিন্দু শামা চিবুকে ধরে সুলোচনা হৃতি হর্ম ভরে ! कड्यल ऐड्ड्रम (न) हम कर्द्र ! **নাদার ভূবন দিলা নাশা**র। ন্থন। লে'লক দিলেক তায়। স্বমুখী বুওল জাতিতে ধরি। শোভা নির্থিছে স্থাথতে ভরি তবল মিলিভ যুক্তার হার। সবল: দিলেন কণ্ঠেতে তার : মাণিক্য ছিরক যুক্তার হারে। কন কণ্ডী আর সাজায় তারের।। হিরক বলয়া কন্তণ সার। চিত্তকলা দিল করেতে তার।। স্থমনা অঙ্গুরীয়কে সাজায়। দমনা ভূপুর পদে শ্রায়।। বিরচিয়া বেশ সে রামাগণে। শোভা নির্থিতে হরিষ মনে !।

রাজবালা অতি উল্লাস ভরে। বেশ দেখাইতে নাগর বরে । অতিশয় সাধ বাড়িল তার। বন্দী মাত। আর্য্যা সকল আর ॥ মানসে কালিকা ভাবিছে স্বর্থে চলিছে সভায় হসিত মুখে ॥ क्लमाना इत गिक्रमी तरन। লয়ে রথে চাপে ভাহার সনে।। বিমানে ঢাপিয়া হপতি স্কুতা। সভার আইল স্বস্থীযুতা।। মত। দীপ্ত করে সৈরপ ছটা। চমকি চাহিতে স্পতি ঘটা॥ সেরপ উপমা না পারি দিতে। কহিয়ে কিঞ্জিত বর্ণন রিতে॥। বৰ্গ হৈরি স্বৰ্গ স্বত্থেদ মূলে। ্ষ দেহ জারিছে অনল সনে।। क्या जित्न मिल नितंत प्रता .কা**ন্দে** তারা দেখ র**ফি**র ছলে ॥ বেণী হৈরি বলে সমূহ ডরে: चर्च निनिद्धां तटह विदरत !!.

আস্ত হেরি শশী হাস্তের সনে। ক্ষীন হয় নিত্য সংখদ মনে ॥ কি স্থরন্ধ প্রভা অধ্যে ধ্বে। ভঞ্জনুথে কাদী মাখিল ডরে॥ কুন্দকলি হেরি দশন চয়ে 🗀 নারিল থাকিতে কুটিল ভরে।। অ**ক্ষিহে**রি তার খঞ্জন যত। স্ত্য ভূলি হয় চেত্ৰ হত।। জ্ঞকু শোভা হেরে বাসব ধরু। ব্নের **আ**ড়েতে লুকায় ত্রু দ হেরি ফুল সে চা**রু**নাশা: তিল হয় ছাড়ি কুত্মম আশা।। শ্রুতি হেরি গৃধু,পরাণ পুড়ে। অপমান হেরি আকাশে উড়ে॥ কষুগণ হেরি সেকণ্ঠ বরে 🗈 জলধির মাঝে জুবিল ভরে। বাহু সনে হেরি কোমল কর। मभूगीता कट्टम कमन वेत् ॥ কুচকু জ হেরি প্রেমন্ত করি। ° ত্বকুত্ত নি**ন্দ**্যে **ধিৎকা**র করিনা

(क भारी (प्रशिष्ट) (म किं किंद। বনে বাস করে হইয়া দীন।। নিত্র দেখিয়া স্কুমের গিরি। হইণ বাচল মনেতে ভরি !! উরু হেরি র∤ন কদলী ডরে: মিলিছে পল্লব গোপন ভৱে . খনতল হেরি জাবক সার। অংশ্রা লইন চরণে তার।। নথের ছটাল ক্টিক ভাসে: দন্ত হয়ে বয় গুৰের পা**ং**শ । কোকিল কণ্ঠার শুনিয়া স্থার। কোকিলের মনে উপজে জর।। রাজহৎস হেরি তাহার গতি: ত্রাসিত হইলা ফুকারে অতি ৷৷ कुछ द्रांथि नुहे मथित शटल। **কামে** রাজস্কতা সভার তলে।। अप्रेला मामिनी काभिनी खड़ां। যামিনী জাগর অলম ভরা । শ**ন্দ মন্দ** গতি চলিল তবে। [']হেরিয়া বি**হ্নল সভাস্থ সবে**।।

' रश्गीक्र श्रीमनरगाहनरक गनगू अही: गाना मान!

বাহার, তাল ভিওট

পূচা নিৰারণ করি ভোমায় ও মুরতবদিন। নবীন। ছইয়ে কেন ছইকে সম্বাদিনী দ ব্যাণ রমনী জিনি, তব অজ ছেরি ধনী। যদি বিজতি গোখানা কবদিনী।

ভক্তিপদী।

দেখি রূপ অরূপম তার।
ভূপতি নন্দন চয়, ভূপতি বা যত হা
সকলে মানিছে চমংকর।
কেহবা করিছে অনুমান।
যদি ভাগ্য হয় ভারি, তবে পাব এই না
নতুবা রথায় ধরি প্রাণ।
নিজ রূপ হেরি কেহ হাসে।
ভাবে মম রূপ সার, দেখিয়া রূপমী অ
ক্যাচিত যায় কার পালে।।

কেই ভাবে আর কি কহিব।

•ই রামা রপনিন্ধি, মিলাইয়া দেয় বিধি,

বিদে ধরি সদত রহিব।

কেই কহে রাজ্যে কাজ নাই।

বাজ্য রাজা পণ চায়, আপিয়া ভূপের পার,

এই কন্যা লমে বনে যাই।

এইরূপ ভাবে ভারা হথা।

তিওঁ ভাবতে ধনী, বুকিনাথ ওপল্ন যোগীবেশ না করে ধারণ ।। স্বরূপে বা আছেন সভাল।

াঁহ সভা অনেবিয়া, নরশন না পাইয়া, আন পক্ষী পৰাইতে চায়।। অকজড় হইয়ে'না চলে।

তাবে সখীগণ, প্রন করয়ে হন, তাথে অমি দিগুণ উর্বলে ॥ দুধীরে করিয়া নিবাইণ।

া উৎক্ষিতা অতি, া একচিত্তে গুণবতী, ধ্যান ক্রে কালিকা চরণ॥

खंतम कद्रदश गरम भरम। দর্খাষ্ট্র এইবার, রিপদে করহ প্রা রক্ষমাতা নিজ দাসি জনে 🗥 হয় এই হয়ম্বর স্থান। वनाथ धिन ना शाहे, शुरू शून किरत गाँहे. পিতা পাইবেন অপ্যান ! স্পষ্ট কহিতাম বাপ মায়। সেই মাত্র ভাল ছিল. কি প্রমাদ এ ঘটিল. बुट लाग्न श्रीन यनि यात्र।। -ছাড়ি প্রাণ হিরক ভোজনে! কলত্ত্ব না হবে ভারি, পথএম ছেতু নারে : गड़िल कश्टित मर्खकात ॥ 🦙 একবার চাঁহেসোল সভয়া। অভয়া ও নাম সার, সে ডাকে কি ভয় তার. এবার দাসীরে কর দয়া ট जानमं कि अलकान धरे। নিশ্চয় না জানি তার, যা হয় দেখায় স নিশিত হইব জানি সেই॥ এত মতি করি কালিকার। সভাপ্রাত্তে পূর্ব্ব ভিতে, গিয়া উৎক্ষিতা চিট দাঙাইয়া সেইদিগে চায়।।

यागीटवम प्रिथेश नगरत। হানক সমুদ্র জলে, ড্বি রামা কুত্হলে, গিয়া তথা অনুরাগ ভরে॥ হাসিয় হাসিয়া রাজকালা। পাইয়া হাদরপতি, চিন্তা করি ভগবতী, গলে তুলি দিল বর্মালা॥ ছিছি বলি উঠে সভাজন। চন্দুহৎস নরপতি, অপমান পায় অতি, অধোমুখে রহিল রাজন ॥ ভাবে খেগৌ কি ওণ করিল। ্ত্যজি এত মনোহর, হপসুত হপবর, ङ्निया छेशादव माना मिन !! বুঝিলাম যোগী দুরাচার। ক্ষা কভু না করিব, সুনোচিত দও দিব, ाशीन इस्त कनगात।। কি করি প্রারন্ধ খণ্ডে কেবা। नलार हे लिथन राई, नजु मजु करल राई, খণ্ডিতে না পারে দেবী দেবা॥ ভাবি আজ্ঞা কোত্য়ালে দিল। ং যোগী বেটারে ধরি, আন হেখা ত্বরা করি, শুনি সেই ধাইয়া চলিল।

(23)

बारियों की कारण मनात ।
बारियों की कारण कारण करण कारण करण कारण करण कारण करण कारण करण कारण ।
बार्यां की विशेष्ट कार्युक्त ।
कार्यों की कर्षा, मत्र मार्य मुन्दिक,
वर्षा करण कर कर्षा करण करण ।
वर्षा करण करण करण करण ।
वर्षा करण करण करण करण ।

প**ট্ড অচেতন, হ**জে, স্থীতির ছারে এজে গৃহে গেল কান্দিতে কান্দিতে : র্থনোহ্নাদি স্থাচয়

ফিন নাম্ বা**ষে ছির, তন চক্তের্**ইছে, ি কালিনা **সামুল অভিনয়** ।৷

বভায় যোগীর পরিচয়ার্মবং বন্ধব

্নাগ মানকোৰ ভাল ঠেক।।

नेमने व्यक्तित कारक डावि दृति जीति कृति रहेन जाते। इस्लान शरू ७ ला তোমান, দাক আমি বে প্রদে উলি।
তাতাধিনা নেই পদ, লিবের শিবস্থাদ,
স্বিভেছি দেই পদ, এরিপদ কোনছার।
তাতা দাকে জানা কনি যে পদেতে মোক্ষ পদ। ভালার কালা কনি যে পদেতে মোক্ষ

strong the

বালীরে মানিল তার রালান গোচরে।
গোলিবেনা তথালিও রতে আঁলো করে।
গালিবেনা তথালিও রতে আঁলো করে।
গালিবেনা লাভেও ভাবে কন্ত ভান।
মোহিড হইগা রাজা বিচাল জ মনে।
নোগা নহে ছালবেনা বুলে এই গনে।
গালিয়া লাভিয়ে কি নেম প্রিচয়।
কাপান হেড় কোষ নারে স্থানিত।
গাজিয়া যোগালৈ তবে লাগিল কহিতে।
কি উদ্ধ গুলে বেটা কি গুল করিলি।
কি সাহতে আয়ার কন্যারে ভুলাইলি।

धार भी व सारि क्या देखा दरावी एकर बहुत करित हा है है। मह दुस्त है STEER OF THE STEER OF THE STEER 可以可以的 明显是一个一个 化等型 化二甲基甲烷基 化邻亚丁基苯基 with the committee with . इ. १८८८ व्योष्टिक **स्थापन क**रण सकत् · 有一个人的人,不是一种更多人不少。 所《新西尔·罗斯·伊斯·斯斯·斯 哲学 東京 とうこう 大田本 はって 特を 高級企業 中心 (1945) 1 1945年 安徽 (1944) 1 भी जाति हारिक । उद्या केश मा नाहि व्यक्तिक द्रियात स्टार क्षेत्र क्षेत्रम हरूर । कि इंबिएसिस करता करिस बोक्स है। भरिषा प्यापिया गृहर्क विचार क्षिनी टकानाटाड उक्त निम भित्रिका प्रांच । जार्थित होता बारि सान्तिक बन रुवा बद्ध कार्याद्व कति । सम्बन्ध

তথাপি বিবাহ হেতু কহিলে ভাহায়। পতিব্ৰতা পতিবিনা বিরুদ্ধে কাছায়॥ ্ৰাজপুত্ৰ কহিল এ সব কথা ছলে। বঙ্গে রুঝি নরপতি কোপানলে **অ**লে॥ পুনত জিজ্ঞাসে তুই চনয় কাহার। োগী কহে নামে নাই মৃত্যু অধিকার।। ক্রেছে রাজা কংছ বেটা নাম কিরে ভোর। কহে প্রিয়া আন্য অত্তে বাছে কছ চোর।। রাজা কহে আরে ধর্ত্ত নিবাস কোথার। কহে অন্তয়প্তে বর্তমান কাল পায়।। যে কথা জিজা সে ছলে করমে উত্তর। না বুঝিয়া রাজা ক্রে।ধে কাঁপে থর থর।। ্ৰ ক্ৰোধ সম্বরিয়া বিচারিয়া মনে। निम्ना क्रिन धाशी नट्ट এইजटन॥ 🚙 তক সাহস বাক্য ক্ষু দ্বের না হয়। াবিশ্য হইবে কোন রাজার তনয়।। এবার চাহিলে নাহি দের পরিচর। কারাগারে বন্ধি তবে করিব নিশুস। · মন্ত্রণা পাইলে পরিচয় পারে দিতে। so जावि को गेटलदा किल के किट थे.

আমার অজ্ঞাতে চোরে পরিচয় চাহ। কিবা কয় স্থমন্তবে আদিয়া জানাহ।। তবে বাক্যে, গক্তিয়া কোটাল প্রতি কঃ কটিৰ এভও যোগী। কিবা পরিচয়॥ **ঈলিতে** বুঝিয়া ভবে ুকোটালের গ্রেগ। বানিয়া ব'হিরে **লয়ে গেল** রাজন্তকে ৮ ^{*}কহে ওরে ভওযোগী দেহ পরিচয়। <mark>মতুবা ভূপতি জাত্তা কাটিব নি</mark>শ্চয় । হাসিয়া কুমার কয় না করি যন্ত্র : বারা**ণদী যাব বাদ বদ**রি আঞ্ম ।। সয়স্ব ক্ষেথিবারে আইর ক্ষোয়া: ৰাজ বালা বরমালা দিলেন গলায়॥ छेमानी महाानी व्यक्ति किया श्रीकृत भृका अब अमाहम नाहिक पृक्षका শুনি কোতোগাল বিভা রাষ্ট্রকৈ পাত্র क्रवर्त्याभी शहिएस भा पिन व्याचास हा र्फिटिन क्लाट्य क्लिंग्रेटन करिन मरीनीयुः কারাগারে বৃদ্ধি হোরে করছ তৎকুর পাইমা ভূপতি আক্লো কোটাবের মূখ: श्रामश्रद्धं भरतं भागि त्वन्तिम्र ॥

কারণারে নয়ে চোরে হাতে গলে বালে

সিংহিকানকন যেন প্রাস্ত করে তাঁলে ॥

দুপার্শে করাত কেল শিলা দিল রুকে।

চল ধনি চালে টাফে বিন দিলা নুগে।।

হাতে পায়ে নিশুত বন্ধন গলে তোক।

নালীয়ান করি কবি কনে কত শোক।।

গৈতা মাতা হাতি কেন আইন্ধ কেপান।

বিষ আই কনে গোল প্রাণ বাহিবার।।

কাথার রিজা প্রাণ প্রিয় ন্ধানন।

কামিলা কহেন কোপা কুলকুওলিনি।

ব্রনায় প্রাণ যায় স্বাথ্য জননি।।

ব্রনায় প্রাণ যায় স্বাথ্য জননি।।

ব্রনায় প্রাণ যায় স্বাথ্য জননি।।

शामिनी जर्बन्न छी, जान निकम्मनशाहि।

भागात धरे छावना कामी। तान काती

के नीरम ना तय कालि ।। शास्त्र कालि, मूर्य के लि, मनीरक दक्कांकि शासि । शक्त शरता क्रांस काम श्रीम कान मिटक का गाम कोनि ।।

बाई या ग्यांखात श्रीम नो गांखात श्रीम गाँउ

अया आंकिकारन ना जी गांखात श्रीम गाँउ

वार्य मकनि । जी जो तरल ७ श्रीमान्त ।

वार्य मा किश्मा कृष्टे श्रीमान कि।

का भाम कृष्यांच्या, कर्मा ।

कारणा गुरूष मिर्टम कोणि।

अंक है।

ত কৰি কাশনা হাল্নী না অনিতে
তাক্তিরে দে অভয় অভ্যা আহতে
ভানতে আনন্দ্রী আহা নার্চাথাত
ভানতে আনন্দ্রী আহা নার্চাথাত
আহাত কানি আনি হাল দিলে ইন্দ্রপত
ইউ দেরী কাক্তিয়া ইন্ডে দিলে ইন্দ্রপত
ইউ দেরী কাক্তিয়া ইন্ডেই ইয়দ ॥তা
ইপান কাক্তিয়া ইপান উনানী।
ইপান কাক্তিয়া ইপান উনানী।
উনাতের ইপান উন্নীতা উকারিনী।
উনাতের ইপান উন্নীতা উকারিনী।

তালাতের ইকারিনী

তালাতের ইপান উন্নীতা উকারিনী।

তালাতের ইপান উন্নীতা উকারিনী।

তালাতের ইন্টিটা ইন্টিটা ইন্টিটার ইন্টি

छेर्क अभ छेर्कात्त्र छ। प्रश्नि गर्छन। उँहत्ता । उँहत्कती (एक् बिठद्रन ॥॥। क्कानि व वजु उपि कि अजिशिनी कड्मही अनिटब्ल पुरुष्टि मा अनी ॥१॥ त किंगी क्षकादांपि इटलाक शालिसी। क्षवतानी क्षत्रत नातिमी क्षदानिमी [[bi] ^{নকার} বেদেতে মাতা ত্রিসে চকার। চকারেতে তথ ৯তার আছে যা বিভার ॥১৮ ্বকার অদিতি নাম অস্ত্র জননী। ফ্রনার রূপেতে সঞ্জিনাশিলে আপনি ॥১০০ ্ৰমাদি **অস প্ৰভৃতি** তোমতে উৎপতি। এদানের এদুর্গতি এতোর কি রীতি ৮১১ :: এ কান্তা এহিক বৃদ্ধি ঐহিক নান্নিনী। গ্ৰপদে পড়ো ঐ ঐকি এ শানী॥১২॥ ্ত্রিক ওপদ খা সদত ধেয়ায়। বীক ওপদ পাবে দিবেনা আগায়।।১৩। े कांछ। जनमी अभा अवधि क्रिनी। ^{কুৰ}নে **ত্ৰকাণ্ড** ভাণ্ড ত্বমেকা ধারিণী ॥১৪॥ ংশকে পর্যবন্ধ তুমিদে অংরপা। ংশ রূপে কংস ধুংস ভুয়ি অংস্কুপা॥১৫॥

অঃকার রূপিনী ব্রহ্মময়ী একাকর। অকাতর হয় গোকি দেখিয়ে ক্তর ॥১৬ काछा।यभी कामधिनी काभिका करानी কাতর কিহুরে ক্ল**পণতা ত্য**ে কালি ॥১৭ থগেশ্বরী খল অরি খেদে ডাকি মা। থরণ লপ্র থেটকে ধল নাশ মা ॥১৮॥ গণেশ জননী গৌরী গিরীশ বনিতা গোবিন্দ ভগিনী গলেখরী গিরিস্কৃত 🖂 ঘনজিনি ঘোর রূপা ঘন পায় লাজ: যোর শব্দে ঘণ্টা বাদ্য ঘন রণ সাজ। ঙকার বিষয় আর একার ভৈরব। ঙকার ভপদ দিয়া খুচাও রৌরব ॥২১ চণ্ডা চণ্ডবতী চণ্ডী চণ্ড সংস্থারিনী। চাওগো চক্ষের কোনে চামুগু রূপিনী ছলায় ঐকালিদহে হল্প বেশংরি ৄ ছায়ারূপা শ্রীমন্তে ছলিলে ছলাক্রি জগৎ জননী জয়। জলদ বর্ণী। জয় কর পরাজয় জিনিয়া জননী ॥২৪। বাড়াকারে বাটিতি বাকিয়া অসুর শি ঝলমল মুগুমালে ঝলকে রাখির ॥২৫:

একারেতে গণ্যশক্তি ব্রিমা একাম। ঞকার ধনিতে ঞবার **যুচায় পাশা**র ॥২**৯**॥ ইন **টন** টান্সি শহু ধনুকে **টক্ষা**র। টল টল করে ফিডি নাহি সহে ভার।।হণ।। हेटक हेक ज़मा काका हैक मंद्राविनी , ঠেকি ঠক ঠাটে ঠাক রাখ গ্রাকুরান্ট এচন। মত **ভৱাইয়া তাকি প্রা**র কাঁচেনা নরে । 'अकिनी व्याभिनी सांकि एवं त्रहें सार १३५॥ एक्षिनी भारकभंदी करण मकाशूरद । ाक क्षिति महार्थका एड्टिंग क्रवृत्व १७००। नद क्षेत्र रिश्त गाला गई राज इस । া সরূপা শহু জ্ঞান নকারে নির্বয় ৮৩১৷৷ হ্মাদি ত্রিগুণাতিকা ছাট্ট তমহরা: ত্রাপকর **তাপি**ত তবয় ডাকে ভারা ॥৩২॥ স্তিত না হয় থর থর কাঁপে প্রাণ। ক্ষিত্রপা কোধা ঐচরণে দেহ স্থান।তেও। म्यानका माकामनी रेमछाम-शाहिकी तीमकादम मन्ना कन्न प्रश्न प्रश्नेनी 119811 ধাত্রি শুলা বিভাবিধা বিধাতা বিধাতার। तकारक धाहा छाटन तक मा अवाह । ७०

नद्यांनद्यां नियदां या स्यू ७-यानिनी । महर्गि ह निकारिनी निकास नामिनी ॥३० গ**ওপ**তি পত্নি পর।পরমা **ঐ**ক্লতি : প্রমাত্ম পর্মত-ভন্মা মা পার্কটি । তা শাদরে পাড়ছি মাতা ফেলাএছে লেরে কোথানে কলিবীকল-দর্শন চাইকিরে : जनमधी (त्राष्ट्रा) (त्रेम्यानियां कित्री चित्राष्ट्रवादिली (८४ धन् विश्वचरा १७३०) ভर्मस्त्रं उपस्ता अत्नत अतिनी। ভবতরে রাখ ভীয়া ক্রম্ব-নান্দনী I.Se মাহৰতী মহেত সহিতী মুক্তকেশী। शहित भक्तियों ता य नांखि क्रह्नमंत्री ॥६५ रक्कता व्यापन्ती यामिनी क्रिनित टांशनिजा तथा यभव**द्धता नामिनी** ॥३३॥ श्रक्तवीक राज या विक्रिनी तार्था रुलि। রণরজে এবে রক্ষাকর রক্ষাকালী ॥৪৩। ट्यांच कि€। गर नर नक मक रदत । নলিনী বাদ্ধৰ কত নত মা নথৱে ।৪৪।। बकारी रेक्करी वामा याताही। विभन्। जकारही रिकृदिलामिनी या ईराना ॥६५॥

শিবে শাক্ষরী শ্যামা শিবিষ্টিনী।
গাশানে শ্বশানী রপা শিবর নিক্ষী ॥৪৬॥
বড়রাগ বড়বার বড়বিপুর্বার।
গালন মাতা বটুপদবর্ণমী ॥৪৭॥
গারদ স্কুড্গা সাবাৎসার মা সাকার।
গানার অবার তুরাপদ মাত্র সার ॥৪৮॥
হলমন হরা মন হরিলে হরের।
বৈধবতী হেলম্ব জন্মী গোরে হের্বার।
ক্রিণী ফকারিনী ক্ষরের প্ররার।
ক্রিণী ফকারিনী ক্ষরের প্রার।
ক্রিণা দেখি ক্ষরকরে ক্ষেদ্থ আমায় ॥৫০॥
গ্রাশ ক্ষরে স্তুতি কৈল মন্মোহন।
গানিলা কালিকা কহে প্রতারাচরণ।।

ভগবতীর মনিপুর গুমন এবং বন্ধন মুক্ত। কেদার, তাল মধ্যমান ঠেক।

त्वि श्रीन त्यंत त ततः। कृत्वे क्यो, कृतः कृति नोतः विवसता ॥ क्यारम कृतः वृत्यः, नाकं नादि वादम क्रारम, कृतित प्रकृति छोरम, क्योरम स्मानुद्रम् নক্ষে ভূত প্রেত দানা, গিশানাদি অগণনা;
রণ রক্ষে নিমগণা, বিকট বদলে।। তারা
কছে নরপ্রি, নহে সামান্য প্রকৃতি,
বদিহে চাহ নিক্তি, সরণ লছ চরণে।।

श्राप्ता •

এত স্তুতি কৈল যদি প্রীমনগোহন। ক্ষিণাসেতে কালিকার টলিল আসন। পদ্মারে ভাকিয়া মাতা কহেন তথন। क्ति शक्कांवजी गम मन डेकांहेन ॥ দশ্ৰে রসনা চাপে দাঁতে কাটে জি ত্তর। করি দেখ পদ্মা অমসল কি।। কেনগো বসিতে খেতে স্লতে নাই সুখ কেবা কোথা শঙ্কটে সেবক পায় দুখ ধ্যান বলে পদতলে কন পদ্মাবতী। প্রমাদে পড়েছে মণিপুর অধিপতি॥ কন্যা স্বয়ম্বর, কৈল করি মিমন্ত্রণ। যোগীবেশে যালা নিল জীমনম্মেছন **क्यांट्स गरीभान वैश्वि देवम् कांद्रा**शाहर অতেক কাড়েরে মাতা ডাকায় তেখিতে

ভক্তের যন্ত্রণা শুনি দেবী ব্যক্ত চিতঃ ক্রে পদ্মাবতি ক্ষিতি চলহ ত্রিত।। সহ निজদলে যাব भक्न जुन्म। যেজন বিপক্ষ হবে বধিব জীবন।। এত বলি ডাকে দেবী ভূতপ্রেত দান।। ভাকিনী যোগিনী পিশাচাদি যত সেনা ॥ হাতে জাটি করি কেহ্ পরি বীর ধটি। বিকট দশন কার বস্ত্রহীন কটি॥ मीर्यन दशमां कर आहेन शिवाभी। মৃক্তকেশী উচ্চভাষী ঝশান নিবাসী। ेन्त्री शान्त्री शांत्री कटत कठे शति। लाटक लाटक हटल वीजमाटल काटल माहि॥ ভূমিতলে লুটা সভে বন্দিল চরণ। কহে আজ্ঞা কর মাতা কোনু প্রয়োজন।। দেবী ক**ন মো**র সঙ্গে চল ক্ষিতিতলে। নরমুতে মুওমালা পরসবে গলে॥ নন্দী চলিলেন আগুদলে সেনাপতি। বিমানে চলিলা যাতা সঙ্গে পদ্মারতী॥ কারাগারে মহামায়া হৈল উপনীত। বন্ধন ধ্রীল রায় প্রমে পুল্কিত।।

व्यक्तीरक खनाम कति दमवीत हत्। मानाभव का छोटल वाञ्चिल जत्न जत्न । महमद्देल अखदीटक दिश अख्या। কন ভয় কিরে ভোর মনমোহ নিয়া।। যদি রোবে এখনি বধিব চক্রহে সো একজন বাতিদিতে না রাখিব ব**ংশে**॥ যাহ পদ্মা ত্ররিতে জানাও মহীপালে। কছ ভাল চায় বিভা দেয় ভালে ভালে । নতু সবান্ধবে বধি বিভা করাইয়া। কৈলাসেতে যাব কুমারেরে রাজ্য দিয়া 🧸 এত শুনি পদ্মাবতী করিল গমন। যথা নরপভি আছে করিয়া শয়ন।। কহে ওহে নরপতি মনে নাহি ভর। অবিচারে কারাগারে কালীর কিন্ধর ॥ সইচ্ছায় কন্যা মালা গলে দিল তার। তুমি চোর বল তারে একোনু বিচার !! ্তার যোগ্য হৈতে তুচ্ছ তোমার সুহিতা বিভা দেহ কল্য নতু ঘটিবে লঘুতা।। यवासार्व बाह यान नमन मनन তবে পুনঃ তারে বিরোধিধে হে রাজন ।

নিজ দুহিতারে তারে দেহ স্থাতনে। পাত্র কন্যাগণে দেহ তার স্থাগণে । এতবলি দেবীকাছে গেল প্রাবতী। নিজাভকে তরাদে তরল নরপতি ॥ স্থপন সারিয়া মনে হৈল কম্পবান। ভূপতি পোহাল **নিশা হাতে ক**রি প্রাণ । প্রভাতে উঠিয়া রাজা বসি দরবারে : জানাল স্বপ্ন পাত্রমিত স্বাকারে ।। গুনি সভাসদ সহ শিহতে রাজন স্বকৃতিরে কারাগারে করিল গমন দেখিল বন্ধনে আছে অমুচরগণ! हेर्फ्रमूटथ छव करत औमनरगाइन ।। দেখি স্ববান্ধণে রায় অবনি লোটায়। ৱাজপুত্ৰ মথ মহা কালী বৰ্ণনায়।।

কালীরপ বর্ণ।
সিন্ধু, তাল আড়া।
কেরে, শ্রাসনা, বিবসনা, কার অক্সা,
করে অবি । মাত্রিনী, তিন্ধুনী, বেষা

জিনী তত্ত্বমদী ।। সরশির মুগুমাল, তালে তাল থণ্ড শশি। জীমা বেশী, মুকুকেশী কিবা অট অট হাসি।। তারা বলে, পদতলে, রেখো মহশমহিনী, চারি ফল, বরতল, তুল্ছ গলা খারাণদী॥

मीर्याज्यानी।

শিবা শ্বশিবা রুচে, বামাবাম পদ উলে कामिश्रात मिक्न हत्। কিব। শোভা আহা মরি, দিগমুরে দিগমুর ভয়ন্ত্রী ভয় বিনাশন !! দেখি পদতল দয়, অরুণ সার্ণ লয় পরাজয় মানিয়া বিচারে। পদন্বে শশী রাশী, হেরি শশী লাজ বাহি রয় তাসি বামান্থ থারে।। কিবা জীচরণ শোভা, রক্তোৎপল দলমাভ তাতে রক্তোৎপলে শোভা করে। थिय जारम कि निनी, कि विदाद्श विशानिनी ্ৰন্তকিত পাইয়া শুশ্বটো॥

তনক স্পুর তায়, ভ্রমর ভ্রমরী ন্যায়, মধু আন্দে সদত গুঞ্জরে। নির্থিয়া সুধা করে, সুধা আন্দে ক্ষ্ডিরে, চঞ্চলিত মানস চকোরে॥ ুক জখন যুগল, নিন্দি করি গওছল, কটিতে কিন্ধিনী নর করে। বিগদ প্রমাণ তায়, ভড়িতের প্রঞ্জ ন্যায়, ঢাকিয়াছে দীপ চর্মায়রে॥ হোর কটি হরি লাজে, প্রেবেশে কানন মাঝে, কি বিরাচ্যে নিতম্ব স্থাপর। াজে উদয়ান্তাচল, ত্রচল **হেরি সচল**, বিকচ ক্মল নাভি বর ।। ংরি বাম। রুশোদর, অতি পীন পরেধির, লাগে ভর মধ্যভাকে পাছে। नार्रभाव मर्गावत, जुल मम्बादन कत, কি চারি কমল ফুটিয়াছে॥ বামা বাম যুগা করে, অসি নরশির ধরে, मिकिटन अख्य रदमान। नत्रमुख मान्यानात्म, कर्तन मत्र भव प्रारंत, তিপরে শোতে মুখবাদ্।।

চিকাণ চিব্রকোপর, মৃগমদ মনোহর। কি ভাষর সুরক্ষ রক্ষিম।

কিবা শোভে লোল জিহ। লোল লোল ল*হ*়, মরি ভাগি স্থ**িক ভলিম**।

দশন কি গজমতি, কি কুন্দ কলিকা ভাঁতি, স্থানীয় নাশিকা খগজিনী।

কিয়া শোভে ভিনয়ন, কটাকেতে ত্রিভুবন-সজন পালন সংহারিণী :

ভ্রতক্তে জ্ঞান হয়, হর ধন্ত কি উদ..
মেযজাতে মেযাক্সিনী পর।

ললাত উদয়াসলে, অলকা নক্ষত্র ছলে নিশাভাতে কিবা নিশাকর দ

পৃষ্ঠোপরে দোলে বেনী, যেন কাল ভুজজিনী

ভাকিনী যোগিনী চারি পাশে। হপস্থত্ ভক্তি ভরে, হেরি রূপ স্বর্ণোপতে, পুলক জলধি জলে ভাসে।

স্থির নেত্রে হেরি রাক্ত ভাবাবেশে মূচ্ছী ধায় অঞ্চ কাঁপি পড়ে ধরাতল।

দেখি চন্দ্ৰহ**্ম ভূগ, মানি অফি অ**পক্রণ চেতন করিল সিঞ্চি জল॥ তপাত্মজ শুরু জাতি, প্রণতি ভকতি স্ততি:
করে পুনঃ কালিকা চরণে।
হপাস্কুরু রুপায়ন্তী, জানিনে চরণ বই,
দয়া কর এ দাস অধীনে ।।

চন্দ্রহণ সারাজার কালী দর্শন । শালবোয, তাল ঠেত:।

য়া: ওরে আঁখি, দেখ দেখি, কর হলে কে নিজারে। কিবা নাচে দিগদরী মরি দিগদরোপারে। নর কর কলিপারে। নয়শির কবে ধরে। তিমিরা তিমির হরে। ভারা ভাবা হের নারে।।

भागा।

ন্পত্মত বন্দ করয়ে কালিকায়।
দেখি চমৎকার মানি প্রণমিল রায়॥
জানাতাকে কহে তাত কর তুমি দয়া।
জানি আহি বন্ধায়ী তোমারে সদয়া॥

আমি কিছু দেখিতে না পাই বাপধন ' করুণঃ করিয়া কালী করাও দর্শন।। রাজপুত্র কহে উর্দ্ধে চাহ নরেশ্বর। দেং বেদ্ধায়ী ঐ শূচন্যর উপর॥ **ষ্পতি কহয়ে চাহি আছি বার** বার। কিছুইত দৃষ্টি বাপু না হয় আমার।। তবে রাজপুত্র জননীয়ে যোড়করে। জতি ব্যয়ে স্পাহেতু নিবেদন ক্রেন উৰ্দ্ধে থাকি আশাসিয়া কহেন অভয়া। ত্যা হেতু হইলাল স্পেরে **স**দ্ধ। ভূপতি তোমার অন্ধ করিলে স্পর্শন। এইकटन পाइटनम जागात पर्मम ॥ পৃথিবীতে রহ পুত্র কিছুদিন অার। স্বরায় পাইবে তুমি চরণ আমার।। শুনি রাজপুত্র স্থধে কহিল রাজারে : **प्रिथर जनमी श्रम न्यार्मिश यामारत**। শুনিয়া হপতি স্পূৰ্ণ করিয়া তাহায় : উর্দ্ধি করিয়া দেখিল কালিকার 🛭 পুঞ পুঞ সোদামিনী জিনি। সেরগ प्रमान माटल मुक्री इहेटलीन जूना

রাজপুত্র করাইল তাহারে চেতন ৮ আঁথি ভরি কালিকারে দেখিল রাজন !! নয়**নে আমন**দ জ্ঞা হয় বরিষণ। পুনঃ পুনঃ প্রণমিয়া কবলে স্তর্ন ॥ হাসিয়া জননী তবে কহিলা রাজায় . শ্রীমনফোহন হেত দেখিলা আমার । শ্রীমনমেণ্ডনে প্রতি মে করে রাক্তন সেজন জানিকে মুগ রূপার ভাজন 🙃 এতেক বলিয়া মাতা স্থাণ সহিত ৷ মন্তর্গান হইয়া গেলেন আচ্মিত 🕐 পরম আনন্দে চক্রছৎস নবপতি। জা**মাতারে বি**নয় করিয়া তবে অতি !! দ্বিনয় বাক্য কহি আলিক্সন দিল। বাজপু**জ শশুরের** চরণ বনিদল। পর্ম আনন্দে রাজা নিজগণ স্মে। জামাতা লইয়া চলে আপন ভবনে॥ রাজপুত্রে দেখি নগরীয়া নারীগণ তার-রূপে ভুলিল সভার নেত্র মন।।

এমনমোহনের রূপ বর্ণ।

বাহার, তাল মধ্যমান ঠেকা।

ধ্যা। রূপ হৈরিয়ে রূপ না ধরে নয়নে।
কিবা মনোছর রূপ, হেরি হরিল মনে।
আহা মরি কিবা রূপ, যেন কন্দর্শ স্করণ,
জাব না কেরি এরপ) গৃহে যাব কেমনে।
বুরি শশধর আদি, ভূতলে পড়িল যদি,
ভূত্দির ছাথ রাশি, নাশিবার কারণে।
ভাবা বলে কুল ছার, গৃহে ফিরে আশি
ভার, হেরিয়ে ও রূপ আর, মরি
নাঁচিনে প্রাণে।

भागा।

দেখিয়া উহার সহ চক্রিম আনন।
জুলিল নয়ন মন না যায় আনন।।
চাঁচর চিকুর সই কি নিবিড় কাল।
হইল চুলের শোভা নারী কুলকাল।।
অন্টমীর চক্র কিগো উহার ক্থাল।
যে নারী পাইবে তার বড়ই কঁপাল।।

যোড়া ভুক্ন শোভা যেন কন্দপের গ্রাপ ধে রমণী হেরে তার কুলে পড়ে চাপ :: একবার হেরে মারে ময়নের কোনে। भटमा भित कारिन असे विमि ग्रंस कारिन।। দেখছ উহার সই কি দীর্ঘাসিক।। ঐ রুঝি মানিমীর কুলের নাশিক। ॥ কি সুরঙ্গ প্রভাধরে উহার অধব। হেরিয়ে হাবাই ধৈষ্য হইগো অধর।। কি শোভা দেখহ সই ধরে শ্রুতিযুগ। সাধ হয় হেন পতি পাই মূগ যুগ। একবার মুখখানি যে দেখিতে পায়। চরণে ঠেলিয়া কুল দাসী হয় পায়॥ 🦈 কঠের উপমা সই দিতে কিছু নারি। शामिशा द्रिटि गमा गांध करत नांदी॥ দেখিয়া উহার সই পরিসর বুক। নারী হয়ে ধরিতে কে পারে বল বুক্॥ दाइद सूदनिम महे जिमि कति कर। বুঝি 🕒 কর সই কুল-নাশ-কর॥ মধ্যক্ষেশ ক্ষীণ অতি জিনিয়া কেশরী। पिशा कामिनी यात्र काथात्र कमती॥ (28)

`'&.;

पूर्णि छेक हर त्वन कारमत्र व्याताम ।

त्य नाती भाहेरव छात कछ ना व्याताम ।

त्म प्रथ महे कि स्रम्पतः पूर्णि भन ।

त्य नाति छेहारते भारव छाति वछ भन ।

ख नाति छेहारते भारव छाति वछ भन ।

ख नाति छेहारते भारव छाति वछ भन ।

ख नाति छेहारते भारव छाति वछ भन ।

छाहिन्ना प्रथिष्ट मनः भरनत वामना ।

क्रियरत कांकिरलत तरनता किनिला।

क्रिलमान मन श्रांव हतिन्ना कि निता।

प्रांचित्रा घाहिष्ट प्रथ किनि मछ कती ।

थाहिना घाहिष्ट प्रथ किनि मछ कती ।

थाहिना घहिष्ट प्रथ किनि मछ कती ।

थाहिना घहिष्ट प्रथ किनि मछ कती ।

थाहिना विख्ले हहेरत करह छाता ।

ताक्रभुक्त नाहि गांव छाता गारह छाता ।

মখাগণের বিকাহ উদেহাগ।

ভূপালি কল্যান, জলদ ভেতালা। ধুলা। এলো বসন্ত রাজন, লয়ে ইসনাথণ, ৰ্দিতে জীবন, জা সলকা বহে ঘন, ভাতে পিকণণ গুল্লে গুল্পাণ; সই। কৃটে নান। কুলঃ
সৌরভে ব্যাকুল, কি স্বথে গৃহৈতে রই।।
দীর্ঘ ত্রিপানী।

ক্রম্প নরপতি, হইয়া জানন্দমতি,
জামাতারে আনি নিজ গরে।
সান্য করি তার, চিত্রসিম্হাসনে রার,
বসাইল পরম আদরে।
নান নিজ দুহিতারে, অপিল জামাতা করে,
বিধিমত রাজব্যবহারে।
বিধেমত রাজব্যবহারে।
কিনিলি সারি পরে, সকে লৈয়ে জামাতারে,
সভায় বসায় সমাদরে।
কিনিপিটিয়া তবে, রলমোহনাদি সবে,
আনাইল আপন সভায়।
কিপ্লি বিবরণ, শুনি স্থা ছয় জন,

শব্জ বিবরণ, শুনি স্থা ছয় জন, পরম আনন্দ সবে পায় ৷ শিখ নব স্থাগণ, করে দৃঢ় আলিজন,

भव गयागन, कर्ड मृष्ट आलियन भिमनटग्रहन महानटनः

ত্বে হারা হপতিরে বন্দে॥

স্পতি গৌরব করি; তাহবোর করে ধরি, वमाईल छेउम जामत्म। স্থাগণ মহারকে, মন্মোহ্নের মতে বসিলেম নুপতি ভবনে । তাত্ত গেল দিব কির, তাতে সুখে পুপা त्रवाहेल जुलाया गडाता জালে দীপ মালচিয়, শোভা চমৎকার হ **७८% लाउन उपक मराज** ॥ কপুরের বাতি ছালে, তার গন্ধ সভাদে অতিশঃ হইল প্রিত। ् छटर मञ्जन्यन, क्टम यटम नव्यं ব্যিলেন হয়ে হরণিত। ্যন্ত রাজা সমূহতে, আইলেন স্প্র সভায় বসিল সর্বজন। রাল সম্বনীয় যত, বদিলেন জ্মান বসিলেন যত বিপ্রগণ।। মধ্য সিংহাসনোপর, রাজা রাজার 🐉 কি বনিব সভা সোভা দেই। যেন মধ্যে দিবাসব, যেরিয়া দেবতা সেইজানে দেখিয়াছে•যেই ॥

দেখি কুমারের রূপ, সানে সাধে অপক্রপ, বাহুভয়ে কি বা সুধাকর!

কিবা হর ভয়ে কাম, তাজিয়া আপন গাম, মহীতলে ছল্পবেশী নর।।

১কা বিষ্কু কি শক্র, জলেশ্র ধনেশর, যক্ষ রক্ষ অথবা কিছের।

ক্রারে দেখি রপদী, আইল কি স্থাবাদী, ছলবেশী হয়ে বোগেওর।

নত প্রশংসে মতে, রাজা চন্দ্রহণ তবে, নিজ মক্তিগণে আদৈশিল।

ব্য নায়িকা বচন, শুনি কছে মান্ত্রিগণ, শিরোধার্য পদ্মা যে বলিল !!

োরের নথাগণ; শ্রেষ্ঠগাত নক্জন, কন্যা দিব বহু ভাগ্য মানি।

াবে **হর্ষে নরপ্রতি, কহে** জাঘাতার প্রতি, হয় ভাগ্য জায়তা আপনি।

্র অভিপ্রায় হয়, তানার সচিব ছয়, ইহাদের কন্যা, ধন্যা ছয় :

^{ব্য} কৰ্মা স্থী হয়, নোমার যে স্থাছ্যু, প্রত্যেকে প্রত্যেকে বিভা হয়।।

রাজপুত্র কহে রাল, মন ওই অভিপ্রাল, ইহা হোতে স্থথ কিম্থিক। মার কা**ছে অনুমতি, আপনার স্কুসন্ম**তি বিশেষত পদা বাক্যাধিক !! গুনিরাছা ততংকালে, আজা দিল ভূত্যগণে ছজনে করিতে বর সাজ। শুনি তবে দাসগণ, এয়ে গেল ছয়জন ক্ষে বেশ নাহি করে ব্যাজ। মন্ত্রিগণ তথ্য পুত্র, সিয়া জায়াগণে করে यस कना। दिवाह कथन ! শুনি তার। হুট অতি, জানায় রাণীর প্রতি ভনি হানী আনদেন মগন : রাণীরে লইয়া মঙ্কে, রাজকন্যা গৃহে রঙে গিয়া স্বস্থ দুহিতারে বলে। कुमारतत मर्था इश्नः अन्य ऋस्त रः বিভা কর প্রতোকে কৌশলে । র্জেকন্যা হাস্যুত্থ, স্থীগণে ক্রে জ্ পুরিল আমার অভিলাম। যখন কলিকে যাব, পরস্পার সূথ প

এক স্থানে বাড়িবে উল্লাস ।।

গুনি বিবাহের বাণী, অন্তরে উল্লাস মানী, কুলবগু ধাইল ত্তরিতে।

জত্যকী নাপান নব, নারীর স্বভাব সং, বিশেষতঃ বিবাহ বাদ্যেতে।

গ্রহানদে রামাগণে, পাত্র কন্যা ছয় জনে, সর্বাচেতে গন্ধ মাথাইয়া।

য়'ন করাইয়া তবে, অঙ্গ বেশ করে সবে, অভিশয় আনন্দ পাইয়া॥

পরম উলাম ভরে, রাজকন্যা নিজকরে, বস্তুমূল্য রত্ন আভরণ।

িল মুখীগণ অতে, পর্য কৌতুক রতে,

ত্রেশা হইল ছয় জন।।

্ণী রাজকন্যা রঙ্কে, নারীগণ ক্রি সঙ্কে। কন্যাগণে লইয়া চলিল।

প্ৰম আনন্দ যনে, গ্ৰিয়া তবে নারীগণে, সভাপ্রাত্তে গৃহেতে রহিল।।

ত্ত্বত **নাপিত চয়, ক্ষিসিনে ক্**ন্যা ছয়, বসাইয়া সভায় আনিল।

থ্যাসনে ছয় বর, রূপ অভি মনোহর, সভারপে ফুদীপ্ত করিল।।

क्याद्वत मथ ह्य, त्राप क्र छन नह প্রায় মূনমোহন সমান! সমরূপ সবাকার, হেরি কুলবালা আর স্থির নহে কামে দহে প্রাণ। সবাকার চন্দ্রমুখ, সহজে হেরিতে স্বং বর বেশ হুয়েছে তাহায়। ভুলি দে সবার রূপে, পড়িয়া কামের কূপে সিবে হইল গাগলিনী প্রায়। কেছ ক্ছে ধন্য বাসি, রাজকন্যা ভাগ্যরাশি যার পতি ঐগননোহন। আছে আছা মরি মরি. কিবা রূপ স্কাপুরী মুরি মুরি সাক্ষতি মদ্ন ॥ व्यात तथ अर्गा महे, अष्टायत क्रथ अहे ্ বিধাত কি নথি সংখ্যার। **ভই আর ছজনাত্তে,** গঠেছিল একবাড়ে রূপের ভাণ্ডার খুনি তার।। এইরূপে নারীগণ, প্রসংশিছে জনে জ ম্মাধেতে উন্মত হইয়া। পাত্রকন্য ছয় ধন, দেখিয়া সভাস্থ চাহে সবে জ্ঞান হারাইয়া 🛚

সপে সেই ছয় ধনী, রমণ রমণী যিনি, **भिमन् अ**दी मम्याय। ্বাহাদের অঙ্ক প্রভা, স্থদীপ্ত করিল সভা. দেখিয়া চমকি সবে চায়॥ ্তলে গানিল সার, স্বাজগুত্র স্থা তার, इक्रिका। मधी এই ছয়। এ দবে সামান্য নয়, দেবাশেশ সব্রি হয়; নত্য হাত্য জ**ন্ম সুনিশ্**য়॥ ্ইরপে ভাবে মবে, এক এক কন্য তবে, বসাইল প্রতি বর আগে। গৈলি বত নারীগণ, উলু উলু দেয় **ঘন**, অঙ্গ প্রফুল্লিত অনুরাগে।। দে মহাসভার মাথে, মদল বাজনা বাজে, বিদা বাদ্য প্ররুষাল, তাশা তুরী করতাল, মোচকে স্থরকে করে গান !! ্তুহংস নরপতি, সভাসহ স্থে অতি, ् गर्गनरमः ज्रथंकि उथरन। পুরবাদী যত জন, সবার প্রফুল মন, দিঙ্গণ জয় জয় বলে।।

স্থাগণের বিবাহ।

রাগিনী বাহার, তাল মধ্যমান-ঠেকা।

ধূয়া। মনে করিচুন হৈরিচ গুরুপ আরে। নিষেধ
না দানে আঁথি চাহে গো অনিবার।।
নয়নের বস্মন, অংগি না গুনে বারণ,
অন্থির হুইল প্রাণ, গেল কুল বাথ। ভার ॥

अमा।

গুনির কর সহা আশ্বা কথন।
পুর্বে শুনিরাছ খুনুমের বিবরণ॥
কলিজ হইতে পুর্বে গদন করিল।
এই দিন আদি মণিপুরে প্রবেশিল॥
নগরে প্রবেশি সব শুনি বিবরণ।
ধাইয়া সভার মধ্যে আইল ব্রাহ্মণ॥
কিমন্ত,ত দেখিলাম শ্রীমনমোহন।
এত বলি পড়ে দ্বিজ হয়ে অচেতন॥
কি কি বলি নরপতি ধরি উঠাইল।
প্রথমি স্থাম জানি আশ্বান্য মানিল॥

রাজপুত্র প্রধাম আনন্দ অতিশয়: সৎক্ষেপে উভয় কথা শুনিল উভয়।। তবে সেই সভা মধ্যে স্থদাম বসিয়া। বিবাহ দেখেন হুখে বিভোগ হইয়া।। ছয় রাজমন্ত্রী কবে প্রফুল্লিত মনে। ভূতলে পড়িয়া প্রণমিল বিপ্রগণে !! ভূগে ব**ন্দি সভাত্থে**র অনুমতি লয়ে: কন্যাদান করিতে বসিল হুফ হয়ে !! নরগতি মন্ত্রী তবে জ্রিকমোহনে: তুষিলেন জীরজমুঞ্রী কন্যাদানে।। জ্ঞানশোহনেরে বহু স্থানর করি। দান দিল গণপতি ঐজ্ঞানমূঞ্রী।। তবে বল পতিশুণমুঞ্জরী কন্যারে। ঞ্জিণুণোহনে দিল বিশ্বি অনুসারে।। দলপতি নিজ চিত্রমুঞ্জরী তনয়।। চিত্রযোহনেরে দান দিল হর্ষ হয়ে।। শীরত্নাছনে জয়পতি সমাদরে। निक्कनग जीवजूम् अवी मान करत। তবে মন্নপতি রসমুজ্ঞরী দৃহিত।। রাগমোহনেরে দিল হয়ে হরবিত।।।

সম্প্রদান বচন বলান বিপ্রচয়। . . . **ছয় ছয় कन्यानारन - करत म**ञ्जी ছয় ॥ বিধিমতে সবাকার বিবাহ হইল। বরকর্যাগণ ভবে বক্ষারে পুঞ্জিল।। তবে প্রতি বর প্রতি রমণীর স**কে**। বাসগৃহে শরনে চলিল অতি রজে॥ প্রম আনন্দে সভা ভান্ধি সর্বজ্ঞন। আপন আপন হানে করিল গমন।। প্রতি বাসগৃহে বসে বিচিত্র পালজে। কোন রামা হাসিয়া পড়িছে বর অ**ভে** । যে যাহার সে তাহার জন্যের তো নয়। এইকালে তাহাদের ভাগ্যে যত হয়।। मग्रारथत वरम तरम एमज इहेशा। কত রক্ত করে অঙ্গ পরশ লাগিয়া 🕕 পুন পুন কটিবন্ধ পিড়িছে খসিয়া। রাখিতে ম। পারে বত বান্ধিছে কসিয়া অন্তরে জ্বলিছে দীপ্ত মদন আগুণ। অক পরশানে জারো বাড়িছে দিওণ !! দেখিয়া শীতল হব মনেতে ভানিকা। कनगटन नटनन दर्गाटल दमन रमाहिया

দেখিতে স্মরিতে তাব দহি**ছে মদন**। ক**টাক্ষ** বিভৰ্ক ভৰ্ক কৰে **ঘনে** ঘ**ন**॥ . कर प्रदेशदत वक्त नीउन स्**रूट**। কোপায় শীতল আর লাগিল জ্বলিতে॥ কেহব। পশ্চাতে থাকি ক্ষন্তে বাথে বাহা। চাদের করিতে আস চাছে যেন রাহ্ ।। কেছ বাঁধে কেশ কেহ দেৱ এলাইয়। অনিমিটেৰ আছে কেহ বদন চাহিয়া ! কৈছ বলে ওচে বর তোল নৃথ থানি। পরাণ যুড়াক ভাল কহ দূট দানী।। কেছ বলে মুমে যেন পাড়োনা চুলিয়া। একবার চাহ দেখি নয়ন খুলিয়।॥ प्रमुशैरम अहि वह कि हू माहि दल। নে হাঁসি প্রন হয়ে কামাগ্লি উপলে।। ্হান্য রহস্য হাদ্য কথায় কথায়। কত ছলা করে কলা অশেষ কলায় ৷৷ ছাবে মনে যদি বুক চিরিয়া ইছায়। श्रम्य মাঝারে রাখি ব্যথা ভবে যায়।। এই মত উন্মতা সকল নারীগণ। প্ৰতি বাস**্গৃহে হ**য় এমত ঘটন।। (23)

তবেত সময় জানি রহিতে না পারি। মনজাথি নিজ গুহে গেল সব নারী॥ ভাষ্টদের মন দুঃখ কি বনিব আর। সুৰ্বসিক বুৰিবেন ভাবিলে নিৰ্দ্ধাৰ !! নিশ্চিত্ত হইল তবে বর কন্যাগ্র সক্রেজ্যুতে রক্ষ ব্ল্যে উঠিল তথ্য :: প্রথমে আছিল ভয় ছয় মন্ত্রি-কন্যা: শেষে সুখতরে বছাইল বস্বন্যা স্গ'কিতে পড়ি পুন পুন স্নান করি। ভুগু দৰে রহিলেন মুখে মুখ ধরি। র'জপুত্র রাজকন্যা উভয় মিলনে। थुन पर मध्य गामिश हरेजान । रुहिल दिदिध तक स्ट्रांश नुहेकरन। সে নিশাব কত সুখ ন। যায় বৰ্ণনে ॥ বিপরীত আদি রতি ভুঞ্জি অতি স্থে . रमानरम निष्ट्रं भिन भिनि भूरथ भूरथ নিশি অত্তে কোকিলের স্করব শুনিয়। নিত্র, ভঙ্গে উঠে রায় জ্রীদুর্গা বলিয়া। এইরূপে মনিপুরে রহে সপ্ত জন। প্রতিদিন বাড়ে রঙ্গ আনন্দ সুখন।।

ন্থতি পরম সুখী সুখী মন্ত্রিচয়।
জামাতাগণেরে স্নেহ করে হাতিশায়।
কালিকার বরে প্রাপ্ত এতেক সম্পদ।
কবি কহে যে তারার কিতার বিপদ।

মন্মাহনের সন্তান উৎপতি।

রাগিনী সবফরদা, তাল মধ্যমান।

রুলকগুলিনী কালী হের অপান্ধে গাগালে।

ুবালে ভবাদ্ধিতলে, ছজনে ক্বলে।
পদ্ধা।

এইরপে রাজপুত্র মণিপুরে রছে।

সংগা সচ্চে মিলি সদা স্থা কথা কছে।

একদিন রাজপুত্র কহিল রাজায়।

সচেশে যাইল দেখিবারে বাশামা।

শুনিয়া হৃদয়ে দুঃখ ভাবি অতিশয়।

অতি ত্বেহে নরপতি জামাতারে কয়।

আর কিছু দিন তাত থাকহ হেথায়: নয়ান শীতল করি দেখিয়া তোমায় !! শুনিয়া কুমার আজ্ঞা লজ্জিতে নারিল স্থাতির প্রীতি হেতু স্বীকার করিল।। এইরূপ রহি নিত্য নিত্য ভুঞ্জে রতি। শ্রীমনমুঞ্জরী হ্ইলেন গর্ভবতী।। नित्न पित्न दाएए गर्छ এक पृष्टे गाताः অপ্রকাশ প্রকাশ সুরূপ সুপ্রকাশে। এবে মনমূজ্রী সাখ্যাত যেন রতি। তাহাতে প্রথম গর্ভ রূপ বাড়ে অতি :: তাহে উচ্চ শোভে কুচ কি কব অধিক . **অমুভ**ব করি মনে বুঝিবে রসিক।। অলসে অঞ্চল পাতি ভূমিতে শয়ন। পাতখোলা আদি পোড়া মৃত্তিকা ভক্ষণ অন্যান্যে অরুচি রুচি অগলেতে হয় থাকিয়া থাকিয়া হাই উঠে অতিশয় 🗵 আনি তবে মধু চিনি দধি দুগা ঘুত। পঞ্চমাসে মহারাণী দেয় পঞ্চান্ত।। मार्थ योष माथ्यानयुषारण युक्तती : भारयमधि मिक्रित मिठीई गिविती ॥

মঙামঙী মনহর। মতুম্নে মজা। माथन नवनी होना की तथ ७ था हा । সাতে শত ভাজা লয়ে সাথ খায় মুখে। নময়ে বেদনা আসি আক্যিল কক্ষে॥ আহা উত্ত মরি বলি কান্দিয়া বিকল। কোন মথী গভৌপরে দেয় তৈল জল।। বিলাপ করিয়া কয় গভেঁতে কি হলো। বাঁচিনে বাঁচিনে মরি নরি প্রাণ গেল। थाति । अभिनी वाल किश्वि महिला এখনি প্রসাব হবে চন্দ্রাকার ছেলে !! শুনি কয় ছেলেয় নাহিক প্রয়োজন। প্রাণ যায় বাঁচি কিসে বলগো এখন।। মনে ভাবে হেনহবে জানিলে পূর্বেতে। রতি রসে রব কেন পতির সঙ্গেতে h এবার বাঁচিলে নাহি বঞ্চিব বাসর। স্বৰ্ণথ স্বপতি ছাড়ি শোব স্বতন্তর॥ এইমত ভাবিতে ভাবিতে ক্রমে তবে। প্রস্বিল যুগাস্থত দেখি সুখী সবে॥ हक्त क्रो मम क्रश युगल क्रमांत्र। পাইলেন রাজকন্যা প্রসাদে উমার।।

দূরে গেল বেদনা মাতন। যত তরে। চল্পক কুমুম এভা বর্ব দোহা ধরে। 'হেরি পুরবাদী' ভাসে স্তর্থের সাগরে । মহানন্দ রাজরাণী দোহারে দেখিয়া। দীন ছিজে দেৱ দান ভাণ্ডার খুলিয়া । मथाभव मह सुधी कियन माहन সুথজলে ম্য় অতি স্থীদের মুল 🛭 আমনদ উৎসব হইল মুগতির ঘরে: কেই মাতে কেই গায় আমনদ জন্তরে। ক্রনে ক্লাচার কর্ম সকল পারিল। দিনে দিনে দুই শিশু কাড়িতে লাগিঃ তবে রাজা নাম এচারিল দোহাকার इ॰ मञ्ज क्रमध्क पृष्टे नाम मात ॥ **আক্রিনায় দুই শিশু হামা**গুড়ি যায় : <u>জীমনমোহন হেরি মহাস্থে পায়।।</u> মহারাণী চন্দ্রকলা দোহারে পাইলা মহানদে ভাষে সদা ক্ষেতে রাখিয়: পুজ্র হতু রাণীর যে সাধ ছিল মনে। সে সাথ ইইল পূর্ন দৌহিত্র দরশনে 🖰

ক্রমে ছয় স্থার হইল পুত্র ছয়। তাসবার যেই নাম শুন মহাশয়।। রজমোহনের পুত্র রক্তরজ নাম। ভাষ্থ্ৰ জ্ঞানমোহনের গুণ্ধাম 🛭 শিথিওজ নাম ভণ্মোহ্ন ম্ভান। চিত্রহোহনের পুত্র কুশ্বজাখ্যান। রবাধক নাম রাজ্যাহ্ন তন্ত্র নীলারজ রাগ্যেহিনের পুত্র হয় : মহাস্থী রাজগুলু মথার সহিত। মিংহল ভ্ৰম হইল আনকে পুৰিত।। রাজ। রাণী মন্ত্রী মন্ত্রি নারী আ**নন্দিতা।** সামনিত্ত। রাজকন্য স্থীর সহিতা ॥ সর্কেশ্বর চাহি তবে শুণাকর কয়। বাজপুত্র দুঃখ শুনিরাছ মহাশার॥ ভাষিয়া **দেখহ ইছে কতসুই তা**র। কতস্থুখ দেখ ভাবি সে রাজকন্যার ।। প্রকাত্তিক ভক্তি মার তারার চরণে। মলাই তাহার স্থে যান ইহা মনে ।।

মনগোহনের স্বদেশ্যাতা।

রাগিনী বেহাগ, তাল আড়া।

পূয়া। কি কৰ শিখন, হের দিবকৈর, যে প্রকাশে।

এখনি শহর বাবে শহরী কয়ে বৈলাসে।

ল্কাবর পন নয়, চানে কি লুকান ফাফ;

শহর বাত্য প্রায়, না জানি কথন গামে

য বলিতে নাছি অন্যো; উমা ত্রিজগতে প্রো

গাইছাছি কত প্রণে, তেঁই মাবলে সস্তায়ে।

ভূমি গিয়া জামাভায়, হুরাত মিন্ট বপায়,

ফলি উমা বেখে যায়, জনক-জননী কামে।

ভারা কতে ওতে গিরি, চল মধ্য তিপ্রারি, ফাফ

जिभमी।

এইরপে মহারকে, রাজপুত্র সথা সং মনিপুরে আছে হাউমনে। বয়ক্রম দ্বিৎসর, হৈল দুই শিশু

ংহে আধ আধ বানী, এবনে পীয়ুষ মানিং রাজকন্য: শুনি হর্ষিতা। খীদের শিশু সনে, খেলে শিশু দুই জনে, (मिथिश) मनाहे शूनकिछा !! মহাস্তথে আছে রাজস্ত। াবে এক রজনীতে, স্বাধ্ব দেখে আচ্থিতে, পিত; যাতা অতি দুংখযুত।। াটাইছে ভূমিতলে, দুই চক্ষে ধারা গলে, কেনে বলে কোখা রে মেহিন। ারি বর্ষ হৈল গত, সনেতে প্রবোধি কভ, निनांत्रिर **७८**३ वाश धन । াবনে জীবন দিব, অনলানলে নিভাবী 'দাহনে দহিব প্রাণপ্রাণী। ্তস্থির নাহি বান্ধে, বিনাইয়া কত ছান্দে; कान्द्रिश वर्गाकूल बाजा बाली।। গৈত হতে শত গুণ, জননী ক্ৰন্দন পুন, স্বপ্নে দেখি নিদ্রা হৈল ভন্ন। ্ৰ উঠে মনে অতি, নীৰ্ঘধান ঝড়গতি, কামেদ আছাড়িয়া নিজন্ন।।

জাগিয়া ক্রন্দন সবে, কছে কন্যা ধরি ক্র কেন নাথ খেদ কি কারণ। ্রিয়া ব'কো ব'লপুলু; ক**হিল দকল** ওপ স্পানের যত্রিবরণ।। গুনি দুঃখে কছে ধনী, ও হে নাথ ওণ্য কেন দুখ ইহার লাগিয়া। किक कला रुभवर्ष, (योद्य लद्य योदि र কেহ না রাখিবে নিবারিয়া । এ তেক প্রতোধ করি, গোলাইয়া ে শর্ম शहर कि जिम्म अही। ফুৰিলেন অপতিরে, তহ গিয়া স্থানি। শুনিয়া কুলার তুরা করি।। 🎮 জার সমীপে গিয়া, কছিলেন বিস্থি ञाशनात यञ विवद्या . জামাতা গমন কথা, ভনিয়া প্রম ব মনন্ধ্যে পাইয়া রাজন। ক্ছিলেন মন্ত্রিগণে, তাহারাও নপ্দ पृथ्यवित रहेन यशन।

দুঃখ শুনি জামাতার, ভাবে রাজা নহে ত বিদায় করিব এইক্ষণে

েজা রাজমন্তিবরে, নিজ নিজ জায়তেরে, যাত্রা হেতু সপ্ত ডিঙ্গা দিল मृत्र मिनिशन, प्राप्त प्राप्त अश्वत, नियां गर्व मधान कहिए।। ्ल्कना महातानी, कमात गर्भन जानिः কা**নে নিজ মন্ন আ**ছিংছিয়া। াত মায়ে ব্যথা দিয়ে,কোখা যাবে মা ছাড়িয়ে: অমে দিব কেম্বে ছাভিয়া । ারতা মায়ের গলে, কেঁদে কেঁদে কন্যা বলে, जनगिर्भा भूटम सम ६५८कः। া থৈকা নাছি ধরে, । ধরিয়া কন্যার করে,, কহে ম। কি ত্যজিলি গে: মাকে। हिौद कुम्मन घट, वर्गनाट अविवृश ত্বে রাণী ক। নিদ কান্দি কয়। বা রাখি কংশগ্রে, লয়ে যাও হংসধ্যে, তবে সোর চিত্ত ধৈর্ম্য রয়॥ ি পতি হরুমতি, স্বায়ে রাষ্ট্রীন্ত্রগতি, কংশপ্তকে সমর্পিল যায়: ি কিছু সুখ পায়, বন্দি পিডা মাতা পায়,

१९ मध्यक नदः त्रामा यात्र ॥

তবে তার স্থী ছয়, কান্দি তার। অতিশয়, ব্যথিত জননীগণ সনে।

পিতা মাতা বন্দি তবে, স্ব স্থ পতি সঙ্গে সহে: পুঞ্জ লয়ে করিল গমনে।।

তবে সধা সপ্ত জন, বন্দি সব গুরুজন নিজদেশে চলিলেন সবে।

মনিপুর দুঃখে পূর্ব, সপ্ত সথা গিয়া জুল নিজ নিজ তবি চড়ে তবে ॥

আত্মী কুসুম শ্যামা, সারি খুলে দিল ডিং কৌতুকে চলিল নিজ দেশে।

বহু দেশ রাখি দূরে, আসি সরস্বতীপুরে রাজা সনে মিলিয়া হরিবে। ক্রিমে হয়ে, পঞ্চ দিন তথা বা ক্রেমে নীল্সচলে আইল।

স্থ স্থা সিস্কে করি, হেরি জগন্নাথ হ*ি* সবে জন্ম কৃতার্থ করিল।

ভকতি প্রণতি স্তৃতি, পুজা দিয়া মহায়[ি] লুয়ে বহু শ্রীমহাপ্রসাদ।

কিছু বা তথায় খায়, কিছু সঙ্গে লয়ে হ তরিপরে পরম আয়াদ ॥ ্ন সবে স্থাপে ভাসি, ক্রমে কালিঘাটে আসি, মহাকালী দেশি সুখ পায়। ায়ে মহাপুলা দিয়া, পুন পুন প্ৰামিয়া, दुता करि छदी शुलि बाग्न ॥ াকু ওলিনী ধরী, রাত্রি দিন বাছে তরী, डेंशगीठ इस नः द्यापद्र । গলি পুরি বর্মান, তিবে ইটি ঘতিমান, शृक्षा निया मर्समलनाइत । রি বহা ভাতি নঠি**. গহানকে মহাণ্তি,** ত্বরা তরি করি আকোহন। 'ল **অতি কুতৃহলে,** মহা স্তথা**রি** উপ**লে:** বাহ বাহ বলে যদে খন॥ ্দেশ লক্সি শেষ, পাইয়া কলিছ দেশ निज्यारि जिन्ना उत्तिन। জ স্থাগণ সঙ্গে. উত্তিল মূন বুলে. महानटन नगटन छेठिल।।

^(25)

بدوق

कुगादहत निकालरः श्राटम ।

রাণিনী কেনার, তাল বং।

পুরা তারতে, জারিনী তবে জগতের ভিন্ন নই

কগত-জননী ভুলি কে জারিবে কে:মা বই ৮

এমেরি মা ভব লাকো, বাজিলে ভবের ফাঁচে,

বল নাঁকে ভাল বাচে, প্রস্কেন্থ নাঁকি ভা ভাবোগ্র দীন লাবে, কেন ল'ল বর বেং।

সপনা ভাতান্ত পাকে, জানিনে চরব বই।।

भन्।

মহানদে রাজপুত্র নিজগণ সজে।
ডিলা হৈতে ভীরে উঠিলেন অভি কল রাজপুত্র দেখি কলিদের প্রজাগন। ধাইয়া রাজারে কহে শুভ বিবরণ। রাত্রদিন ভাপে তম তাপিত তাহার। অমৃত সিঞ্চিল যেন শুভ সমাচার।। আনদ্দে ক্রন্দন করি চলিল স্পতি।
সন্ত্রিগণ চলিলেন রাজার সংহতি।

মহানশ্দে নরপতি চলিতে ন: পারে! ছে ধ্রে বায় মন্ত্রী লইয়া রাজাতে .. প্ৰেতে হইল ভেট জীমনমোহন। ভূ**ষিতে** পড়িয়া ব**ন্দে পি**ভার চরণ।। শিরে চুয়ি মহার তৈ আলিকত দিয়া। কান্দ্রিত লাগিল নোহে যাক্ত হারাইছা।। कटण्याः व्हित व्हेत्स्य पृते असः इक्ट्राइन कि दर्क रास्त्र उत्तान নিজ নিঅ পিডারে ২৭মি ডারা তবে। পুত্র দেখি মহানন্দ পাইলেন সবে।। ফ্রমে পথ চলি রাজভদরে আইল। 🦯 '**এড স**ম্চার রাণী ক্রধান্ত পাইল ।। খান**ন্দ স্থাতে ভাষি আসি বহি হাতে**। মায়ের চরণ বলে এমনমোহন। তথায় **আইল হয় মন্ত্রি না**রীপন। গ্রাহার্য সম্ভাষ্ণ সকলে করিল ংনকালে সপ্তদোলা তথায় আইল।। নিজ নিজ পুত্রবগু পৌত্র সবে নিয়া। গৃহে লয়ে যায় মহানন্দে মগ্ন হৈয়া।।

. गर्हाडा क मीन दिएक ∙ फिल रुह्थन। যোড়শোপচারে পুক্তে কালিকাচরণ।। मनमुङ्गतीत ऋर्भ मीख करत्र वाम। চন্দ্রানন হেরি রাণী শুধা ৩ উল্লাস ॥ হংশপ্তজে কোলে করি রাজা আর রাণী অতি স্বথে চূদ্বে সদা চাঁদমুখথানি।। জননী জনকে রাজপুত্র নিবেদিল। জ্যেষ্ঠ এই মণিপুরে কনিষ্ঠ রহিল।। তথা হইয়াছে মধ রূপল কুমার। হংশধজ এই কংশধজ নাম তার।। শুনি রাজা রাণী কহে হাসিয়া হাসিয়া। ভাল করিয়াছ তথা তাহারে রাখিয়া॥ চন্দ্রংশ রাজার ঘুচিবে তাহে দৃখ। হৎসপ্তল লয়ে কেখা আমাদের সুখা। রাজবধু দেখিতে আইল নারীগণ। রূপ হেরি সবাকার আনন্দিত মন।। धनात्रश विन अम्भिष्ट मर्कजन। যেমন রাজপুত্র মন্মুঞ্রী তেমন॥ তবে নারীগণ আর কুলনধু সঙ্গে। ওভচণ্ডী পূজন করিল রাণী রক্তে॥

সব নারীগণে তবে সন্ধান করিছা। বিদায় করিল রাণী বাস্ত্র ভূগা দিয়া। অংশ রহিলেন হৎসধকে কেংলে লয়ে। বধু বিধুমুখ নির্ধেন বলে রয়ে।

মনগোষনের রাজ্য তা প্রিঃ

মালকোম বসত, ভাল জলদ তেত্ল।।

গ্রন্থ নাহি লাজ একি বাজনাত।
পরিকান হন্ত, হয়ে একনত, কাহিনীর নিত্র,
দহিতে উচিত। এক দেখি কোন ব্যক্ত, বধ
করে নালা প্রাণে, তবে রাজা জানি, যনি
পতি আনি, বাচাও কামিনী, মননের হাত।
ভাগেনার বিরহেতে, আশমি ভুলিছি ভাতে।
হানবে কোকল, বধ কেন বল, কর কোলাহল
বথা প্রাণকান্ত।।

अपर।

এক দিন প্রিয়া সহ রাজার নন্দন। পুজোদ্যাদনে গেল কালী করিতে দর্শন

(हित कुलकु ७ लिसी कु छ। अलि हरा। করেন প্রণতি স্তৃতি ভূতলে পড়িয়ে॥ মান্সিক মহাপুজ¦ করি স্মাপন। - নানামত ত্তবন কর্মে দুই জ্ন।। এইরপ তথায় রহিয়া কতকণ। প্রিয় সহ করে প্রিয়া উদ্যানে ভ্রমণ।। উদ্যাদের শোভা হেরে রাজক্ম কয় এমন উদ্যান আখিগোচর না হয়।। উদ্যানের মানেতে অগুর্বে সংগ্রের। **নির্মাল সলি**ল চারি "মাট সলে(হ্র 🛭 প্রতি থাটে শোভে চক চাদনি স্থলর। প্রিয়া সহ উঠিলেন তাহার উপনা দিব্যাসনে দূই জনে বসিয়া ভাষাতে কৌতুক দেখায়ে প্রিয়া সহ কৌতুকেতে 🗥 সরোবরে খেলে চক্রবাক চক্রবাকী: সারস সারসী নাচে ডাহক ডাহকী কমল করার কত ফুটে কেব্দন্দ বিষ্কারিয়া বুলে শত শত ষট্পদ 🛭 তার চতুস্পাধের ফুটিয়াছে নানা ফুল মকরন্দ লোভে মত ভ্রমে অলিকুল া

पिकित मनशाबिन क्रिंगोइएड वर्टर সংযোগীরে স্বস্থ করে বিয়োগীরে দহে । তাহাতে বসত্ত কত্তাগ্ছে লাজন : এসেছে তাহার দৃত প্রধান মদন।। সদ। শ্রাসনে সন্দিলতে পঞ্জার। তাহে কুহ্গণ সদ। হানে কুত্সর।। কুত্২ কুত রুগে প্রতি ঘরে। রাজ আগমন জানাইছে সবাকারে ॥ **সংযোগী ভায়েতে ত্রন্ত হয়ে ওতক্ষ**। রব শুনি রাজকর ক্রিছে অপ্।! বিয়োগীর স্থানে কর না পেয়ে মদন। উস্তাতিসিল করে সন্ধি সন্ধিন !! যদনে প্রমন্ত মধ্যকর বধু। মুখেই মহাস্থে পান করে মধু।। কোকিল কোকিলা মুখেমুখ আবোপিয়া ! নানামত ক্রীড়া করে মদনে মাতির।।। পুচ্ছ ধরি নাচে সদাময়রী ময় রে। দৈখিয়া, দহিল দোহে শরেশ্র শরে ।। সম্বরিতে না পারিয়া কম্পিত অন্তর। সকাতরে সম্পিল মদনের কর !

ক্রমে সব প্রিয়ারে দেখায়ে অতি স্ক**ে**খ। উদ্যান আগনে প্রবৈশিল হাস্য মৃথে॥ দেখিয়া তাহার শাভা শশাক্ষ বদন।। কত প্রসংশিল তাহা না যায় বর্না ॥ স্বপ্নাবধি যে মান্স রাজপুল্র মনে। ত্বপন করিল সত্য মিলি প্রিয়াসনে। সেইত আবামে তবে বিভিত্র পালজে। . শয়ন করিল নিজ প্রিয়া লয়ে সঙ্গে। বিবিধ বিলাস করি সে দিবা শর্কারী। প্রিয়ানহ প্রাতে প্রবৈশিল নিজ পুরী।। এইরংগ রাজগুল মহাস্ত্রথ পার। কভু স্থাগণ সহ উদ্যানেতে যায়।। এরক্ষয়ঞ্জরী আদি রাজকন্যাসনে। উদ্যা**নে একত্র কতু ভ্রমে সুধ মনে**॥ রাজকন্যা সহ সখীদের নিত্য প্রায়। সাখ্যাত হইয়া প্রস্পর স্থ পায় ॥

श्रेष्र :

সর্কৈশ্বর কছে সথা করি নিবেদন। বিস্তারিয়া কহ চিত্রপুর বিবরণ।

ब्राटकाव कि स्टला किया स्टला राज्यांनी । কি করিল ভ্রন্থী নামিনী মহারাণী : শুনি গুণকৈর কয় অর্থান কর। সংক্ষেপেতে নিংবদিক কিন্তাংর কিন্তর : পতিরে না দেখি তবে সতাবিষাদিনী। **ठाटक्** ठातिकिट्श म शांत्रशा बुल्किनी ॥ म। পাইয়া ভাগনাথে দত বিলাপিয়া। কাঁদিয়া অভিন হালী অস আছোড়িয়া ন কহে আমি হায় কি করিলু মাটি খেয়ে। নাথে করিলাম পক্ষী পক্ষীর লাগিয়ে॥ কতেক যাত্ৰা বঁধু পাইয়া ভাহায়। ধনি আইলেন পুন হারাইর হায় <u>।</u> কেন বা অঙ্গুরী লয়ে প্রাঙ্গুলে দিনু! কত নিৰাহিল বঁগুঙনি না ওনিয় मिहे अञ्चिमारम जाकितनम अधिनीरह। পক্ষীদেহ যাতন। কি সারিয়া অভরে।। দেখে ঠেকে শিখে তরু শিখে না শিখিয়। ওধা বলি নিজ করেগরল ভক্ষিনু : এইরূপ থেদ করি কাঁদরে সুন্দ্রী। প্রবোধ করুয়ে কত প্রিয় সহচরী॥

काइ पृथ्य छाज धनी मृत कत मन। অবিলয়ে নিকেত্রে আসিতে রাজন। এণত বারেক তে। গিয়: পুন এসেছে। তেমতি আদিবে পুন গিয়েছেই।। কেদ্ৰ: এসৰ কথা তারিয়৷ গোপান ! কর্ছ (অনুতে সমুর্জিনের রক্ষণ ব क्रिय देश्या श्रुति धनी आता थिए। भएन । ए।कार्यन इसम्बी बोटाम तहरम । সতাশাস রভন শচাধ পুরাতন। छ । ११ कार्म कानस्तर्भ अहिल उभन ९ रहा कालि करहा होती मधी भट्टमारिया। তিথে গোল কালা রাজ্য তোমাকে ভাপেন দে অবধি ঝাজো নাছি আইদে রাজন प्रशास्त्र दिन कर क्षेत्रारह शालन ! প্রমি আজ্ঞাবলি শিরে এরাম রতন। স্পাসন ভারাপ্রে পালে প্রজাগণ। এইরূপে রহে রাণী দুঃখেতে মগণ। হেপা মণিপুরে তবে জ্রীজ্ঞানমোহন।। চিত্রপুরে চিত্রাণীরে ভাবি চিত্রপুরে। ।ববরণ জামাইল **সকল স্থা**রে॥

নিজ গুহে প্রকারাতের ব্যায়ে সবার: স্বার সন্মতি ক্রে চিত্রপুরে যায় 🕐 পক্ষীরূপে বার পদে পরি ফর্নাস্থ্রী। रेभनी छ जिज्ञश्रुद्ध राशांत्र खुनम्ही ॥ দেখি হর্গে অফুরী খুলিরা ভবে রাণী यांनरम यम्ब कर नाहि अहरत वाती পতি প্রতি হতি মতি মতী যে মুল্টা 🔻 क्क्में मिंछ। भिष्ठा छार श्रांख ह भूपेटि । ब**र्केट्स धनी** ध्यम कत्या निक्त । रिनदः मास्रमा कटतः मश्चित्रः 🕾 🗟 সিৎস্সনে তমি এজ: পালে পুর্লাই : **সান্দি**ত মভাস্প প্রজ'ব সহিত। ब्रिशामन् ननस्यतः नियः कृतकः उठिः কত দিনে সুনারো হার গভারতী। षण शारम अमरिल समार कृषातः পুত্রমুখ হেতে লাজা আমন্দে অপার।। শাশি সম বাড়ে শিও নিবসে দিবসে ৷ ক্রীড়া অত্তে বিদ্যারশ্ব পঞ্জন বয়নে।। মবরস্কু নাম রাখিল তাহার : বিভাদিয়া কুমারে অপিল রাজ্যভার ।

যুবরাজ হইল সাননের পালে প্রজা r স্থান্দরীরে কলি মণিপুর চলে রাজা ॥ পাত্রমিত্র প্রজাবর্গে কহিয়া সবায়। প্রবেমিয়া মণিপুরে উত্রিল রায়। মহানদের পুন মর মিলি মথাগবে। আনন্দ উৎসব নিত্য প্রিয় পুরেলাদ্যানে মহাস্তথে কিছুদিন যায় এইরপ। ভবে মন্ত্রিভ্রগণে সঙ্গে করি ভূপ । জ্ঞানতে হবে রাজ্য করি সম্পূর্ণ। করি দিল তার মন্ত্রী সথা ছয় জন ! হছেপুল পালন করেন প্রজাগণে। সুখ মানে এজাপ্ তাহার পালনে **रिष्ठमिन इ।अ**वि.भी देखे था व किया। ভোষ্ঠ থামে গোল দোহে লোকা ত পাইয় শ্ৰীমনমোহন তাহে পেয়ে মহালোক। শ্রাদ্ধাদিতে তুষিলেন পিতৃ দেবলোক इक्ष मञ्जी मञ्जि नांदीशन करम नरत । রসমোহনাদি ক্রমে আদ্ধলাদি ক্রে শ্রীননমোহন মহারাজ মহামতি। পুত্র উপযুক্ত দেখি তাহার সংহতি 🗵

ŧ,

সরস্তী পুরাধীপের পৌত্রী অন্পম।। হংসপ্তজ বিভাদিল কন্যা তিলো এম। " মন্ত্রিগণ আপন পুরের বিভা দিল। নহানদে কলিছেতে পূৰ্বিত হইল া अनुत्रा तरह ताए कलिक नगरद्र। কেথা মণিপুরে চন্দ্রংস রায় মরে। क महा अभिवृति छ देश इहेल। পুৰত রাজার কন্যা বিবাহ করিব।। পর্য রূপ্যী মে মন্তর। নাম ভার। তাহারে গাইয়া প্রথ মানিল জপায়। উন্মন্ত্যালম পুরুত্র দিয়া রাজ্য ভার মন্ত্রি করি দিল তথ সপার কুমার ॥ নিশ্ভিত স্ইলা মনমুঞ্জীর মনে। প্রমার্থে দিয়া মন রহিল নিউরনে ॥ অবশেষে ব্ৰহ্মশাণে হইয়া মোচন ोक्रार्क्तत (यर्भ कर्रा कतिल १भन ॥ ওণাকর প্রতি তবে সঞ্চেশ্বর কন। নীলায়র হৈতে হলে: এসদ ঘটন 🖟

আত্ম পরিচয়।

অত্তর হয়ে কবিছের যুশের প্রয়াস। মন পক্ষে একামনা হয় উপহ'স॥ শ্ৰম হয়ে কৰে গেন হন্ত উত্তোলন। উক্তাহক নতা চাছে কহিছে আহল্ 🛊 ক্ষিতিতে বিখ্যাত স্থান জেলা ব্ৰদ্ধিয়ান विज्ञांटक्षम ताक्रमधी कृषग्रविधान्॥ তার অন্তপাতি বড়াশীল নামে গামা শিউজাতি সনেক বসতি অনুপান । **দামে**তির দক্ষিণে উন্তের বঙ্গেশ্রী। পুরের ভাগিরথাঁ পদ্যাদ্দে গড়াগর ব্রাহ্মণ কায়ত্ব বৈদ্য ভৌদিয়ে ভেক্টিত জ্যি মধ্যে কাম পাড়া কচি কুলে,ডি অভঃগর আলু পরিচর কিছু কব : मिकिन हाती। य काश्रय कुरला छून ॥ रब्दा वाराना म-द्रमाश्रद विदर्गाम माग्राप लिन्धगण उनात्व लिन সর্বা ভণাবিত লুই তাহার লব্দন। মম খুলতোত নান জীরাধাযোহন। কনিষ্ঠ হয়েন পরটপকারে ভোষ্ঠ। ততে:ধিক তার সহোদর যিনি স্যেই জীরাইগোচন দাম অতি গুরু মন। তার স্তত অকিঞ্চন ঐতারাচরণ : প্রীয়ত জীনবর্ষণ বাবুর আজায়। খনমথ কাব্য রচি ভাবি শারদায়।

ওদ্ধিপতা।

शुक्रा	পশ্কি	অ ওদ্ধ	শুদ্ধ !
۵	á	यशं श्री	#XI #
:2	52.	क ट	करन
2.0	;>	के राज्ञ व	डेलगूल
4 (5	⇒ e	CRIDIE	শোভা
٥٥	^{بم} ر 8 م	কুছে শুভূ	₹র সবি
		अधिकात्रम् व्याप	र्शीत्व करोड
48 49 %	引 多 下山	१क जिल्ला शतकाति	
À		表的情報的	ক্ষাম গুল 🔏
łż	٥	इंद औ	নূদ। বা হ র্য
€ j*.	è	± जिन	এলিস
3 pi	ও মী	मन्द्रम औष्त्रकः दिश्वद	भो की तरमा स्थित
12	; 2	শুনিং	Wew?
î	c_i :	े अ र्थाक	***
.ર ં	d.	FC PF	100
73	11	এগলে	ciri
16181	2125	বিপুনাঞ্চ বলুপ	10 125
66	29	পংক্ষ	7
Law	20	ধরিত	
9.0	> 6	ৰা'ণ হিত্বিযলঃ	वानी। कहि पुर्वे
٠ ` د د .	>	अभि न	स्रुपी न

7/2	ħ	বয় হয়	र श्की
230	5	सहस्र की	ম্যুন্ধ
299	20	মিল জ্ব	मिल ५इ
838	20	রকীভূ তে	র ভিত্তপ্রে
225	3	इर्धि	ছঃসি
340	49	গ্ৰম	7.25
\$	7:	य विद्रा	প্রত
२७७	5,5	ভ. ম	प्रमुख
> \$6	•	ন ে	মাৰ
300	۵	- 英本	Ĩ <u>₩</u> j.•"
>43	7	1+71	¥ ² 3
290	4	45.4	\$ (\$6.5)
293	y ,	ভার	318
5.3.0	2.6	कि भाग	বিষ্ণান্ত

সংপ্রতি হয়েছি প্রান্ত করিব বিপ্রাম। মানস ভোমার রাজ্যে করিতে বিরাম :: গুনিয়া রাখির তারে করিয়া যতন। ভত্য এক নিজ দিয় গেবার কারণ দ এইनरण शक्षतिन गन्नएंभी थाकिया। জানাতে কহিলা অনুগ্ৰহ প্ৰকাশিয়।।। ত্র মহারাজ আমি তোমার মেবায়। বড় ভৃষ্ট এক মৃদ্র দিব আপিনায়॥ কল প্রাতে আফিবেন আমার নিকটে। গ্ৰন করিব, মন্তু দিয়া **সক্পটে** ॥ গ্রণাম করিয়: অ্যাম হইর বিদায়। মদন নামেতে ভূত্য পরে করে তায় :: রাজারে দিবেন মন্ত্র সাগারে বঞ্চিত। দানে কি প্রভুর দয়া কা হবে কিঞ্চিত। শুনিয়া বলেন তবে সন্নাদী গোসাঞি ভাল বাগু তুমিও বঞ্চিত হ**হে নাই**।। महानी निकटि उदय शतकिन थाएं। গিয়া প্রণিয়া দাওাইছ যোড়হাতে। তবে মন্ত্ৰ দিয়া যোগী কহিল আমায় ৷ নিজ প্রাণিদয়া বাঁচাইব মুক্তকায়।।

নিজ দেহ ত্যজি অন্য ধড়ে প্রাণ যাবে। তৰ ধড় মৃত হবে মৃত ধড় জীবে॥ স্থায়া পাল্টাতে শক্তি হবে মরবরে। নিদ্ধ মন্ত্র কেজে মাতা কামিখ্যার রৱে। ইল কহি বিদায় হইল যোগে**খ**র। পৌছে গিয়া **মদন লয়েছে মন্তবর**।। ্মারে যেই মন্ত্র দিয়া গোলেম পোগান্তি। াহাই লয়েছে ভূত্য অন্যালয় নাই। ।ইরপে রাজ্যপালি হরিম অন্তর। দেব বাসে দুঃখ সংখ শুন অতঃপ্র : সদরে আছিল এক পক্ষিজাতিযর।। হুন্দরী রাণীর প্রিয় নাম মনোহর। ।। অতি চমৎকার পঞ্চী কেখিয়াছ রায় : সর্বদা রাণীরে ভোষে রসের কথায় । ৈবগতি সেই পক্ষী মৈল আচ্দিতে। নেথি শোকাকুলে গ্ৰাণী লাগিল কান্দিতে। ওনিয়া অন্দরে আদি ঘাইয়া আপনি। প্রবোধ কারণে বহু কহি প্রিয়বাণী।। পক্ষের নিমিত্তে এত করহ ক্রন্দন। . ' रह এरेज्ञान नकी जानि এरेकन ॥ :-

রাণী কচে ছিল পক্ষী প্রাণের সমান : পক্ষী হেতু এইক্ষণে ত্যজিব পরাণ।। মোর সঙ্গে কথা কৃছি বদ্যুপি মরিত। ততে মোর মনমধ্যে দুঃখ না থাকিত।। শুনি কহিলাম প্রিয়ে শুনহ বচন: যদি কথা কহে পক্ষী রাথহ জীবন । ক্ষণেক কহিয়া কথা তথনি মরিবে। প্ৰনি কহে তাহে মম দুঃখ না হইবে ।। প্রিয়া প্রিয় হেতু মন্ত্র পরীক্ষা কারণ : পালক আনায়ে এক কবিয়া শয়ন ৷ নিজ দেছ তাজি প্রাণ পক্ষী দেহে গিয়া माँट इति जिल्लाम स्मानी दलिया। সেইকালে তথা ভুত্য মদন আছিল। নিজ দেহ রাখি মন দেহে প্রবেশিল। ততক্ষণে উঠিয়া বসিল নৃপাসনে। পক্ষী হয়ে ভাবি আমি বিষাদিত মনে।। **प्रिक्षा क्रुक्ति होती दिल हम**श्कात। কারণ জানিয়া কান্দে করি হাহাকার।। অনেক প্রবোধে তারে করি নিবারণ। कहिलाम এई कथा ताथ मर्गाभन।

যদি মোরে চাছু তবে বাক্ত না করিবে। कर्त्या (यहें हिन रुल क्यारिक रुहेर्द ॥ িধির নির্বন্ধ যাহ। হইবে শটন। কে পারে কাছার **শক্তি করিতে খওন**।. ार प्लार्य हर्टला हेडा अधित्व निम्छ। িত করি উপার দেখি কহি সমুদয়।। নাদ **যাহ। কহি তাহা রেরায় ক**রহ। ভুত্য **মদনের দে**ল গাড়িয়া রাধহ :: ংশিতে মদন অল্য অন্দরে আসিবে। ক প্ৰীক্ত করিতেছি তাহারে **ক**হিবে।। বিশ্বতি দিবস আছে নিয়ম তাহার' ত্রত সাক্ষ হৈলে এসো অন্দরে আমার। ইতা কহি মদনেরে ভাজিসা রাখিনে। নিঃমিত দিন মধ্যে আমারে পাইবে॥ আমার-পদেতে যেই স্কুবর্ জিঞ্জির। ররায় কাটিয়া দেহ প্রাণ নহে ছির।। এখনি আমার দুউ ব্ধিবে জীবন। শুনি রাণী শিকল কাটিল তভক্ষণ।। भिक्नार्क शटम तटह अर्क इटह मीट्ड । দাসীরে করিয়া জাজ্ঞা ভূত্য কেই শাভে

কান্দে কছে প্রাণেশ্র 📸ন নিবেদন। নিয়মিত দিন অন্তে ত্যজিব জীবন।। অথবা মনুমরাজা করে আকর্ষণ। ভোষারে বিদায় দিব জীবনে জীবন ।। अमिरकं मनन कृष्ठा छ। वि मरन मरेन। রাজারে বধিব আমি বুঝি এ কেমনে।। পক্ষীরে করিলে বধ হয় নিঃশৎসয়। প্রজারে পালিব আমি নাম্ছি কোন ভঃ রাণীরে লইয়া দিন স্থাথে কাটাইব। পক্ষীরে আনিয়ে আমি এক্ষণে ধরিব।। আনিতে করিল আজ্ঞা হইতে জন্দর। ইহা শুনি যায় তবে দুত অনন্তর॥ এইরপ দোহে কথা কহিতে আছিল। मानी आनि करह ताला शकीरत हाहिल দুত এক পাঠাইল আছে দরোজায়। কিবা আজা হয় কহ কি কহিব তায়। শুনি কহিলেন গিয়া জানাও রাজায় পক্ষীর সহিত রাণী আছেন কথায়॥ শুনি দাসী দূত প্রতি কহিল তথম। দুত গিয়া ছানাইল যথায় রাজন ॥

এতবলি নরপতি ক্রোধান্বিত হৈয়া। বাণীরে চাহিল পক্ষী অন্দরেতে গিয়া ॥ य्दक मृश्यानल क्टल अधिकांख मु**ः**ट्य : খনমে চাহিয়া রাণী কহে মান মুখে !! প্ৰতী সতে কহি অ্মি কথে।পক্ষন। भएनक विलघ यपि ना माह हाजन है তেমোরিত পক্ষী কটে যাও তুমি লয়ে ' शटिं हिन माँ ए एक ज़िन किनारेटा " শিক্স আছিল খণ্ড পক্ষী উড়ি গেল! েথিয়া মদন অতি দুঃখিত হইল।। পক্ষী ऋলে রাণী কাঁদে অন্ধ আছাড়িয়া। তবে নরপতি সিৎহাসনে বদে গিয়া॥ কহিল দুতেরে দেহ নগরে ঘোষন। আমার রাজ্যেতে ব্যাধ আহে যত জনা । नानाक्रश शकी त्यादत धति व्यानि प्रिट्य মম মনোনীত হলে, বহু মূল্য পাৰে।।

জ্ঞানমোহনের পক্ষীরূপে বীরবাছ রাজার সভায় স্থিতি।

প্রা। শুল ওছে ব্যাধপুত্র, মম নিব্ররন। প্রহিংসক আমি মোনে ভিংস কি কারণ।। পদিয়া।

> আজ্ঞাত দিল দূত নগরে বৈশিশ।। ভানি পক্ষ বিপক্ষ বাইল কত জনা।। रछ शकी धति जानि निल नत्रवर्त। ম্প লয়ে ফেলে ভপ্ত স্থাতের উপরে।। মৌনভাবে আছি আমি বকুল হুক্লেতে আঠকেঠি লৈয়া ব্যাহ দিলেক পাখাতে ব্যাব হত্তে পড়ি তবে কহিনু তাহাতে। অহিৎসক আমি কেন হিৎসহ আমারে বলধ কহে এই মম জাতীয়ের ধর্ম। जीविका इंटाट गम माहिक जशका কোমারে লইয়া দিব এখনি রাজারে। বছধনে পরিতোষ করিবে আমারে॥ শুনি কহিলাম, মোরে না দেহ রাজায় লোমে চল বছধন নেয়াব ভোষার ॥

মুলতান মগরে বীরবাত্ হপকরে। মোরে দেহ বস্থান দিবেন ভোমারে। গক্ষী মুখে এত হাক্য শুনি ব্যাহ যুড বিখাস করিল মনে। মানিয়া আন্তুত। ভাবিল যদ্যপি সেই লাহি দেয় ধন। বাজকরে পুন আদি কবিব অপ্র।। ভেবে বাথি লয়ে গেল মূলতান নগতে -যথা নরপতি হাল কিং হাস্বেপিতে । মতি চমংকার পক্ষী বেধি সপ্রর। শিংহাসন তাজি এল ব্যাহের গোচর: त'का करक शकी मुना कर गाँउ का है। ত্ৰি কহিলাম সূপে করি নমস্কার।। মহদেক মুদ্রা দিয়া রাখহ আয়ার। মান) হৈতে উপকাৰ হইবেক হায়।। কথা গুনি আকৰ্ষ্য মানিয়া নূপৰর। াখিল আনিয়া এক স্থবর্ণ পিঞ্চর।। ্ন দিয়া ব্যাধ স্ততে করিল বিদায়। ায়ক্ত করিল দাস আমার সেবায়।। ্রিদা রাথয়ে রাজা আপন গোচরে। াজসভা কালে রা**থে[†] রাজ তক্তোপরে** ॥

উপস্থিত হইবা মাত্রেতে দরকার : 🖰 শুকালের করি দেয় করিয়া বিচার 🖟 বাদী প্রতিবাদী মনে জামি আপ্নার। মম জয় স্কলেতে ঘৌতে জনিবার। দিহারেতে স্থান্ন পক্ষী মধ্যে পক্ষণাত। ब्रेंग्टर ब्रोडिंग वस् ताकांगन देस्न छन्छ। खन्कित कम अप् अम उन वर् (ছতায় মন্দ চাজা প্রায়েশ অন্নতা ীঠিতে করেন বাঞা শালত উপলে। । एकि केन **(ब**ाराङ्क द्वानी, न्टक मदगारत । राष्ट्र वह सहाताज अन निरूप्त हरा। इ.क. १४%। खरिबाद कर कि काइन। গ্রহনিশা হৈতে মোরে না কর গ্রহা। **एटन जग दिहान किया मग्रापन दर्भ ।।** কালী পূজা ত্রত এক আছুটো সামার। বিশ্পতি দিবস হয় নিয়ম ত'হার :-কালি নিবেদন আমি করেছি তোমাণে পুনঃ আজি কি কারণে আইলে অন্ত বিংশতি দিবস রাত্তে কালী আরাহিং কহিয়াছি পুরুষের মুখ না হেরিব।।

াই যের কানেকে আনে রাজের কাটেটের ।

() জিব কানিকোঁ লৈ নানি মেরাসেনে ।

নিন্দ কানেকেই মান নিকটেই ছোনার ।

১ নিয়া কানে রাজে, পার্কল জাকিবে ।

১ নিয়া কানে রাজে, পার্কল জাকিবে ।

১ নিয়া কানে রাজিলোক কানিয়া কানে ।

১ বার্কির রাশ মানি নিজ্য কানিয়া কান ।

১ বার্কির রাশ মানি নিজ্য কানিয়া কান ।

১ বার্কির রাশ মানি নিজ্য কানিয়া

ज्ञानस्थाहरमत शंकी करण विष्ठात ७ व्यक्तहोडा स्वभारत विश्वतः

ালিদী ভৈদ্ৰী, তাৰ জলদ তেতাৰ: "

দিবা অবদান হয় কথন পাৰ ভারে।
নিলিতে পাইলে দেখা নহৈছে। দ্বেধরে।
নীর মধ্যে বাস মেরি অংশি ভাসে নীরে।
তারে না হেরে অনল স্থলিছে সম্বরে।।

जिभंगी।

এইরূপে নুলভাবে, থাকি রাজ সন্নিধানে কৌশুক শুন্ত ভাৰত ভাৰত যদোর মগ্রে ঘর. সুমোমন্ত সদ্ধি যার সাপু বাণিজ্যের তরে । সক্তে দ্বাদশ ভরি, সাছি যায় গোদ্বিট डिथरीठ श्ट्या १५ नाइने। বিশ্রাম বাসনা লকে, নগত দেখিব আলে আহাত বাধাত তত্তি লাটে। ভরি হৈত মদাশার, দেখে অপুর নগ স্তুবে হিড জট্রালিক(ময়। প্রাসাদ মন্দির কত. সেপ্তে সাগু শত শ मर्था भर्धा कठ रमनाक्ष ।। রাজপুর নির্ধিয়া, আম-বাসিরে ডাক্টি জিজাদা করয়ে সাধুত্বত। ঐ যে বিচিত্রালয়, অতি উচ্চ দৃশ্য হং. কারপুরী এয়ত অদুত॥ ভার পার্থে ফ্রনাইর, কার ও পুরী স্কর, मटनाइत चकी यात्र प्राटत।

्याहिनी क्रार्थिए धना।, जुन्त्वीव अध्येशाः। কেবা কন্যা অট্টালিকোপরে। क्ति समास्त्र रूडि. जिल्लाहमा अक्सूजी, cमिश काँथि काँद्रियट भद्रगा · ি গ্রাম্বাদী কর, না জানহ মহাশাং, कि छित्य कराम खर्गा। ্ৰনুক্ত নৃথ্যৱঃ 🛒 এই বাজেন বাজেনাছর. ভার পুরী দেখহ সাক্ষাত : भारत है हमा वया सकतीता विभागता, यात माम किलिए विश्वाप्त ।। আসি কত স্পাবর, সিমা লাক ভ্রমা করে, मत्रमान आरम थाएक प्रारत। १७ ५ ना। प्रथ घाँद्र, लक्ष्महोत्रा बाब धट्त. আছে অট্রালিকার উপরে ॥ নিশি বঞ্চিবারে চাও, লক্ষ তস্তা সঞ্চে লও. দেখ ছারে হণ্টার নিশান : লাদী লয়ে থাবে.সজে, ত্যিবেক রতি রক্তে. **होता वह कतिएव मग्राम**॥ তিনি সাধু কুতৃহলে, ব্যক্ত করি সবে বলে; যাব অদ্য হীরার বাসরে।

(30)

এই কথা পরস্পারে, হীরা শুনে তদন্তরে, কহে পূর্বানন্দ নরবরে। হীরার গোপন পতি, পুর্বানন্দ নরপতি, হীরা প্রতি করিল স্বরস। লক্ষতন্ধা দিবে যেই, সে নিশি বঞ্চিবে সেই. তাৰে ভুগ নহেন বিরম।। তবে খীর৷ আসি গুছে. বাসর শয্যার রহে. নৌকেপার হেরে নিশিনাথ। देनर भंडि निक्ति एन, अन दिवस्य यन, যান যান হয় বছাখাত দ र्चेन अना थात्र. क्हि नाहि एए कात्र, সদাগর যাইতে নারিল। ज्ञभ ভावि मटन, अधिया देश्या मृत्रत, ্ শয়নেতে নিদ্রা আকর্ষিল।। ি স্বশ্বেতে হীরার দক্ষে, রতি,রস ভুঞ্জৈ রজে, নিদ্র। ভক্তে প্রভাতে উঠিল। ্মিনে ছিল যে জ্রাবেশ, স্বপ্নাবেশে হৈল শেব, मिदिर्भव मेर्वादत कंश्लि॥ की भारतिए कतिया मन, ब्राधियाहि एक धन,

পুণ্যার্থে করিব বিতরণ।

नगरत एन पायमं, आईरम मीन मृश्यी करा, লক্ষ তঙ্কা দিব এইক্ষণে ৷৷ শুনি তবে ভূত্যগণ, জানাইয়া বিবরণ, নগরে নিশান দিল ভক্ষা वारम यह पृथ्वी जन, माधु किल विचान, लक् जर्म मिलं लक् उहा ॥ ভানরা হীরা নৈরাশে, জানায় রাজার পাশে, অতি রোবে আদাশ করিল। দদাপর মাের সঙ্কে, ব্রপ্পেরম রক্তে, মোর লক্ষ তহা নাহি দিল।। বেশ্যা-বশে হপবর, ডাকাইল সদাগর, माधु व्यक्ति कदिश रन्तर। লক্ষহীরাক্র ঘাহা, সাধু মান্য করে তাহা, ভনি এত বিষয় রাজন : मान करण उन जुला; चाल प्राप्त प्रजूल, ्रेड्रेट्य शीटा मूज। खागा रसः। ভাষ **ধর্মজবতার,** তর অহে স্থবিসার_ই আজ্ঞা হৈলে দিব মহাশয়॥ সদাগর বাক্য শুনি, চিন্তাকুল ছপ্মা

মনে ভাবে করি কি উপায়।

মিখ্যা সম নাহি পাপ, সত্যে হীরা পায় তাণ মোর দুই পক্ষ হলো দায়।। क्षिशिष्टि भूलजाटन, वीत्रवास महिशादन, शकी सूक कराय विहात তথা পত্ৰ অনুসারে, পাঠাইব যে নোহাতে **ेरे युक्ति किल मारतामात** ॥ এড চিত্তি ডতক্ষণ, লিখি সব বিবরণ, उामी श्रीखिवामी भागाहेल। ম্পতির ভারাপ্রে, সূত লয়ে দুই জনে, मुल्ठारम आमि উত্তরিল।। রাজ-সভার- পৌছিয়া, রাজকরে পত্র দিয়া, নত হয়ে কহে সমাচার। শুনিয়া অপিতি পত্র, স্কুগোচর সর্ক্ত অর্থ, महा विखा चरिल जवात। (पेथि कहिलांग जरत, क्वन हिन्छ। कत मरत, ্র্থক তোড়া মুদ্রাভূপ, লক্ষ মুদ্রার সরপ, সমাগ্যের আন এক প্রমাণ দর্পণ। ্রত ত্রনি নরপতি, আনাইল শী এণতি, তবে करि माधुद्र मन्द्रता।

মুদ্রা তোড়া লহ মাথে, দাঁড়াও হীরার সাথে, मर्भन अर्थाए मुझे करन ॥ কহিলাম হীর। প্রতি, স্বপ্নে সাধু ভুঞ্জে রতি, প্রাণ্য বটে ভোমার বেতন দেখি দপণ ভিতরে, তক্ষা সাধু শিরোপারে, তুলি সহ জানিয়া আপন॥ शीता करह महासब, प्रश्ति व एसा हब, ঐ মুদ্রা লইব কেমনে। পুনঃ কহি তল কাছে, স্বপ্নে রতি ভুঞ্জিলাছে, मुमा आर्फ लहना पर्शात তবে কহি নরবরে, ছাড়ি দেও সদাগরে. বেশ্যার উচিত দেহ দও। যেন আর বিদেশীরে, পুনঃ না ফেলায় কেরে, कौतात सूड़ारा पिछ सूछ।। দেখি শুনি সভাজন, বাজানই করিবার কভক্ষ সন্ধান, লক্ষ্যীর অপমান म ७ मिश्रो विश्विमाट, छाल मिश्रो मनीदर्द, রাজ্যের বাহির করি দিল।

4

ধন্যবাদ দেয় সবে, সভাগণ কহৈ ত্বে পক্ষী ক্ষম বিচার করিল

জ্ঞানমে হিনের অপ্রিক্তর কালী তব এবং বরপ্রাপ্তি।

প্রা। কোথা মা কভর দারিনী। কালিত তনতে তাকে রক্ষ রক্ষ দাক্ষায়নী।। কাল্ডেডে চাক্ছি কভ, সেন মা ছেঁওড় ছেলের মত, হে ম ছেলের ছবে মারে এড, দেখে বল কাব জননী। তারা চাহে তারাপার বে গলেতে মোক্শদ, ওবা করিছে বধ, হর হ্বদ বিহাহিনী।।

शाना ।

এইরপে লক্ষহীরা হচ্চে অপমান। র**্লাটেতে উপ**নীত হপতির স্থান॥ নিজ বিবরণ সব হপে জানাইল। বিচার শুনিয়া ভূপ আশুর্ব্য মানিল॥

ভাবে মনে কিবা স্থম করেছে বিচার। পক্ষীর যেমত গুণ লাগে চমৎকার ॥ হীরা কছে সেই পক্ষ আনি দেহ মোরে। নহেত ত্যান্ধব প্রাণ তোমার গোচরে !! ম্ম প্রতি তব প্রীতি থাকে নূপবর। ্বমতে পারহ পক্ষী আনহ সম্বর।। প্রখনিবার শত্রিনা হয় রাজন। ক্ষ অস্ত্ৰাঘাতে প্ৰান ত্যজি এইকণ !! ন্যক্লা ভাৱে বীরবাত থাকিতে জীবন। কদাচ না দিবে সেই পঞ্চী স্থলক্ষণ।। নং আনিলে হীরা কাছে না রহে সভ্রম। বনি নের ছাল, নুহে করিব বিক্রম।। এত ভাবি পুনানন্দ সমৈন্যে সাঙ্গিয়া। চতুরতে মুলতানে উত্তরিল গিয়া।। প্রথমে লিখিল পত্র মূলতাম ঈশ্বরেট তব পক্ষী বাঞ্চা করি দেহ পক্ষী মোরেটা নচেৎ স**ৈনে**য় আসি কর**হ স্**যর। निधि मूछ ५एस मिन उपनारे ब्रेश्द ॥ দূত্র গিয়া পত্র দিয়া **করে** নরবরে। ওনি বীরবাহ রাজা সাজিল সমরে॥

হেন পক্ষী চাহে মোরে সহে কার প্রা मरेमरना माङ्गिः। এन निश्रकत चारनः महार्याद गुम्न रेट्न मा गांग्र निथम। দোহার পশিল দেনা কে করে গ্রা তগ্লৈনং হৈল বীরবাভ্র্পবর। দেখিয়া কৰিলু আমি হইয়া কাতব 🕡 🥫 মোর তেওু কেন প্রাণ হারাও রাজন। মোরে বিমা কর এবে ছন্দ্র নিবারণ।। ওমি বীরবাহু রাজা কান্দিয়া কান্ডিলা। दिशक्करत मिल शकी मध्यत कामिया পূর্বানন্দ নরপতি পাইয়া আমারে। অবিলয়ে সমর্পিল লক্ষ্ণীরা করে।। লক্ষহীরা বেশন করে কালী আর্থেনা: পাবানে নির্মাণ মূর্ত্তি করিয়া স্থাপন।।। বেশ্যা মােরে পেয়ে অভি কোপানলৈ আ বিচার করেছ ভাল মোর প্রতি বলে।। এখনি তোমার আমি করি দরবার। কালিকারে বলি দিয়া শিখাব বিচার। এত বলি পাখা সব ছিড়িয়া ফেব্রিন। সংশয় করিয়া ওঠে জীবন রাখিল।।

नामीदत रामिन राम मा नाम मार्डिं। दत . স্থান করি আসি শীঘ্র পুজি কালিকারে 🖰 बाखा शास्त्र मामी (भारत बाव्हिन तहिन ততক্ষণে তার এক উপ**পতি আই**ল।। প্রকাৎ করিয়ে দাসী কথার মগন। . रहेक्टल विनम्दन इरेश लाभन । कर्वक विलक्ष के भी द्यारत मा दिशा ! ক্রয় করি আনে পক্ষী বিতাদ ভাবিয়া।। আনি সেই পক্ষী পাখা ছিড়িয়া সকল। সেই রূপ করিয়া রাখিল সেই ছল।। অ'সি হীরা করে তবে পুলা কালিকার। शकी दनि मिश्रा वर्रन कत्रह विघात ।। তবে লক্ষহীরা নিত্য বোড়শোপ্লচারে। নানা উপুহার দিয়া পুজে কালিকারে ।। शृक्षाटल एवं यात्र **अभिनित्**त् मात्र निश्चा। लोनन शांतन कति शाम वैरिया ॥ বাতনায় প্রাণ যায় সংশার জীবন। মার কোলে বসি করি মায়ের স্তুদ कुरनंत्र काश्मिनी कानी रेकदना " क्ल शैरन कूलर प्रिंह कूल र

স্ফুলে পড়েছি মাতা নাহি কুলকুল। करांन वर्षमी कानी इंड अमुबान ॥ णकुरन मकुन एतश कान भिवातिनी : शकी-कुरल मुख कत जिम्हाधाहिनी " কিধিংৎ করুণা করি কাতর কিছার। কাদ্যিনী রূপাছিতা তেজহ কুমানে 🕮 স্তৃতি শুনি মহাকালী অত্তরীকে কন্ অবিলয়ে নিজ দেহ পাৰে বাছারন । তথাপিও বর আনি দিলাম তোগারে श्वास्त्रती जाटक स्वहे शरमत जिल्लिस युनिएन सबुका भएन मिटन भारी करत এত কহি মীরব হইল যাতা তবে।। धरे तरभ धर शक अहि निज्नत्ते। थूनकीत शांशांडेटर्र शाहेनू कतरल ॥ । পুস্কালে ব্যুক্তাকো কহিন্ন হীরায়। সুন হীরা তুউ ভুনি তে'মার সেবায় ৷ ৰ্পতে ভোষার পুরী করার নিমাণ। বাছা মোর সক্ষে চল নিজ স্থান 'কিতে বাছা স্বৰ্গ নাহি হয়। ে ব্যয় বটিকানারয়॥

শুনি হীর। যোড়হাতে প্রণনিয়া নার। ভাবে গদগদ হয়ে ধরবী লোটায়।। ভাবে মনে কালী গোরে হৈলা অ**ধিষ্ঠান**। प्रशास एवं ज्लि **मिल, मीन शीरन मान** ॥ িব। ধন অভরণ কন্ত্র অলঙ্কার। ধ্যণ করিল ব্যয় কিছু শাহি আর ।। শ্র ঘোড়ে আসি জানাইল কালিকারে। ্রান পুনরপি আমি কহিলাম তারে॥ ্ৰ দেখ রথ আইদে লইতে ভোষায়। গান লক্ষ্রা বেশ্যা উদ্ধানুখে চার।। তথ্য উড়িয়া আমি ঐ অবসরে। ্রিতে লাগিত্বসি অট্টালিকোপরে।। ि प्रथंक लक्षकीत। यादन वर्षधीत । লথীছাড়া **হলে ইবে রহ লক্ষের**ী॥ नामि तारे शकी विनाम निक स्ता এতবলি চিত্রপুরে করির **প্রতাম**।।

জ্ঞানবোহনের স্বদেশ প্রাপ্তি এবং মদন রাজার ছাগ রূপ।

বিকিট। তাল জলদ তেতালা।

পুলা। নিয়হ অনল শীতন হলো এহদিনে।
আনক দিবস পর, হেরিয়ে মুখ হোসার,
বহিছে আনন্দ নীর, ফামার নয়নে ঃ মুদ্ধার্ত লা ছিল নাও ভোষার পাইন, মুখ নিছু
ছতে পুনং হলেতে আদিব, গ্রিনা অনুকল বিধি,
কোপান মিলায়ে শিধি, স্বালীনেই স্থানন
ভাইবে কে কামেঃ

शंभा

নিয়মিত দিন গত হইল সর্বারী।

চিত্রপুরে উপশীত যথা রাজপুরী।

বিশ্বতি দিবস রাত্রে রাণীর অন্ধরে।

প্রবেশ করিয়া বসি স্থন্দরীর করে।

কহিলাম কহ প্রিয় কুশল তোমার।
ভান স্বিশ্বে জানাইল স্মাচার।

প্রেক হি রাণী মোরে করছ গোপন। মূত ছাগা তুরা এক কর আহরণ ॥ দাগা কোলে করি পাড়ি কান্দ উচ্চধনি। শ্রনিয়া মদন রাজা আসিবে এখনি।। শুলা**লে কহিবে তা**র প্রতি করি **ছল।** ছাগ মৈল কালী জ্ঞানা হল সফল। ^{্নবি}শতি রাত্রে পুলি কালিকারে⊥ু িবেদিয়া রাখিয়াতি এইত ছাগেরে । এল এত মাক হবে ছাড়ি শিব অলা। ্ৰত হাগ মৈল মদ না হৈতে পূজা॥ ুলঃ ব্রত সাজি হবে বিংশতি বাসরে। ন। করি**লে অমকল** ছবে মরবরে॥ ওনি রাণী প্রিয়ত্যা দায়ীরে ডাকিয়া। ৪ত ছাগ আইনাইল দশ মুতা দিয়া॥ . শক্ষী সংগোপন করি ছাগ লয়ে কোলে। ভূমে পড়ি কান্দে রাণী অতি উচ্চরোলে।। পেখি দা<mark>সী জানাইল যথা</mark>য় রাজন। গুনি স্বসত্ত্বরে আসি জিব্রুাসে মূদন ॥ 🛒 কেন প্রিয়া ছাগ কোলে কান্দ কি কারণ। ... তনি রাণী কা**ন্দি কহে** সব বিবরণ॥

(22)

কান্দিতে কান্দিতে কৰে আধ আধ ক বিংগতি দিল্য অদ্য না দেখি তোমা পুনঃ হেন ভাত করি কোন প্রয়োজন। ন। ক্রিলে অন্জল হউবে রাজন।। ভাতপুর অ্চি হার **ত্রত না করিব।** বিদ্যাং হইনু অদ্য জীবন ত্যজিব। গুলিয়া মদন কৰে শুন প্ৰাণপ্ৰিয়া। এখনি এছগৈ লামি দিব বাঁচাইয়া॥ ওত সাফ কর ইমি নিবেশিয়া মায়। হার পারে মারে ব্রভা**সাস হতে তা**য়ে।। রাণী বলে পরে মরে তাহে নাহি দায় পূজা করি মাত্র নিধেনিব কা**লিকা**য়।। শুনিয়া মদন শুয়ে পালফ উপরে। নেছ ত্যজি যায় প্ৰাণ মৃত ছাগা ২৮ে 🗉 পক্ষী দেহে শ্ৰীজ্ঞানমোহন তথা ছিল পক্ষী দেহ ত্যজি নিজ দেহে প্রবেশিল পালত হইতে উঠি আনন্দিত মনে। পক্ষী ক্ষেত্র গাড়িয়া ফেলিল ততকণে ৷৷ " পক্ষী পদে ছিল সেই স্থবৰ্ণ জিঞ্জির। अनु ही मस्कि भूगि बाबिटलम शीत ॥

ত্ত্রহন্তে ছাগেরে রাখে করিয়া বন্ধন। तानी मह स्थाकिएड माट्ड निमधने ॥ भाग प्र**ाह् विशामित्र अ**हिन शहन । ত্রিৎসতে হিৎমী ফল লবে ততক্ষণ !! পর্মাত করি তবে রাজ্যের পালম। •লানার শাসনে পুনঃ স্থী প্রজ,গণ। এর দিশ রাধী মোরে পাইয়া নির্ক্তনে। **্কান্তে জিজ্ঞানে** খতি সমুৱ বংমে।। তহ নাথ পঞ্চী দেহে কি রূপ যঞ্জিলে। ান কোন রাজ্য কোন কৌতুক দেখিলে। প্রনিয়া **কহিনু অনে**দ্যাপাত্ত বিবরণ। াসিয়া সুন্দরী কছে আন্তর্য্য কথন।। ্বশ্যালয়ে বরপ্রাপ্ত কালিকা সদয়। খ**সন্তব বোধে মন** দুশ্য বাঞ্চা হয় ॥ व्यानि एम् अवीक्तु श्री उस शरम निर। को जुक (प्रशिव्या करन मन्द्रा करित ॥ শুনি কহিলাম প্রিয়ে ত্যজ অভিযান। পক্ষী দেহ যাতনায় সশস্কিত প্ৰাণ !! श्री नामग्रद्ध ब्रट्ट व्यक्ति पृथ्य छटत । দেখি স্বৰ্ণান্ধু হী আনি দিয় তার করে॥

অসুরী দিলেন পরাকুলেতে আমার। মেই রূপ পক্ষী হইলাম পুনর্বার ॥ আচ্মিতে ন্ৰাগনে হইল স্কুণ। রাণীর করেতে বসি ভাবি মনে মন ॥ বিষয় মদেতে মত রহিন্ন হেথায়। হায় প্রিয় সংখ্যাণ এইিলে কোথায় 🗥 এমত বিষয়ে মম **ন**∖হি প্রয়োজন। পক্ষী দেহে বহুদেশ করিব ভ্রমন। अरवन भारे यिन भूमः (हरू भाव। নহে এই পক্ষী দেহে পরাব তাজিব । এত ভাবি কর হৈতে উড়ি ওতক্ষণ। বহু দেশ দেশতির করিয়া ভ্রমণ।। হেখার আসিয়া তব পাই দ্রশন। **७नि और्म श्रुविक क्रिमराम्म ।** হায় স্থা আমা লাগি বহু দুঃখ পেলে মম লাগি রাজ্য রাজকন্যারে ত্যাজিলে :: কি দান করিব স্থা নাহি অন্য ধন। যে আছিল মন প্রাণ করেছি অর্পণ।। এতবলি-পুনঃ পুনঃ আলিখন করে। প্রেমানকে অনিবার দোহা আধি করে । তবে তিন জনে চলে হর্ষিত হৈয়।
সরস্বতীপুর মধ্যে উত্তরিল গিয়া।
দিবাকর অন্ত গেল নিশী আগমন
তথা শিশ্পী গৃহ মধ্যে সহে তিন জন।
নিনে দিন গাত দিন দিন অবসান।
শইরূপে প্রফল কইল তিনজন।

अगरमाइन मर्थात तिरत्रः

আলো বৈদ্য গুণমণি।

আপনার চিকিৎসক হইয়া আপদি।।

গঙা হবে যেই নারী, সহস্র ঝারার বারি,

মানিলে শুশুবাহা হবি হইবে এখনি।।

PIW:

ওণকর কয় সর্কেশ্বর গুন সার।
তান্য স্থাগণের ঘটন চম্বকার।
ভান স্থা শ্রীগুণুমোইন নাম যার।
তেউবলে কাঠ খণ্ড ছাজিল তা্যার॥

অ প্রার বিহীন হয়ে ভাসি যায় জলে -ভরাও ভারিণী বলি কা**ন্সয়ে বি**কলে 🗈 (य क्रम कामरश खार्टर कि निका हरू। কি ভয় তাঙ্গার কোথা অকলে মরণ। মণিপুর ধাসী সাগু জয়কেক নাম। বাণিল্য করিরা যায় স্বাপনার ধাম ॥ • আটোরতে ডিকা তার তথায় আইল। ব্যাকুল দেখিয়। গুণুষোহনে তুলিল। প্রমানি দিয়া তার শুক্রাবা করিল। কি নাম বোধায় ধাম তবে জিলাসিক পাত্র পুত্র তারে মাত্র স্বনাম কহিল। कांद्रव मा करि जाना भट्ड प्रवाहित ॥ শুনি অতি ক্ষেত্রে সে সুজন সদাগর। **নিট বাক্যে** ভাষারে ভূবিল বছতর । প্রণয় হইল অতি পাত্র পুত্র সঙ্গ। কিন্তু দুঃখানলে তার দহিতেছে অক্স বেড়িশ বৎসর বয়ঃক্রম পুত্র তার। অতি ক্লেশযুক্ত আছে রহিত আছার 🕡 আলি কিয়া ক'লি মরে হয়েছে এমতি দুঃখিত শেখিয়া ধীর কতে তার প্রতি

কি কারণ খেদিত দেখি হে মহাশ্র। শুনিয়া ক্রন্দন করি সচাগন্ন কয়।। মৰে এক গুক্ত মম তাহার বিতথা। অৰুপ্ৰায় ব্যাধি তার জিল্ডাস কি কথা।। পাত্র পুত্র কলে কোথা তোমার ভনঃ। সৰ্গার বলে এই তন্তি মধ্যে রয়॥ শুনি পাত্রগুত্র ভারে দেখিতে চাহিল: ভিকা মধ্যে এক গুড়ে লয়ে দেখাইল। শিরীকণ করি ভার নাছী বিচারিয়া। <u>जिछ परमाञ्च करक् विसन्न कतिया ॥</u> খতি ঘোর ব্যাহি কিন্তু করিনে উপায়। যুক্ত বা হইতে পারে ইশ্বর রূপার।। छनि मन्। गद कट्ट कित्र । दिन्य । ক্রপা করি প্রতিকার কর যাহ। হয়। প্রয়েক্তর মুক্ত রব্য ডিকার আছিল। ঐবধ করিয়া তবে তারে ধাওয়াইল।। िन निद्रन का शिमुक इहेशा छाहात । দিন দিন আরোগ্যতে বাড়িল আহার ॥ ক্রমে ক্রমে তাহার হইল কান্তিপুট। আৰুৰ্ব্য মানিয়া সদাগর অতি তৃষ্ট।।

328

বৰু ধন আনি ভার আগ্রেতে ধরিল। ' হাসি কিছু এছণ তাহার না করিল 🗈 ভদ্রকৈত্ব নাম সদাগরের নন্দন। ভার মহ করিলেন মিজতা বস্ত্রন 🖟 भार्कीका मिन्नका कनाभाद मिथि छाउ । क्टर केन्नु **अधिएन नाहिक जन ध**्रिल मशा कति जाशिक निरुत्तम शुक्त मान । যাবহ বাঁচিৰ গাব তৰ গুণগাৰ ৷ আর এক নিভুতে করিয়ে নিবেদন ' করিবেন যদ্যপি করিতে হয় মন। চ দুর্ং সারাজ্য মনিপুর অবিকারী। ভাহার কনা'র ত্যানি হইচাছে ভারি দ অবাপনি নেখেন যদি কহিব রাজারে। জীওণগোহন করে দেখিব ভাষারে।। মনে ভাবে সেই কন্যা সধার প্রিয়সী। দেখি সংগ উদ্দেশ বা পাই তথা বসি 🖟 ভাল ভাল সাধু সতে মিলন ছইল। रृतिः कुछनिमौ कुल इन अहकूनना বৈদ্য চিহ্ন দেও পাত্র পুত্র মতিয়াব। উত্য **ঔষধি কিছু** করিল নি শ্রাণ।। " 💞

ক্রেকে ক্রেকে গিয়া উত্তরিল মনিপুরে ১ যাটে তরি রাখি তটে উঠে স্থসভৱে॥ রাজার নি**কটে** গেল সদাগার সঙ্গে। তথা গিয়া হাজারে বন্দিল দৌহে রজে।। কন্যাৰ দুংহেতে রাজা অভ্যন্ত ক(ভর॥ কতাঞ্জলি হইয়া কৰিছে সদাগর গ পুন মহারাজ আমি বাণিজে:তে মিরা। নহারত্ব পাইলাছি মূলা নাহি দিয়া ।। রাজ। বলে কন্যারত্ব বাঁতে ন, আয়ার। হিনা ক। ব্য মহারছে রথা কহ আর । सनाशंत्र दत्न स्टित इ.७ महागद्र। रतन । संश्वेष काना भना वेष भर ।। গুন শুন মহারাজ যে গুণ ইহার। িকিৎস্যুর কন্যা স্কুস্থ করিবে তোমার।। তে বলি নিৰেদিল যত গুণ তার। धनि कटाइ९म मरन मारन कमएकात ॥ ংনে ভাবে যদি মোর কন্যা স্থছ হয়। ত্তে এ বৈদ্য ওণ জানিব নিশ্চয়॥

চিত্রমোহ্ন সংগ্র বিবর্ণ।

र्षः । আয়ুকি শ্বনি দিন স্থান জনে। ভূমিনশ প্রিয়ন্তন প্রিয়ন্তন ।

PHF;

গ্রীগুণ্মাহ্নরূপ পাতি মনোহর : এক দুটো চাহিল্ল **দেখেন দপ্ৰর** । হেনক,লে দ্বার্থী করে প্রাণত হইয়া। এখিওর রাজা দিল ভেট পঠেইয়া।। ভেটের সহিত তার মন্ত্রী আ, সিয়াছে: অচিষ্ঠিতে মুক্তিয়ে ভূমে পড়িয়াছে दल्या दु ८, ज्न म। इहेन टाहातां এতিকার কর ভূপ যে হয় বিকার ii শু নিয়া ভূপতি কছিলেন সদাগরে। আনিয়াছ চিক্ৎিসক পাঠাও সত্তর।। যাহ। শুনিলাম তাহা জানিব এখনি। एके कथा खावन कड़िले देवनामि।। ন। করিতে দদাগর ভাষারে ষতন। রাজমন্ত্রী কাছে তুরা করিল ধমন ॥

ए छि ७ धत्रनी छटल एम रिल या है।।। লার ধরি পাত্র পুত্র ভারে উঠাইয়া।। ्र (नर्थ मानित्वर गत्न हम्रकात । ্রতিত্রযোহন মধা জানি আপনার। ২তে) যথি দিয়া স্কুত তাহারে করিয়া। ্ৰিদতে লাগিল তার কঠেতে থরিয়া।। নম হয়ে জীচিত্রমোহন জানি তারে। ানকে অন্তির বাক্য কহিছেল। পারে। ' রূপের দুই স্থা করি আলিক্ষন ্ত্র জিজানে উভয়ের বিবরণ ॥ ं विजासिक करक अधिति होरह! 😗 শक्ति शीरम मथा याहे भिरत थिरत ॥ াসিম্ছ রাজ। এখিওের অধিপতি। নেদ্র তীরে মুগয়া করেন মহামতি। ा देह**्छ गर्गाणान प्रशि मनान्**गा। িটোসা করিলা পরে দেহ পরিচয়। ামারে দেখি যে অতি সুন্দর আকার। মুদ্রের সলিলে পড়িলে কি প্রকার। ্নাম ডোমার কহ কোথায় নিবাস। ান কহিলাম সম করিয়া প্রকাশ ॥

- পরিচয় শুনি অঙি গৌরব করিয়া। আপনার গৃহে গেল আমারে লইয়া : स्र इंहेलाम मानगर एकशास । বসি নানা ক**র্ম** করি রাজার সভায়॥ সর্ব্দ কর্ণে নিপুণ দেখিয়া নরপতি। কহিলেন ওক্দিন সংগীরবে অতি॥ ঐতিত্রমোহন সর্ক কর্মে পট্ট হও। আমার রাজ্যেতে মন্ত্রী কর্ম্ম লয়ে রও। ম^মএতি তোমারে দিব এহু কার্ব্য ভার . মণিপুরেশ্বর বন্ধু হ্রে**ন আ**মার।; মনোনীত ভেট কিছু পাঠাব ভথায়। তুমি লয়ে যাহ ফিরে জাসিবে জুরায় : धरे (४० ७७ नर्ग रूथा जागमन। স্থান দেখি তোমা মবায় ইইল সারণ।। অতএব অনসান্ধ করিল আয়ারে। চেতন পাইয়া এবে দেখির তোমারে।। আজি সূপ্রভাত নিশা হ**ইল আ**নার। পুনর্কার দেখিলাম বদন তোমার।। প্রিয় স্থা কই আগনার বিবর্ **७नि गर्व निर्दिमिन और्थन्या स्वा**त

শনমুঞ্জার মনমোইনের রূপ চিত্রপটে দর্শন :

রাগিনী ভৈববী তাল জলদ তেতালা।

এই কি তোমার সই ছিলরে মনে।

নাটিয়া যাতমা দিবে জানিনা কেমনে।

হে চিত্র কুনিত্রে নিতে দহিলে কোন।

হে চিত্র করিলে কোঝা পাগ মে জুলে।

মবলা সবলা আভ জানিনা মনে।

ছলেতে ভুলালে তাল সুধাবচনে।

. मीर्चाजभनी :

ভারতবোহন সলে, গ্রাজ্মতা গিয়া রকে, তেট দ্রবা রাজমন্ত্রী দিল। গ্রাপীড়া স্কুছ জানি, মহারাজ স্থ্যানি, বৈদ্য প্রতি শ্রন্ধা উপজিল। বিদ্যা বৈদ্যের প্রতি, চন্দ্রহণ নরপতি, করে কহ কি নাম হোমার। ভারতবাহ্ন কয়, রাজা বলে মত্য হয়, জালেম্রপ নাম মার।

তবে মহারাজ কয়, ওম বৈদ্য মহাশ্য, অতি দৃঃখ জান হ আমার। সবে এক কন্যা ধন্যা, নাহি অন্য পুত্ৰকন্য উলপীড়া ঘটিল তাহার॥ অনেক উপায় তার, করি তবু প্রাতিকার কোন মতে কিছু না কইল . ত্মি যদি দেখ তারে, বুঝি স্কুস্থ হতে পাদে रिल कन्ता काटह शाहाइन । कराह मरीत्र शिक्षा, माजि दिश विषाति । ক্ষেত্র সামান্য পীড়া নহে: মন্মবের জ্বর এই, তাল হয় যদি সেই आणि जान करत त्यहे नरह ॥ শুনি মনোগত বাণী, মনে চমৎকার মানি निद्रिशिया दिएमात दमन। करह धनी छाजि लाज, वर्षे पूर्वि देवमादां ज বুঝিয়াছ হৃদয় কারণ।। হৈদ্য দেখি মুখ তার, মানে অতি চমৎকার পর্য আমন মনে বানী। নুরপ কি গলিড হেম, সুসত্য স্থার প্রেম

ভাবিয়া কহিছে মৃদু হালি ॥

ভুন ভুন ঠাকুরাণী, কহি যে বিশেষ বালী, আজি আমি কিছু म। কহিব। ভব মহৌৰধি যাহা. উপায় করিয়া তাহা, वानि किया शांठाईमां निद ॥ क्षिमनगुक्षती करो, अनि तीका शतिजुरो। ভবে বৈদ্য স্পাথ্যেতে বায়। লেদ শিয়া বৈদ্যবহে, তাসা সদাগর ঘরে, किल्। **ऋट्य म**िश्त दाग्न ॥ पर्शाप्तर माली मान, कहि कथा वर्ध गरन, रैवन्यगटम अक वामा मिल! ्रास्कृ मनाशत, शामि इर्घ वस्ट्र, मुद्दे करन विदेश विना ात्रः जनागत **यद्त, ट्या**क्सानि माति भटर-मूरे मथा द्रयुक्ति क्रिशा। জীমন মোহন রূপ, লেখে চিত্র অপরূপ, চিত্রপটে একাত্তে বসিয়া । িখিল উদ্যান তার, এীমন্দির কালিকার, কুমারের বিচিত্র আবাস। গন দঃখে লিখে তবে, খট্টা হতে পড়ে মধ্যে,

एक मेथा व्यक्ति हाति भाग ॥

নিদ্রা ত্যক্তি সে সর্বরী, চিত্রপট সাক্তরি, জীচিত্রমোহন দেখাইল।

জ্ঞজনমোহনাদেশে এরিয়া বৈদ্যের বেশে চিত্রপট লইয়া চলিল :

গিয়া রাজকন্যা বাদে, কহিল ছারির পাদে: জানি বৈদ্যরাজের প্রেরিড:

রাজকন্যা আছে হথা, জানাও সামার কথা। বিশ ভারে ঔষধি স্বরিত।

(म कटह मधीरत शिक्षा, कनगारत रम जानाहे:

করে বৈদ্য গৃহদ্বারে, বসিল আসনোপারে, গৃহে রাজকন্যা ছাছে বথা।

মনে মনে ভাবে ধনী, কহিলেন বৈদ্যমতি। উপায় করিব ঐবধ্বে।

অন্য মন্ত কেন তবে, পাঠাইল অন্তর্তর বুঝিতার বুঝিবার কের॥

এতেক ভাবি অন্তরে, কহে রক্ষমুঞ্জরীরে লহ স্থী উষধ চাহিয়া।

তবে চাহে সহচরী, করোপরে কর বুড়ি কহে বৈদ্য হস্তে পট দিরা।। ংগে ম**ং**ইং**ধি আছে, দিবে** রাজকন্য। কাছে, পাইবেন খুলি আৰৱণ। ওনি পট দে লইয়া, কন্যায়ে দিলেক গিল, श्रीयनभून छन्ती उठकन।। গুলি তার আবরণ, করি রামা দর্শন, চিত্রপটে নিজ্ঞতিত দোব: ধানার **হইল ভন্ন, ক**্ষেত্রে কাঁপে জন, ধরণীতে প্রে সক্তির ! 'र रल कि इत कति, शिव भयी जुलि शिव, মুখে জলমিধিং শ্বির করে परदीत कहेश शीता, वाश्टित कामिया एटा, थित सम्हे रिवमाङ्गाल करहा ।

(तमप्र कदिया कय, कह कह सर्गाभा কেব। এই পুরুষ রতন। ি ম**েইায়ধি সত্যঃ কেম**নে জানিলে ভথা, আপনি বা হও কোন জন

ক্বা সেই বৈদ্যরাজ, নাজি ধরি হাদিকায়, क्षामित्नम ७ अपि दिखा। ুক লাগে চমৎকার, কছে সবে বারস্থার, ৰৈদ্যবাজ দেহ পরিচয়।।

চিত্রেয়াহনের সহিত মন্মুঞ্জীর कार्थार्थ कथन।

বংগিনী সিশ্বকাপী, তাৰ্ল জনৰ ভেতাল:

😕 🕆 ्कन हक्ष्म विश्वसूधी। आक पूर्व स्वास्ट হিংলার না বেথি লা বে জোমার মনবালি শুন প্রাণ সধী । মানুরে অন্তির করি তাবে कृत का भी भाभिता जिल्ला वर्गा अस्ता दुना লেপি। একের ভূমেখতে দ্বাধী সাধে হয় সৰ্বী

MET:

জিমনমুঞ্জরী রূপ দেখি চমৎকার। ঐচিত্রমোহন মনে করিছে বিচার।। মথার যেথন রূপ কন্যার তেখন। আহ। মরি কিবা বিধাতার সংঘটন। স্থা যাবে চাক্ষা হইবে এ দোহার [•] তথন হাদয় প্রাণ যুড়াবে আমার । এত ভাবি নৌরব করিয়া কহে বালী। एकेंस् द्वहाख किए अन ठोकुदानी ॥

কলিকেতে সুর্সেন মামে নরপতি। ভারপুত্র <u>শ্রীমনমোহন নহামতি।</u> ্ৰপতে মু**ন্ধা**কার বুদ্ধে **বুহ্প**তি : সংস্থিক ক্ষমাশীল ধারিত স্থমতি। লপ নক্ষেত্ৰত হয় প্রিলম্খ। ছয়। * ² জপুতা সহ সংব হ্যুখন রয়: া নগালে শারনো ব্রাপ্ত গোনারে দেখিয়। । গ্রেডনে ছিলেন স্কান বিঞ্জিয়ে ১ ্চামার স্ব্যুপ্ন কর্তা তাহাতে কহিল।। ত্ৰি কথ সন্ধিনে বিদ্যু হইল। ।। ্রাসতে ছিলেন ছেথা গ্রাপ্তা ডিখার। প্রে তরি ভ**ক্তে ঘটিল যোর** দায় ন কোন জন কোথা গেল নিৰ্দ্ধার মা জান শুনি রাজ্যুন্থা কান্দে শিরে কর হানি । েদিন করয়ে রামা করি হায় হায়। ান্ত্ৰা কৰিয়া পুৰত্তহে হে ভাহায় । বিহাদ শা ভাব কিছু ন্তির কর মতি। অবশা পাইবে তুমি মনোনীত পতি ৷৷ সম সংঘটন স্থা হেইল উভয়। অবশ্য পাইবে গাঁৱে ত্যজ্ঞান ভয় ৷৷

দুঃখ কাল গোল প্রায় তুরা পাবে সুখ 'डा क पूर्व जव पूर्ट मर्था भीटित पूर्व · রাজকন্যা বলে তবে এবে কি করিব 🕡 কোন রূপ প্রবোধে চিত্তেরে প্রবোধিং পাত্র পুত্র বলে আমি যাইব উদ্দেশ্য অবশা আনিব স্থা পাই যেই দেশে ! এ। এণ্যোহন স্থা বৈদ্য রূপ সেই। হেখা রহিলেন তিনি যুক্তি মাত্র এই :: ভব পীড়া ছলে নিত্য নিতা আসিবেল যথন যে **স**হাদ ভোমারে কহিবেন ।: ত্রীথতের হুগ অত্যে হাব একবার . रेमरत इनेहां हि करा। मनी आनि छाद জলে ভাসি উঠিলাম শ্রীখণ্ড নগরে . हाकः मह स्वयं यञ्जी कार्या हिला श्रेट्ड আসিয়া ছিলাম হেখা ভেট লয়ে ভার অতএব তথায় যাইব একবার। গতিকার উত্তর করিয়া সমাপন। ত্যাগ করি মন্ত্রী কার্য্য করিব গমন ॥ ্র অত্যেত্র যাব দেশ দেশান্তর। **एनि** त्रांक्कना। करह श्री पृष्टे कृत ॥

শুন সথে ভোমারে কি কর আমি আর প্রাণনাথে আনি প্রাণ বাঁচাও আমার।। এতবলি নিজ হার খুলি গুণবতী। ঐতিব্রেমাহনে দিয়। কহিছে ভারতী । ওম সংখ প্রাণনাংখ দেখিলে বথন। ্ৰ দাদীর চিহ্ন ইতে করিবে অর্পণ ৭ उट ७० कि जात कहि। विट्रतिहा। ৯ ড়িবে আপন কর্মানার লামিয়া । চাত্তিনী <mark>যেন জলধর অন্নেষ্ণে।</mark> ্তমতি রহিনু সামি পথ নিরক্ষণে।। ५८७क विशेषा बामा कान्मिका काछतः । প্রকোধিয়া পাত্রপুত্র চলিলেন তুরা । ত্তু রাথে হার প্রাণ সমান করিছ। গিয়া ভণমোহনে কহিল বিবরিয়া 🖟 এওণমোহন তনি আনন্দ হইল ্ছধা দাসী আসি হপতিরে জানাইন 🖟 कित। भट्टोयिध रिवमा मिटनम कना। । তৃতীয়াৎশ পীড়া দূর করিলেন প্রায়॥ इिंग गर शौड़। क्राय स्ट्रेटक मृतः। গুনি রাজা পাইলেন আনন্দ প্রচুর।।

সদাগর গৃহে দূত পাঠাইয়া দিলা। বৈদ্যরাজ সহ তারে অ'সিতে কহিলা।।

मनद्याहरमत करम्बर्ग हिन्द्रसाहरूमत

হুয়া। জায় প্রাণ সধ্য আর কোথায় পাইন। কে আন কছিয়া দিবে কারে জিডা;সিব। সধার বিচনে প্রাণ নিতান্ত তাজিব। দাঙ্গলে দহিরা দেস দাকে যুড়াইব।

PHT

হেখা চিত্রমোহন কহেন সথা প্রতি।
এই মনিপুরে তুমি থাকহ সংপ্রতি।
শীধও নগচর আমি নৃপাঞ্জানে গিয়া।
সধা অবেষণে যাব বিদায় হইয়া।
সমত হইয়া তারে আলিক্সন দিল।
হেনকালে সদাগর তথায় আইল।।

দৃত গিয়া সদাগরে সংবাদ জানায়। প্রদে তারসনে শেহে চলিল সভায়।। এচিত্রমোহন চলে যক্ত্রী বেশ ধরি। **এওণমোহন যায় বৈদ্য বৈশ ক**রি।। প্র**ংক্তু সদ**্ধির হুর্ম্ **অতিশয়**। ভিনজন হৃপা অরো করিল বিজয়।। বৈদ্য বরে দেখি রাজা অতি সমাদরে 🕮 কহিতে লাগিল অতি এজু**র অন্তরে**॥ _ ধৰণীতে নাহি তব তুল্য গুণবান। কনা। বাচাইলে তুমি দিলে মম প্রাণ । উপকার যোগ্য নহে এই অণপ ধন। অনুথাহ করি ভুমি করহ থাহণ দ **७नि देरमात्राज करह कतिया विनयः**। শাষা প্রতি হেন আজ্ঞা কেন মহাশয় 🛭 তর্<mark>য়হ মাত্র জানি চাহি্যে তোমার।</mark> ধন রত্ন প্রয়োজন নাহিক আমার।। ব্রভুতে গ্রহণ ন হি সে ধন করিল। थम°न्मा क्रिया विकिৎमाम निरम्जिन ॥ শ্রিন্তগমোহন এই রূপেতে রহিল : শীচিত্রযোহন স্বপে বিদায় শাগিল ॥

মজীবরে স্পরির করিয়া বিদায়। বহুবিধ রত্ন রাজা দিলেন তাহায়। পত্রের উত্তর লিখি পাঠায় রাজনে। বিদায় করিল তারে সকৌতুক মনে " প্রতিত্রমোহন গিল প্রাণ্ড নগরে। উপনীত রুণদিৎহ হপ বরাবরে॥ পত্র দিয়া কহিল রাজার কথা সব। তুষ্ট হয়ে নরপতি করিল গৌরব॥ দিন দশ থাকি কণে পাত্ৰ গুল্ল কছে। স্থার বিরহ্ানলে সদা দেহ দহে।। মন্ত্রী কার্য্যভাব অন্যে দেহ নরপতি। স্থা বিনা আমার এশ্বর্য্যে নাহি মতি 🖟 বিদায় করহ অবেষণে যাব ভার। শুনি রাজা ভাহারে প্রশংসে বার বার 🕆 সাধা প্রতি অনুরাগ এতেক ইহার। তুচ্ছ করিলেক হেন ঐশ্বর্য-**অপার**॥ তবে যত্নে রাখিতে মারিল নরপতি। याहेट जङ्गात्य भिन अनूमि ॥ ত্প স্থানে পাত্ৰ পুত্ৰ বিদায় হইয়া। বোগীবেশে বছদেশে জমণ করিয়া।।

কোন স্থানে না পাইয়া স্থার উদ্দেশ। মরস্বতীপুরে শেষে করিল প্রবেশ। ান্ধান না পায় বিভু তথায় খুজিয়া। উল্লেচ্ডে ভবে মিন্ধুতীরে **উভরি**য়া । ্রান করি জপিমন্ত্র শত অস্টোত্তর। দগার বিচ্ছেদে হৈয়ে ব্যাকুল অন্তর॥ অন্নিকুণ্ড ক্রিলেন ম্যিবার **আশে**। গ্ৰন্থা ক্ৰিছে আ**কাশে**॥ আগ্ন প্রদক্ষিণ করি ফাইছে বচন। গদি না পাইসু সংগ জাননমোহন। প্রবেশি অনলে, নাহি রাখিব জীবন। ইহা শুনি ধাইয়া আইল একজন ॥ গরিয়া রাখিল তারে পড়িতে না দিল । পতন উন্মোগ তার হইল নিক্ষণ।।

^{(30}

চিত্রমোইনের সরস্বতীপুরে মনমোহানের সহিত দিলন।

টোরি: তাল জলন ভেতালা।

প্র। বা তুমি চাক তা তোমার। ম্যাচঞ্চল করে জুমি বা কাহার॥ চির কথে থাক সাতে । চলা ভাল সেই পথে, ইয়ে চঞ্চল হাল সুথ কি কাহার॥

नश्किश्मी।

গুণাকর কয়, শুন মহাশায়,
এ অনি আশ্চর্যা কথা।
থার বেই জন, শ্রীনন্ধমোহন,
আন গিয়াছিল তথা।
গুনি তার খেদ, হৈল মর্মভেদশ্রীচত্রমোহন জানি।
ধরিল ধাইয়া, সে তারে দেখিয়া,
পরম আশ্চর্যা নানি।
আশ্চর্যা ঘটন, কহ বিবরণ,
শ্রীচত্রমোহন কহে।

অাপনিত হেথা, গিত্ৰ-রাজ কোথা, তুর কহু অজ দহে॥ कहि मधुनाय, वाठाह आयाय. পাইন কি তার দেখা। শুনিয়া বচন, - শুরক্ষমোহন কহে শুন প্রাণ মুগা। সন কৰ ছিব্ৰ প্ৰন্থ স্থাতি, **बिमनरमा**ंस आरहा ুইত নগরে. এক শিল্পী যারে. প্রে থাব তার কাছে।। মং, গুণমণি, দেখিৰে এখনি, গিয়া সেই বাসভানে। হাণ কিবা গতি, হইত সম্প্রতি, ভাগ্যে আইলাম ভানে ॥ জীচিত্রমোহন, কি সুখে মগন. পাইয়া এ সমাচার। া হয় বর্ণন, স্থমিত্র যেমন, তেমনি আনন্দ তার ॥ তবে হৰ মনে, সংগ্ৰ<u>দুইজনে</u>, অান করি তুরা যায়।

मिल्भी वाटन भिन्ना, नथादत प्रधिकाः পতে গিয়া োর পায়।। দেখিয়া তাহায়, তত সুখ পার, खुर्मन स्পेठ्छ। বৰিব কি জার, বুঝ সলে দাব. উভয়ে পুনক যুত।। কুমার উঠিয়া তারে উঠাইয়া. किल पृष्ठ जालिक्स। भथा मधा कति, ब्लान्स्य क्कति. উভয়ে অভিন ম**ই**॥ দেন হারাধন, পাইল দুজন, इर्टेल जानमञ्ज। . তবে সমাদেরে, ধরি স্থা করে, জিজানে হপতিস্তুত ॥ তব বিবরণ. कतिय खंदन, শুনি কহে সেই কথা। **अथर** अहर दिन के दिन क ষেইরূপে মন্ত্রী তথা।। मित नगेंद्र एक, प्रिश य क्राप्टि ঞ্জিণমোহন সাথে:

ित्र अपे कांत्र देवमग्रदा धारि, দিল রাজ দন্যা হাতে ৷৷ পাট নিৰ্থিয়া, বিশীৰ হইয়া. ক্ছিল মে স্ব কথা। ্টেরপে হার, পাইল ভাহার. যে রূপে বিদায় তথা ।৷ উংজে আসিয়া, বিৰায় হইয়া. बतिया द्यागीहरूनम् । উন্দেশ করিছা, কোথা না পাইছা, (क्या देशमा पृथ्य त्मामा এতেক বলিয়া, সে হার খুলিয়া, দিল রাজপুত্র করে। শ্র বির**খিয়া; বিহরণ হ**ইয়া, স্পাস্ত বক্ষে ধরে।। গুলকে পূরিল, তাত্তিত হইল, विद्राप्ट कामश महरू। নেত্রে জলধার. বহু অনিবার, স্থান নিশ্বাস বহে।। স্থার হইয়া, স্থারে চাহিয়া, कानियां कानिया वटन।

পাইতে প্রিয়ায়, করহ উপায়, অধিক সন্তা জ্ঞানে॥ প্রির সংখ্ তব, কত ভণ কব, रिष्ट शिष्टिन एथा। ধরি বোগীদেশ, জনি বছদেশ, আনিলে প্রিয়ার কথা।। <u> ब</u>िद्रण्याहर, कट्ड सिट्रान्स, (कार कथा किंकू आदि : গৌরব কারণ, করিলা গোপান, ना रिनिन उर कार्छ ॥ তোমাৰ বিচ্ছেচ্ছ, অতিশয় খেলে, অগ্নিকুও সাজাইয়া। পতন উদেষালো, দেখি দৈববোলে. আনিয়াছি বাঁচাইয়া গ অতি অপরপ, শুনি তবে ভূপ, কোলে করি কান্দে कভ। কি হইত গড়ি, যদি এ সুমতি,

অগ্নিকুত্তে প্রেবেশিত।।

জ্ঞানমোহন অনু রীয় বিক্রার্থে সরস্বতীপুরে রাজ্যভায় গমন।

ত্য। আনিয়াছি রত্বাস্থী করিব বিক্রেয়। ধ্যার্থ প্রদানে মূল্য লহ মহান্য।।

> **জীচিত্রমোহনে** রাজপুত্র করি কোলে। সকাক সিঞ্চিল ভার নিজ নেত্র জলে॥ হার প্রিয়নখা আজি কি দশা বটিত। এ।রঙ্গমোহন যদি স্নানে ন। যাইও।। ছয় স্থা মন ধন জীবন আমার। না দেখিলে যোর মৃত্যু জানিতে নির্দ্ধার।। এখন বিতথা চারি স্থার বুটিল। আর দুই স্থা মোর কোথায় রহিল ॥ হায় কোথা অহে, প্রিয় স্থা দুই জন। বাঁচাছ আমার প্রাণ দিয়া দরশন।। ... এইরূপ বিলাপ করিয়া কডকন। সংগাণে চাহি তবে বলিল বচন 🗓 🦡 এখন উপায় করি মণিপুর চল। তথায় চলিতে চাহি পথের সম্বল্ট

এতবলি অঞ্লের অঞ্রী খুলিয়া। **কহিতে লাগিল জ্ঞান**্মাহনেরে দিয়া।। दाक्रम डा याह धरे कर ती नहेशा। ষেই ধন পাও আন বিক্রয় করিয়া॥ ডবে মণিপুরে যাব লয়ে এই ধন। ঙনিয়া চলিল তবে জীজানমোহন।। সরস্বতীপুরে রঞ্জিতাক্ষ নরপতি। ভার সভা দ্বারেতে গেলেম শীত্রগতি 🛭 ছারী গিয়া স্পে জানাইল সমাচার। আজ্ঞাক্রমে সভা মধ্যে গেলেন ভাহার । জীজ্ঞানমোহ্ন রূপে ভূপতি বিশ্র। রা**জারে বন্দি**য়া দেই করপুটে কয়।। আনিয়াছি রত্নাখুরী দেখ মহানায়। ষধার্থ যা মূল্য দেন করিব বিক্রয়।। এত বলি অঙ্গুরী সন্মুখে ধরে তার। **অন্**রী দেখিয়া রাজ্যিনে চ্যৎকার।। दछगुना तंषु (सहे त्रक्त्यर्व धरत। ছটায় আরক্তবর্ গ্রাজ শোভা করে।। রত্ন পরীক্ষকে রাজা আনে ডাকাইয়া। কহিল যথাৰ মূল্য কহ বিচারিয়া॥

রতু দেখি তাহার নয়নে বহে জল। শ্রীজ্ঞানমোহনে দেখি কান্দিয়া বিকল । হায় প্রিয়সখা সানি কান্দিয়া উঠিল। ময়নে আনন্দ মীর বহিতে লাগিল।। <u>জীজ্ঞানমোহন দেখি বদন তাহার।</u> শ্রীর**ত্রনোহন সংগ** জানি আপনার।। দোহা আলিকিয়া দোহে হইল অছির সভা**সহ আকর্ষ্য ল**াগিল ,ভূপতির॥ প্রীক্ষকে জিজাসিল এবা কোল**জন**। ইফারে দেখিয়া ভূমি কান্দ কি কারণ 🛭 পরীক্ষক আদ্যোপাত্ত সকলি কহিল: শুনি নরপতি অতি বিষয়ে হইল।। জ्ञानस्माहरनरत जिल्लामिल नदश्रिः। কোথায় এখন মনমোহন ভূপতি।। বিবরণ কহ্ জীরত্বমোহন বলে : দোহে জ্ঞানমোহন শুনায় কুভূহলে।। তব রাজ্যে স্থা মন আছেন সম্প্রতি। অতি অংশ দুরেতে করিয়া অবস্থিতি।। শুনিয়া হপতি মানে ভাগ্য আপনার। স্থ্রসেন স্কুত আছে নগরে আমার॥

রত্নগাছনেরে কটেছ বিনয় করিয়া। এীমনমোহন স্থা পুর্কেন। জানিয়া। ব্যবহারে ক্রটি হইয়াছে কিছু যাহা। কদাচিত মনে না করিবে ভূমি ভাষা।। ताकशृरल जानाहरत यम निरंतपन। ভাঁর সহ সাক্ষাত করিতে হয় মন।। রূপাকরি তিনি কি আসিবেন হেখায়। অথবা করিব আমি গমন তথায়।। কহিবে আমারে তাঁর যেই অনুমতি। শুনি যে।ডুকরে সেই কহে স্থ প্রতি।। শুন মহারাজ রক্ষা করিলে আমারে ! भालम क्रिल मना वह शुवकारत ।। জীবন অবধি গুণ অরিব তোমার ' রাজপুত্রে জানাইব জাক্তা জাপনার 🛭 তিনি যে কহেন নিবেদন জানাইব। এবে আজ্ঞা দেহ তার সমীপে বাইব।। গুনি রাজা হর্ষচিত্তে দিলেন বিদায়। দুই সথা মিলি প্রিয়সথা কাছে যায় ॥ কহিতে কহিতে নিজ নিজ বিবরণ। ताज्युल मगीट्य रगटनन पृष्टे जन।।

রত্নাহন স্থার বিবরণ!

হবি কাশী অনুকূল: ই দিনে দিনে। প্রিয় স্থাগণে পাব নাছি ছিল মনে।

श्मा ।

ঞ্জিরত্বসোহ**নে দেখি** রাজপুত্র সুধে। উটিয়া মিলিতে চলে বাক্য নাতি মুখে।। তথ্য সে পাত্ৰপুল আইল ধাইয়।। াজপুত্র পদতলে পড়িল লুটিয়া ।। लाहर कारा भिलि कर आलिक्स किए। কহিছেন রাজপুত্র আনন্দ পাইরা।। রুঝি **এত দিনে কালী হইল স**দয় : আজি মম বাসে দেখি মহানন্দ মঃ॥ जगतन याँ **टिटन मधा कर वि**वत्र ग এীরত্নোহন শুনি কহিছে তথন।। ५१ **फिटन जानि जानि मगूट**एक भौदित । সন্ধ্যা কালে এই দেশে উঠিলাম তীরে।। রাত্র দেখি করিলাম রুক্ষে আরোহণ। কতক্ষণে তথা হৈতে দেখি এক জন 😗

ধন্মর্কাণ-ধারী উঠে ব্লক্ষের উপরে। রোদন করিতে লাগিলা**ম দেখি** ডরে।। আনারে দেখিয়া সে মানিয়া চমৎকার। জিজাসিল কেবা ভূগি হেথা কি প্রকার ।। নিজ বিবরণ **শুপ্ত করিয়া তাহারে**। জনামত কহিলাম নত বাবহারে॥ দুংখী দেখি আমারে সদয় হয়ে অতি। নিজ বস্ত্র দিল এক সেই মহামতি।। কৈ তিনি জানিতে এই দিল পরিচয়। এই দেশে **অধিপের পুত্র সেই হ**য়॥ কহিলেন আমি আইলাম মুগ্যায়। পশ্চাৎ পড়িল সৈন্য না দেখি কাহায়।। অতএব রক্ষে করিলাম আরোহণ। তোমারে দেখিয়া অতি স্থাথ-ছৈল মন। কোন গুণে বিজ্ঞ তুমি বলহ আমারে। শুনি কহিলাম আমি বিনয়ে তাহারে॥ যংকিঞ্চিৎ জানি আমি রত্ন পরীক্ষণ। শুনিয়া হাসিয়া কৃছে রাজার নন্দন।। গ্ৰেতে যাইব সঙ্গে তোমারে লইয়া। নিযুক্ত করিব কর্মে সর্পে জানাইয়া॥

প্রভাত হইল गिশা এরপ কথায়। প্র'তে সৈন্যগণ আসি মিলিল তথায়।। রাজপুত্র দিয়া বহু বত্র অলকার। সক্তে লইয়া গেল গৃহে আপনার।। শুশাধায় তিন দিনে সবল করিল। ত্রে গুণ কহি হপতিরে সম্পিল।। রত্ন পরীক্ষণে তথা নিযুক্ত ছিলাম। অসুরীর হেতু সধা তোমা পাইলাম 📳 হেথা **স্থিতি তোমার জানিল নরপতি**। ভোমারে দেখিতে তাঁকী উৎক্রিত মতি এ करितन उथा यमि ना गांश सांशनि। তবে স্বয়ৎ হেখা আসিবেন স্প্রাণি !! এতেক বলিয়া অঙ্গুরীয় তাঁরে দিল। পাইয়া কুমার অতি আনিন্দিত হৈল॥

র**ঞ্জিতাক্ষ** রাজার গুহে মনমোহনের গমন।

আঁছা মরি কিব। ছেরি; গজেরজাপরে কি ইজা। কিবা যোগেলা, রবেজা, ক্ষিপেলা

किया थरशन, मूनीन कनीज हस्ता, জিনিয়া যেন দেবেজ ॥

नपु छोशनी।

শুড়িদ্দ জানি, मदः भविवादः হইল অপার, পাত্র পুজ্র করে, ক্ষে হপ্রকে, বহু নম্কার, ষাৰ গৃত্হে ডাঁর, मधान नहेशां, প্ৰস্তুত স্ইয়া, শুনি সে চলিল, রাজা পাঠাইল, এক করি বর, 🕟 অতি মনোহর, চ†রি হয়∗বর. পাত পুজ সনে, 🧬 मजी दूथ गरन, कुमात मंग्रीतम,

তবে ভার বালী, তুনি সুথ মানি, হপতি হুত। ভৃত্তি উপহার, আনন্যুত॥ धित मगामदत्र, জানাবে ভাই। কহিবে আমার, खनाथ नहि॥ অাসিবে কিরিয়া, রহিব সবে। . स्ट्रा जानाइल, মক্তিরে তবে॥ আনিল তথা। দিল বার্ডা॥

छनि मश मटल, मत्म द्यारक, স্থা হারি জনে, ইয়ে অগ্রসর, চাপিয়া বারণে, অতিশয় মনে. গৌরব করিয়া, 👵 📑 বিনীত হইয়া, দিয়া আলিজন, চড়িল বারণ, পুরবাসি যত, কত শত শত. কিবা মনোহর, এক গজোপুর; धित माना दी।।

इलिट्लम इट्फ, গখন করে। চলিল বার্থে, কুমার আপনে, ज्यश्च डेशदर् ॥ প্রথ স্পার্বর, .' প্রফুল অন্তর, আনিতে যায়। চলে মন্ত্রীসমে. আমন্ পায় :: मध्य शदथ भिन्ना, कुमादब प्रिश्ना, নামে স্পতি: কুমার নামিয়া, গৌরব করিয়া. করে প্রণতি আন্দেরজন, লইয়া ভায়। स्टेट्स উर्चाख, দেখিতে शाय।। मूरे शूतन्मत्र, যেন বসিল। হপ হৰ মানি, কুমারের পানি, रिजुकि बन मा

कुर्यादब्रह मत्न. र्षशुक्त मत्न, (गांधित मगत्रः, ताक गरानात्र, রাজার তনয়, আনে সভাতে॥

ক্ৰেপ্সক্থনে. এল গৃহেতে।

রঞ্জিডাক্ষ রাজার স্**ত্যস্তা**ুবর্ন।

ধুরা। সরি হার, কর কার, প্রাণ যায় লায়। করি বালা,এড জালা, সহে বননা আমায় ঃ মরে অপরে গঞ্জনাঃ সন্ত্রু করে লাঞ্জনাঃ তুৰ্জন ও গুৰুজনা, কলত র্টায়। শাশুড়ী प्राच वाविनी, सम्ब्रिमी कालक्ष्मी। १९६व ্ৰোৱে মৃত্যুকিনী, সদত দংশায়।। মৃচুমতি মম প্রতি, পতি জীজগতপতি, ভারে বলে উপপতি, মরি এই দায়।। জীতারাচরণে ভানে, রাধানাথ রক্ষাবনে, মধুর মুরুলি ভাবে, মহালে রাধায়।।

शमा ।

ৰ্জীমনমোছন করে হুপতি ধরিয়া। পুর্তে আদিলেন রাজা গৌরব করিয়া।।

গজবর পৃষ্ঠে হইতে নাম্বি দুইজনে 🗸 ত্তা গুহে উপনীত মকৌতুক গ্রে। মেই হত্য গৃহ হয় বিচিত্ত নিৰ্মাণ। দী**ৰ্ঘে দুই শ**ত হত হয় পারিমাণ দ াত্রে একশার হন্ত ন্থা। মাধ্যার। ঞটিকে নির্মিত অতি ভুশার গঠন। চারিদিগে বে**ভি**ত বিচিত্র উদ্যোদ। তার মধ্যে দুই সিংহাসন তালেছেন । ফ, ৮ রক্ষাকারে দীপম:লা হনির্বিত উদঃ খ**ুরুর ন্ধ**্য উদ্দ**েশাভিত** দ ·নীলয়ক্ত, খেতবর্ দীপদালাচয়। দীপ্ত করিয়াছে কিবা দে প্ত্য আলয় : महे गृष्ट प्राहर दमिटलन मि॰ शमटन। নিকটে বসিয়া হর্ষে স্থা চারিজনে।। दिश्तिम शञ्जी अपि अङ्गिष्णा সে সভার কত শোভা না যায় বর্ণন। একে দেই হত্য গৃহ অতি চমৎকার। সুরচিত মণিগণ ভিত্তিতে তাহার॥ ত'হ'তে ম**ন্ম**থাকার শ্রীমন**দো**ছন। শেভা দেখি সকলের আকর্ষিল মন।

সেই সত্য গৃহ পার্শ্বে এক চিত্রালয়। তাহে বসি সভ্যাদি দেখেন নারীচয় 🗥 কুমারের রূপ তার! করি নিয়ীকণ। ময়তেথ আকুল থগে কটির কন্ধন ।। সমান রুখ্য সব কামিনী মিলিয়া । প্রশংসে কুথারে কামে উন্মতা হইয়া দ কহে সই ভাগাবতী যে নারী ক্টরে। ন্থ মেই এই মুখ চুশ্ন কৰিবে 🖟 কর কমলহেয় কুচছয়ে দিবে। অবৈধ্য হইফা পুলকেতে শিহরিকে 🕫 **এই অন্ন পরশ ক্ই**না **মাত্র** তার। কটি বন্ধ খুলিতে না হবে এতু আর !! এ **অভে** জনজ রক্ত যেই বিহ্রিবে। মত্য সেই নারী জন্ম মফল ক্রিতে 🗈 অন্ত সঙ্গ পাইলে অনঞ্চে ঘ,তি চিত না করিতে যত্ন **আচরিতে বিপরীত** । (र अक प्रिया अक्टीत अक्टमा। জভন্ন কটাকে কিবা জীবন সংশয়।। হায়েরে বিধাতা হেন স্বামী নাছি দিলি কামিনী করিয়া কামানলে পোড়াইলি ।

এইরূপে নারিগণ প্রশ্বনিছে তার ৮ স্ত্যকী স্ভাক্**গণ নাচে** পার গার।। স্কুপিনী সুবেশা যৌবনে সুগর্বিতা ' অঞ্চ ভক্ষ হাব ভাব প্রকালে পণ্ডিত।।। মে মব কামিনী সত্য করি কভক্ষণ। প্রিলাম করিল বাজে মানা ব্রেগেণ। , দেবে সভাষ্ঠাে আকি সুগাঁৱনগ্ৰা নিজ নিজ ভুয়ন্ত করিয়া চুমিল্ন 🖰 আনাপ করিয়া রাগ মনুর গাইল। মত্রাছ সমীপে তারা প্রশাস। পাইল। রাজপুদ্র পরিতোব হেতু অপ্রবর। **্রাকাশ করিছে রক্ষরসা বহুতর**া স্তরঞ্জিত তাহারে না দেখি নরপতি। কহিছেন নিভূতে প্ৰবীণ মন্ত্ৰী প্ৰতি। জান তুমি হেন গুণবান কেছ হয়: আলাপ মাত্রেতে মন আক্ষিয়া লয়।। মত্ৰী কহে এক জন আছে যোগ্য নার। অপ্সাদিন রহিষ্টে নিবাসে আমার 🖟 শুনি আজ্ঞা দিয়া রাজা তারে আনাইলঃ স্বাহেস করিয়া সভ্য হলে পাঠাইল।

নবীন বয়স সেই পরম প্রশ্র।

তত্য স্থলে বসি দীপ্ত করে মনোহর।

যন্ত্র স্থলে বসি দীপ্ত করে মনোহর।

যন্ত্র মিলাইয়া তবে আলাগে কেদারা।

কণ্ঠসরে সবার হইল বুদ্ধি হারা।।
কণ্ঠসর শুনি তার রাজার কুমার।

শ্রীরাগমোহন সখা জানি আগনার।।

শ্রীরাগমোহন বলি কান্দিয়া উচিল।

শ্রেক আসিয়া কান্দি চরণে পড়িল।

শভাসহ চনৎকার মানিল রাজন।

কহে একি আসম্বিতে হইল ঘটন।।

জীরা**গযোহন সখার বি**বরণ।

ধৃষু,। ওমা কালী গো করালী মুখ্মালী। অকুলে আনিয়া কুলে কেন অকুলে কেলালি।।

भोगे ।

জেবে অতি আ**ত্তে ব্যত্তে উঠি**য়া রাজন। কুমারের করে ধরি জিজ্ঞানে কারণ।

আপনি ক্রন্দন করিছেন কি ফারুরে। গায়ক পড়িল কেন ভোমার চরু। তবে পাত্রপুত্রে রাজা আলিঙ্গন দিয়া। তার **করে ধ**রি হৃপে কংছ বিধরিয়া । এই প্রিয় স্থা মন জীরগিমোহন। .তোমার প্রসাদে হেখা পাই দরশম।। চমৎকার স্পতি সভাস্থান আর: রঙ্গমোহনাদি সধা আনন্দ অপার 🗅 সখায় সখায় তবে মিলিয়া সকলে। **পালিন্ধন ক**রিয়া বসিল কুতৃহলে॥ তবে সম্বরণ করি সব স্প্রাণীত। রাজপুত্রে তারপঞ্চ **সথা**র সহিত ॥ করাইয়া স্থারস সাম্ত্রি ভোজন। বিচিত্র ভবন দিল বাসার কারণ।। সখা, সহ রাজপুত্র তথার রহিল। **এक भाउ माम मामी नियुक्त इ**हेल ॥ সব সমাধান করি হুপতি তখন। বিদায় হইয়া গেল করিতে শয়ন ॥ স্থাসহ রাজপুত্র বিশ্রাম করিল। কথোপকথনে সতে রজ্নী বঞ্চিল।।

এভাতে উটিয়া প্রাতঃক্লত্য সমাপিয়া গ সহা সহ সভা যথ্যে বসিলেন গিয়া । মভাসদ সহ রঞ্জিতাক নরপতি। হাসিয়া কছেন রাগমোহনের প্রতি মত ওমিয়াছি তরীভঞ্জ বিলরণ। ক্ত কোন রূপে তুমি পাইলে জীবন।। শাত্রিত্র করে রাজা শুন চনৎকার। তাসি ইঃদিনে দেশ পাইয়া তোষার। উপস্থিত থাকি দেশি উপজিল ভয়। ব্রুক আরোহণ করিলাম মহাশয়।। শীতে ঘইলাম তবে অতি কজাবান: দৈবখোগে দেখি দূরে অগ্নি দীগুমান [্] অধু গতি করিলাম তথার গমন। তথা গিয়া; **দেখিয়ে মনুষ্য কত জন**।। তীর্থ বাত্রী হয় তারা করনে রন্ধন। . কাতরে মাগিতে **অগ্নি** দিল তভক্ষণ।। দুরবন্থ। দেখি মোরে সেই যাত্রিগণ। রূপা করি যুখ্য বস্ত্র করিল অর্পণ।। ভক্ষ দ্রব্য দিল আনি করিয়া ভোজন। সে সদ সহিত কহি কথোপক্ষন।।

ততে তথা আচম্বিতে আসি দল্যাগণ। ন্টিয়া সকল দ্রব্য লইল রাজন ।। কিছু না পাইয়া তারা মম সলিধান। ধরিয়া লইয়া চলে গলে দিয়া টান ॥ কিব। কালিকার ইচ্ছা প্রন ভদন্তর। स्ठांद षारेन छथा रिमम् वङ्कत ॥ কভক্ষণ বাকযুদ্ধ পরস্পার করি । তবে সেই সৈন্যগণ দুসুগেণে ধরি । মবাকারে আবিল্ মভার আপনার। বিচাহার্থে **মন্তিরে আপনি দি**য়া ভার॥ অভঃপুরে মহারাজ করিল। গমন। ণব্রির বিচারে দুয়ী হৈলা ভারগণ ॥ দও হেতু তব আজা **অপে**কা র*হিল*া কারাগানে নাবারে রাখিতে আজ্ঞা দিল !! उटर आधि कान्मि कदिलाभ निर्वाहम। তীর্থ হাত্রী আমি চোর মহি কদাচন।। আমা স্থানে কিছু মাত্র ধন না পাইয়া। ইহার। যাইতৈ ছিল আমারে:লইয়া।। এতেক শুনিয়া মন্ত্রী মুধ নির্থিয়া। ক্তক্ষণ নিজমনে বিচার করিয়া।।

আজ্ঞা দিলা মম গৃচ্ছে রাখহ ইহারে। আর সব চোরে লয়ে ষাছ কারাগারে।। এতকলি আমারে প্রগৃত্যে পাঠাইয়া। রাত্রিকালে আপন সমীপে আনাইয়া।। ক**হিলেন চোর নহ হেন মনে** লয়। কি বিদ্যা উত্তম জান দেহ পরিচয় : ' কহিলাম জানি আমি স্কীত কিঞ্চি । মম গান শুনি তবে হইয়া মোহিত 🥇 আপন তনয় সহ শিলুহিয়া দিল। স্পব্রে কোম দিন জানাব কহিল । এইরপে বাতিলাম মন্ত্রির রূপায়: প্রিয়সখা শাইলাম তব করুণার ৷৷ শুনি চমৎকার মানিলেন নরপতি। এই কথা বিচারে জানিল মহামতি।। যে নিশিতে জীরত্নাহন রুক্ষে ছিল "রাজপুত্র মহ তথা সাক্ষাৎ হইল।। রাজপুত্রে না দেখিয়া তার সৈম্যান। मुदे यूथ रहेश कतिल अरुवर्ने॥ এক মূথ তাহার ধরিল চোরগবে। ্ৰিক মূপ প্ৰাতে আইল রাজুপুত্র সনে॥

। খয়াথ কাব্য :

यां कर्न शामिल दाका अमर प्रदेशन । पुरा ज्यानिकन कट्ट क्रिनस्मिश्ट्स

, तञ्जिषाक राष्ट्री मनस्याजनामित दिवदः भारतः

বাণিনী মূলতান যাহায়, ভাল হরি

ইথান কি নাছে আৰু বকান খেছেতে।

সগত জীবন, এমন প্রন, কর্মে দহিন,
বলক্ষালৈতে।

তদ্দন দীতল জান;

ক্বিছে চরি লেগন, বিশুধ দহমে

ভাগতে। মহ বিধ্বন, ব'স নির্মুর,
দ্যোগতে। ভাহার লা পারি কহিতে।

भारा ।

ভবে রঞ্জিভাক্ষ রাজা করিয়! বিনয় দ্বৎ হাসিয়া কুমারের প্রতি কয়॥

জন্মাব্যি ভোষার আশ্রের বিবরণ। শভিলাব হ্য ম্যা করিতে **প্রেব**ণ া করণায় ফদ্যুপি করেন অনুমতি। কহিতে আদেশ হয় এক সধা প্রতি।। ভূমি রাজপুত্র তবে ঈষৎ হাসিয়া ' রক্ষমোহনাদি স্থা গণেরে চাহিয়া। किश्तिम स्रशेवरत कह द्वविद्यातः। মম বিহরণ তোমাদেব স্ব আর ।। তানি য়ঙ্গাহাৰ আদ্যন্ত বিবরণ । বিস্তারিয়া সকল করিল নিবেদন ব একৈ একে সখাগ্ৰ নিজ নিজ কথ।। সকল কহিল রাজা গুনিলেন তথা 🗥 মভামহ স্পতি মানিয়া চমংকরে। বা**লপুতে প্রদ-শ**িকরতা বার বার। मायाना मध्या छुमि नर स्निका। এ সকল বটন সামান্যে কোথা হয়॥ क्रीमनम् अही कन्ता : तम मामानग्रा सह। দ্যানে হয়েছে কোথা হেন রাগোদয় এ নকল স্থাও সামান্য তব নয়। তোমা লাগি সুখ ত্যাগ করি দুঃখ সয়॥

প্রতিশা করি হে এই ঈশ্বরের প্রতি।

শ্রীমনমুঞ্জরী প্রাপ্য হও শীব্রগতি।

এত বলি সভা ভালি উঠিব রাজন।

আপন আপন স্থানে গেল সর্বজন।

সহা সহ রাজপুত্র কাইলেন হাস।

নানারপ গুজাহা বরুয়ে সহ দাস।

ইরুপে রাজপত্র সহাগিব মতে

শাজার আবাসে আছে কৌতুক প্রসঙ্গে।

শ্রীমনমুঞ্জরী ভাবি মনে ইতে তাপ।

শ্রার মণ্ডলে বসি করুয়ে বিলাপ।

নিশাযোগে স্থাসহ যন্তা মিলাইয়া।

গাইছে প্রবন্ধ এক বর্ণন করিয়া।

दिवह, धरक।

ূ শুমরাগ ভাল যথ ।

বিপরীত গ'ত মন্ম ছে বিরছে। ইছ জীবন আর রছে নারছে।। বাড়বানল তাপ বর্ক্ত সছে। মলহানীল শীতল সহা নছে।। প্রেপ্রের রবিচপ্তকরে কি করে।
তিন্তু ভাগিত শাত শুধাংশু করে।
যধুযোষ রবে তুলিশা শুনহে।
সহয়ে যদি এতব প্রতঃ নহে।

এইরপে বহু গীত বর্ণন করিয়া। স্থাগণে গায় নিত্য রজনী জাগিয়া।।

সরস্বতীপুর হইতে মনমোহনের মনিপুর যাত্র।

পুর:। তান ওচে নরপতি মম নিবেদন। । মণিপুর ধার আজ্ঞা করছ রাজন।

भागा।

সর্বেশ্বর চমৎকার শুনিয়া এসব।
গুণাকরে জিজ্ঞাসিল করিয়া গৌরব॥
রাজপুত্র সধাগণ নিস্তার পাইল।
স্থাস নামেতে বিপ্র কোথায় রহিল॥

ওণাকর কহে তিনি তিন দিন পরে পাইয়। মিদ্ধুব ভীর উঠিল উপরে ।। শুক্ত হৈল ফল জঘ গাইলা বা**স**ণ ' দেখে এক করী জলে করয়ে গমন ন উজ্জৈত্বর থাকিল ওলিং। দদাগর। ফুড় তরি পাঠাইয়। আনি হিজাকে লারণ শুনিয়া **মেই** কম্প্র করিয় 🔻 অপেন ডিকাস ভারে মানিল এই। ।। :সংহল নগারে সদাগার উত্তিল। रिमाय इदेश निद्य याम्य धनिन ॥ পশ্চাথ কহিব তার অন্য বিবরণ। প্র রাজপুত্র কথা করহ এবন।। মরস্বতীপুরে রাজপুক্ত মথাসকে। রাতি দিন যায় মনমুঞ্জা প্রান্ত ।। নশ দিন রহি রঞ্জিতাফ স্পেখরে। একাদশ দিনে কতে রাজার গোচরে। বাঞ্জা মণিপুরে আমি করিব গমন। শুনি র'জা অনুমতি করে ততকণ।। রাজপুত্র আর তার সর্থা পঞ্জনে। বহু মূল্য রক্স দিল হর্ষিত ম্নে ॥

রপ প্র[†]তি হেত্ বাজপুত্র তাহা নিল : ওবে রাজা তরি যাজাইয়া তারে দিল।। গমন সময় তবে গৌরব করিয়।। সপে বন্ধে রাজপুত্র চরণে ধরিয়া।। পুল্ল সম ক্ষেহ বাজ। করিয়া ভাষায় যথাযোগ্য সন্ত্যাশিলা দিলেন বিদায় 🕕 গমন সময় কান্দি কছেন স্পতি: বিধু লয়ে য'বে যবে আপন বসতি। পঞ্জিন রহি ছেগা করিবে গমন। ওনিয়া স্বীকার করি। চলিল তথ্য ।। डिया हाथि मधा महस्र गमन कतिला স্বিল্ফে নিশুর ঘাটে উভরিল।। না উঠি প্রকাশ ঘাটে রাজার নন্দন। অন্য স্থাটে উঠে সজে সথঃ পঞ্চ জন ॥ রঞ্জিতাক ভূপতির লোক যত ছিল্। ভিন্নাসহ সে সবায় বিদায় করিল ॥ মণিপুরে প্রেশে পরম কুতুহলে। অদ্য স্থপ্ৰভাত নিশি হলে৷ সবে বলে

শ্রীমনমোছনের মণিপুর প্রবেশ রাগ বিধিট : তালজলদ তেতালা

য় । উদর দু ছবে একি মধ্যকৰ শশী।
শশিক শোভাকাৰ মিশিতে প্রকাশি ।
সহায় কিবে দেখা মান্দিন দিব দিব।

निर्मात्रभने ।

কাৰে গণিপুতে হতেও নাজপুত্ৰ মধা সঞ্জে প্রতিবাদ দেখায়ে চমৎকার।

গনোহর সেই দেশা সকল শোভার শেব দিরা হারিদিলে তার।

গার হেতু এত ক্লেশা জনিজ অনেক দেশা,

দেই দেশা দেখিরা নামন।
আনাদে কহির জতি জুমারের লঘুগতি,

বাবে সাম্প শোভা দরশনে।

গরিয়া নথার করে, চলে মহাস্থ্য ভরে,

গিয়া বৈদে সরোধর থারে।

জীচিত্রশোহন গিয়া, গুণুমোহনে ভাকিয়া,
বিবরণ জানায় তাহারে।

পাইয়া দে সুসংবাদ, মানিয়া প্রমান্ত্রাদ, তাহারে করিল আলিজন। হইয়া প্রফল অতি, দুইজনে শীত্রগতি সখা কাছে করিল গমন।। হেখা রাজপুত্র রকে, বসি চারি সংগ্রহে, হ্রয়ুক্তে কহেপ্রিয়া কথা। 🤲 🤲 নগরের নারিগণ, কুন্ত ককে আগদন, বারি লইবারে আইল তথা।। महोबद्ध लहा वाबि, क्टक्स्ट क्लीम क्रि, তীরে উঠে বতেক নাগরী। দেখে রূপ চমৎকার, বসিয়াছে স্কুর্মার, স্থাগণে চারি পার্শে করি।। পরস্পার কহে সই, কে পুরুষ বদিয়া ঐ, চন্দ্ৰ কি উদয় ভূমিতল। কিবা রূপ আহা মরি, যেন তারাগণ যেরি, **ट्**डित भन घटकातिनी इस ॥ হর ভয়ে কিবা কাম, ত্যজিয়া আপন ধাম, एनारवरण विकाशन मर्के। किं जिल्ड जर्मन स्रोति, वर्ष मेर का माही,

ममार्थिन मिक्क (प्रदेश तक ॥

ার প্রাণে বাঁচিনে বাঁচিনে।

দেখিয়া নাগর রূপে. **উথলিছে কামকূপ**। হেনরূপ দেখিনে দেখিনে ॥

ক্রাহার্যার কিবা মুখ, দেখি উপজয়ে সুখ, কি আর কহিব বিধাতারে।

বাদ পাই গুণনিধি, ব্যক্ষ রাখি নিরবধি, কাম্য সাধি ত্যজিকুল ছারে।

্রাত্ত্ব নাহিক লাজ, লাজের মাথায় বাজ, অগ্নিজ্ঞালি থৈষ্য পোড়াইব।

'कर, मिता कि **गर्सती, यटक ध**रि हटक स्टिब,

मूट्थ मुध मिलियां थांकिव !!

ঃইরপে রামা যত, পরস্পার কচে কত,

সকল বৰ্ণিতে পুথি বাড়ে।

ফণে আধ পদ যায়, কণে ধ্যকিয়া চায়, কণে কণে ফিরিয়া নেহারে॥

^{্ট}রপ অনিবার, গৃহে গেল যে যাহার, । রাজপুত্র ফিরিয়া না চায়।

েজকন্যা বিনা ভিন্ন; মনে জানে নাহি অন্য, সেইরূপ চিন্তরে সদায়।। বসিয়াছে এই মতে; তবে দিবাকর গড়ে. উপানীত জ্ঞীগুণমোহন।

চিত্রনে হনের সঙ্কে, অতি বেগে আসি রক্তে ুমিলিলেন প্রফুলিত মন !!

পরস্পর দেখি মুখ, পাইল পর্য স্থা,

আন্দে ক্রন্দন সবে করে:
তবে সব সধাগন, মিলি প্রতি জনে জুন

আলিঙ্গন করে সুখ ভরে॥

প**াম্পের বিবরণ, কহি গুনি সর্কাজন** মুখাগণে রাজপুত্রে ক্য

স্বাকার স্থিতি স্থান, কোথা কর অনুসাম প্রস্থানিভূত কোথা হয়।

শীগুণমোহন কয়, নির্জন উদ্যান হয়
আ্যার বাসার দল্লিধান।

তথা স্থাথে নিবাসিবে, ফেছ আর নাজানিবে। ুবিনা সদাগরীসে সন্ধান॥

তাহাকেও পরিচয়, নাহি দিব মহাশার,

প্রকার বিশেষে বুঝাইব,।

স্থাবে নিবাসিবে তথা, আমি লয়ে খাব কথ: যুক্তিমতে দোহা মিলাইৰ।।

ক্রি স্থাগ্র সজে, রাজপুত্র গিয়া রজে, दिखाम कहिल तम छेम्राटन । অতি রুষ্য সেই স্থান, করিয়া ভোজন পান, त्रहित्नम निक्शियां शांदन ।। इअनी প্रভाठ यद, औछन्याह्न তবে, আসি নিলে স্থাগণ সঙ্গে। · ক্তি করি স**র্বজন**, রাজকন্যা নিকেতন, এতি গমেহন যায় বৃত্ত। · हंहलन रेवमादव. सानि इर्घ दछ उत. ख्रामान लहेश हिलला অং**৯ সুখ নাহি ধরে, চলিছে আন**ন্দ ভারে, द्राञ्ककात्री शृंदश् উखदिन ॥ হ্রা বাম সাঁখি তার, ক্রিতেছে অনিবার, হাতে হতে পড়ে জলপাত। বহিয়া রহিয়া মনে, সুখ উঠে ক্ষণে ক্ষণে, পুলকে গুৰিত প্ৰতি গাত্ৰ। महि बुट्य कि कांत्रन, मटक नारा मिथान, কহিতেছে নিজপ্রিয় কথা। এইরপে রামা রয়, বৈদ্যোজ সে সময়;

উপনীত হইলেন তথা।।

বৈদ্যবর হর্ন মুখে, আইলেন দেখি সুখে,

ত্বরা ধলী কুশল জিজ্ঞানে।

হাসি বৈদ্যবাল কয়, গেল মন্মথের ভয়,

তব নাথ আছে সাধু বাসে।
ভানি মাত্র সমাচার, অন্ধ পুলকিত তার,
সুখে মুখে নাহিস্কুটে কথা।

হাল অভি সুখভারে, অহির হইয়া পড়ে,

যে কি আরি আনিবেক কেথা।

বনমুগুনীর মন্দান্ত্রের গমন প্রবণ।

রাগিল পুরবী, ভাল জলদ ভেতালা।

বয়। আসিবে রবে এ রবে প্রাণ কি রবে। সই,

বাসনা আমার, নিকটে ভাষার, প্রাণ নায় ভবে।
প্রাণ বায় নাহি রয়, প্রাণাধিক করে ভাগ,
এমন সহবে, সে জন আসিবে, দেখা কি হবে।

খনমুঞ্জরী শুনি আইল শ্রীমনমোহন আনন্দ অশ্রুতে তার পুরিল নুয়ন।।

অস্থির হইল অঙ্ক অতি সুধ ভরে: সম্বরি জিজ্ঞানে বৈদ্যরাজে সমাদরে।। আসি রাজপুত্র তবে আছেন কোথায়। কি রূপ হইল ভক্ষা ভোজ্যের উপায়॥ পত্ৰিপুত্ত কৰে যম বাদা সহিধান। * আছে সদাগরের বিচিত্র প্রস্পোদ্যান । সর্ব স্থাসহ তিনি আছেন তথায়। আমি করিতেছি ভক্ষ্য ভোজ্যের উপায় 🖟 कम्या कट्ट कर कि श्रायंत्र विवद्रवा ত্রী **ভল্নে কোনরূপে পাইলা জী**বন 🕫 পারপুত্র সব কথা সংক্ষেপে কহিল। ওনি রামা চমৎকার মানিয়া রছিল।। বিবাদ করিয়া বহু পাত্রপুত্রে কয় : হায় জামা লাগি তাঁর এত ক্লেপ হয়।। এতেক বিপদে কালী রাখিল তাঁহারে। এবে প্রাণনাথে সথা পাই কি প্রকারে॥ শুনি পাত্রপুত্র তারে প্রবোধিয়া কয়। উপায় করিয়া স্থা আনিব নিশ্ ে। ধৈর্ব্যধর রাজস্কতা কি ভয় জাবা । এখন আমার স্থা স্মীপে তোম (46)

সম্ভাতি যাইব আমি তার সন্নিধান। এত কহি প্রবোধিয় করিল পয়ান ন राजकन्या त्रिट्टन अथ नित्रिक्षाः তবে পাত্রপুত্র সংখ্য মণ্ডলৈতে গিয়া । क्हिट्यम कमग्रात यट्डक दिवद्रभा শুনি রালপুল্ল অতি উৎক্ষিত মন।। স্থাগণে কহিল কর্ছ মৃক্তি সার। কোন কুপে ঘাই বুৱা নিকটে প্রিয়াব দ সুক্তি করি মথাগণ **নিশ্চ**য় কছিল : कें ज्ञान त्याहम त्यहे अभूती भाइन : श्रमाञ्चल निरलक्ष्य शिकी इस मत । এই ছলে যাবে নিজ প্রিয়ার গোচর : পক্ষী রূপে রবে ওণ্মোহনের করে। ভানিতে নারিবে কেহু বাবে **সহ্যস্ত**রে॥ যুক্তি শুনি রাজপুত্র ভাসে পুথ জলে। ছেপায় কামিনী মনে বিরহ উপলে।

भनमू अदीत नित्र र्वन।

যালকোৰ রাগ, তাল জলদ তেতালা

না । কি হবে ওলো দই বাঁচিব কেননে।
বিষয় বসন্ত, হদন ছুন্তু, বিবাদী নিভান্ত,
বিরহী জনে ॥ খনীব সংগ্র হল দংশিকে পারে পলায়, সম্পোধ ৮৮ নি মনী ওপানীত। বাহিতা যে বিভা বংশো এনাম ॥

३।क छोशंसी।

ানি হা উপান্ত কাত, লামিনী হৈয়ে অসাত।
াবি কান্চিছে নিতান্ত, বোধনে নহে প্রশান্ত।
াবি কান্চিছে নিতান্ত, বোধনে নহে প্রশান্ত।
াবি কান্চিছে নিতান্ত, ধারণে ধনী প্রবোধ।
বিধানি কান্চিরি, সদ্ধি বিধিছে শরীর।
ামিনী হয়ে অধীর, কম্পিছে হবে কি,ধীর॥
া হেরে নিশাপ্রভাত, দাহনে শরীর পাত।
নিশানে কি ঘোর বাত, নীর লোচনে নিপাত॥
ামিনীর দেখি অন্ত, রোদনে হয়ে নিরন্ত।
পারণে স্থীর হন্ত, গোপনে কহে সমন্ত॥

রে মনে ত ভাব সার, এ সহিবে সাধ্যকার এক্ষণে সমীপ তার, বস্ত্রণা সহে কি আর দক্ষিণা নিলের দাহ, জীবনের ভদ্র চাই সত্তরে তথায় যাহ, সেই আইলে বিদাহ শীত অংশু অংশুবান, অগ্লি তুলা স্থপ্রমাণ প্রাণ দক্ষ সত্যজান, রে হরায় তায় আণু ষটপদের ঝন্ধভালি, বজু তুল্য সত্যমানি প্রাণ রক্ষ রে ইদানী, সন্তরে তাহায় আনি কোকিলা করে কুকার, কাণ দক্ষ কৈল ছার প্রাণ রক্ষণেতে ভাব, নাথেরে কি পাব আর রত্ন ভ্রথণের তাপ, জন্ধ বস্ত্র কালসাপ দক্ষ কৈল সর্ক্র পাপ, পাই নাথ বায় তাপ

मनमूखतीत (थन।

মালকোষ রাগ, তালজলদ তেতালা

ধূয়। এ ছংখ না খার আর সহনে। ু এবার জনসত লইব এমন; বধিব জীবন,

ममार्थक विरा

ঋতু রাজনে । বসন্তের সেনাগণ, প্রধান কাছে মূলন, হর আর্থির, মূলনে লহিব, নতিরে রাখির, বিবহু বংলা। লানীর উদ্দা দার, বিষম হল প্রেমার, রাজু যে হইব, বিশ্বরে প্রাসিধ, চকেন্তর দেখিল, গালে কেমনে প্রিক্তলের বিধানে, চকেন্তর দেখিল, গালে কেমনে ক্ষম কালন, কবিব ছেলন; অনিবাহে কেন্দ্র দুর্বিহ্নে। বিদ্যুব্দিন কেন্দ্রে, ক্ষমের ক্রান্তে ক্ষেত্র ক্রান্ত্রিক, ক্ষমের ক্রান্ত্রিক, ক্ষমিন কেন্দ্রেক, ক্রিয়ে ক্রেন্ত্রিক,

श्रमः ;

ংইরপে কান্দে রামা ক্ষিতি তলে পড়ি।
দখিগান ধরা হতে তোলে ধরা ধরি।।
হধীরা দেখিয়া ধীরা জীরকমুঞ্জরী।
বরা হইতে তুলি বসিলেন কোলে করি।।
কহ স্কশীতল,বারি করয়ে সিঞ্চন।
প্রাদি ভামরে কৈহ করয়ে ব্যক্ষন।।

কেহ অত্যে কুম কুম দি করয়ে লেপন। ধৈশ্য হও কান্ত এল কহে কোনজন।। उद्देवन ख्यावां मि स्थितन करते। मसिर भारेबा धर्मी करह मृतुष्ठतः ॥ কেন স্থি দহ সেত্রে ভ্রামন বায়। উত্নিরি অন্ধ জ্বলে কি মাখাও গায়॥ হাঁরে সাধি কহিলে যে আইলেন কান্ত काल भरह छा छ छव आहेल क्र छा छ ॥ দেখ দখি হল প্রায় যামিনীর অন্ত। अथनि महिटन भाटत मनम मुद्रास्त ॥ মলন অনিল ভূজ কোকিল বসন্ত। সহায় স্তথান্ত আদি অনেক সামত : সুসজ্জ হইয়া রণ্ চাহে মোর ভরে। দেখ সাথি র**তিপাতি দতে প**ঞ্চশরে।। কি কব যৌৰ**ন রথে বি**ীছন সার্থি। নতু পরাভবে ভঙ্গ দিত রতিপতি।। একেত অবলা আমি নাছিক সহায়। অন্যায় সমরে যদি বধেন আমায়। তবে গো সজনি আমি পুনঃ জন্ম লয়ে কোকিল করিব বধ ব্যাধ পুত্র হয়ে।।

কেন মোরে কুহরবে করে জালাভন। কালোর অন্তর কালো কেবলে স্বজন : শুন স্থি তাবে পুনঃ শরীর ত্যক্তিয়। । াদিব স্থাৎও বাছ রূপ এই হৈয়া । क्तारा **छेन्द्र समि म्दर् क्टन्य**ः । ভানে। বলে স্থালের নোরে বিশ্বর। ভাষ্থার হব ভিলেন্ডেনের লেচন क्षेत्रिक गाँखा छ छ । कहिर अनग ।। সূর কোপান্দে ভব হল একবার। তথাচ ৰা হাতে সেই সভাব বাহার : धनरना मर्कास भेरत महें सनम । পঞ্চশরে প্রাণেশ্বরে করিন ল'হন । তবে দুঃ**র্থ শান্ত হবে ক**রিছু ভোগারে। নিদয় নু হয় ঘেনু আর অবপারে 😐 जक्रीत जक नट् अख्य माहन । কি করিবে অকোপরে কন্তুরী চলন।। অভিপ্রায় যেন কুন্ত কারের পানন ! উপরেতে পশ্ধ লেপে শীতল কারণ।। দে**খ সথি সে পরে**ক্তে শীতল ন। হয়। বর্থ **অন্তরেতে অ**গ্নি বাড়ে বিপয্য ॥

সেই রূপ মম দেহ পয়ন হইল।
হালয়ে বিরহ্ণনল জ্বলিয়া উঠিল।

ইাহার বিজেদ আর প্রাণে নাহি নহে।

হাগায় মিলাও সই অমিলনে দহে।

এইরূপ নদী নজে কালেয় প্রসজে।

এলনী প্রভাত দীননাধাগত রঙ্গে।

মনমুঞ্জরীর পুত্র মন্ত্যাল্ডনের গ্রন্থ

রাগিনী ইণ্ন বিবিটে, তাল হরি।
খুরা। আইলে তে প্রাণনাথ প্রাণ কোগায় বাগি
সারোজ সদলে শালীঃ একি অপরুণু দেখি।
ধরাধর শ্লোপেরেঃ গ্রুষ দেখ সধী।।
শিলা ভাষিছে নীরে, বুঝে দেখ সধী।।

জন ত্রিপদী।

হেখা রাজপুল যুক্তি করি। ্য দিবস বিভাবনী, অভি কটে শেষ ক্রি প্রভাতে উঠিয়া ভর্তার্থি । প্রতিকত্য মারি কুর্মলে ্সিলেন সংখ্যতে, জ্ঞান্মারন বছে, अविकृति हिन, अम्बाद्धनः। কি অন্ত আলিকার নরে : ভৈল পক্ষী সুদোষন, ভাষা দেখি নগাগন, महागम मर्वाह अस्ट्रा সারি বর্ণে পক্ষী মনোহর পৃষ্ঠ নিলমনি ন্যায়, শ্বেতপুদ্ধ লোভ: পাই, বক্ষ পীত লোহিত অধর।। **औछ गरमाइन देवमा इर**हा প্রতি হর্ষত্মনে, রাজকন্যা নিভেতনে, **हिलाटलम विरुक्त लहेर**स्। গি**রে মন**মুঞ্জী মহলে। मृद्य करा प्रथी मृद्य, शिल्या प्रथी उत्तर, প্রিয়কথা কহে কুতূহলে॥

শূন্য দেখি রাজকুন্টা ঘর। মরালের গতি জিনে, কন্যাগৃহে সংগোপনে, প্রেশিল হরিষ অন্তর্ উঠি রত্ন সিংহাদনোপরে। খুলিয়া অজুলাফুরি, পুন নররূপ করি, त्र विल भाग मिल भारत । পাত পুত্ৰ লঘু গতি যায় : कुगारत नाविला उथी, हिलल कुमारी वथी, र जिथेन राक उँ ९० छ। चेक्टरिन मशितम्ब घटन । **(एशि मिन्ने रे**नभागरत, जिस्हार्य छेरकशुः छटन নাথ কোথা তলহ সভাৱে। স্তির না বাধিতে পারি মনে। আজি কি দেখিতে পাব; কিআমি তথায় যাব, লক্ষা ধৈষ্য ঠেলিরা চরবে॥ শুনি কহে জ্রীজ্ঞানমোহন नहि य टायम रिकाः, , जन व्याननीरथ जाना, মন্তবলে আনি এইক্ষণ।। करह धनी ছाড উপহাস।

্ররহে না রহে প্রাণ, দুঃখ হতে কর ত্রাণ, মম প্রাবে আমি মম পালা। रेवमा वटन कान्सृ दूथाया ংম বাণী সভাষাৰ, নিক্ষা নিক্ষা জান, মত্রে তাঁতে আনিব হেবয়ে !! পাত্র পুত্র করে সধা ভালে। ाव में क्षिटम करमा; मिड मीरह रहह गरमा তবে বৈশ্বত হালি ভারে কলে । गशी पृथ्य करूक उन्जय । অংশীদর স্থাবরে, নেখ সে আপন গতে, আদি আছে তুসত্য বচন : करि और कारन दलिल। ান একী বেকে আয়, পাত্ৰ পূত্ৰ পিছে মার, স্থীগৰ সংহতি চলিল। রাজকন্য হয়ে উপনীত। ্ট্রা গৃহদ্বার, দেখে অতি চমংকার, যেন চন্দ্ৰ-হয়েছে উদিও।। পরস্পর দোঁহে নির্থিয়া। াব নেত্রে কভক্ষণ, 🛮 রহি ভবে দুই জন, ভূবে পড়ে কাঁপিয়া কাপিয়া।।

স্থীগণ পাত্রপুত্র জার ' वन्द्रन मिथिशा मोह, मोहादत कतिन वित. আনন্দ বাড়িল দেহিকির !! হর্ষে বাক্য নাহি ক্ষুটে মুখে। আনন্দ সমুদ্র জলে, দোহে ভাগে কৃতৃহলে, দেহে মুখ ছেরি দেহে স্বথে । हामि हामि विकाश करा। নেথ সথি এই স্থাল, আমার মন্তের বলে আনিয়াছি মথ। মহাশায়।। শুনি কুথে হইয়। মগন। বাজকনা। মুদুহাসি, অস্তরেতে লজ্জাবাদি भोडें। क्ष्रांक वाक्न ॥ পাত্র পুত্র স্থা প্রতি কয়। যাই আমি সেই স্থানে স্থাপন সমিধানে তুমি হেথা থাক মহাশয়। मिया या**डे अ**क्षुती कन्यादत । রাজা রাণী যেইক্ষণে, আমিবেন এভবনে পক্ষীরপ করিবে তোমারে ॥ অঙ্গুরী কন্যার হত্তে দি 💢 🗀

ं इटलम खन छात्र, भारत करा। हम २ कात. স্থীগণ হাসতে শুনিয়া॥ তবে কম্যা কহিল স্থীরে। েচপাল ভথাবার, বছমুপ্রটা সুরায়, कुष्ट् कत रहेगा महत्ता ॥ হ্প স্তুতে বৈদ্য হাখি ভথা: · २) व लडे या छात्र. । काता खाँक शुस्रकीर, কতে হামি করিল হলত। ।। এত, দিঁৱন মান্দ্ৰ পুৰিব। ं रक्ष खर्नामारिः । एतः २८ से एकि रिक्रिः তে মার সমীপে আনি দিল : সাভিদ্দিন শুজকণ অভি। ব'হ স্থার সূত্রে, হইবে প্রায় রতে, শুনি কন্যা কছে ভার প্রতি॥ य जीम कहिरल छेर्नक है। ं (मटक् मिशां श्राव, क्षित्त का बाह जाव. আঞ্ছিত নারিব তব ধার।। निर्मिख ना तिहटत इंहाटा। "ন অমুবন্ধ হয়, সেইরূপ মহাশয়, নিত্য যেন নেখিয়ে প্রভাতে।।

(39)

পাত্র পুত্র কবিষা বিনয়। বিদায় হইম রজে, মিলে সব স্থা সজে, শুনি তারা অতি সুখী হয়।

মন্থেছিনের গান্ধি বিবাহ

বালিবা কেলাব, ভাল জলদ তেভালা

পুয়া। ননপূর হতে ভাষার হারাগেছে গম।
কাথারে করিব, কার লোক দিব, নিলে কোন জন
ন: চলে কেখনে বন, বলে বল কি করিব,
কোম' বিমে আর, সেখানে কাহার,
গমনাগমন। আনোর অগ্যনীয়, জান
সে খান নিক্যা, ইয়া অনুযান, এই হয়
প্রাণ, ভূমি সে কারণ। যদি ভাকে কাহ
কল, লয়েছ করেছ ভাল; নাহি চাহি
ভাগি, যদি প্রাণ ভূমি করই বর্তন গ

मीर्चा जननी।

্না। আজ্ঞা অনুসারে, স্থারি। সুক্রা। করে, নান্যিত কৌতুক প্রথকে।

গাসা পরিহাস কত, করি সবে অবিরত.
ব্যালগালে ভুঞ্ছিল রবে।

্রহ অতি ক্যার্থন, আনি নান) অভরণে, সাফার্থন কন্যারে সাজায় :

কণ নীর শিলোগণি, জীমন মুঞ্জনী ধনী, কিবা শশী শোহায় কলায় গ

া একে যে শোতে যত। সাজাইছে মন্মত, কোন শুখি কুমারে সাজায়।

ন্দ্ৰ জিনিয়া ক্লিপ, তাহে বেশ জগৰূপ, রূপ, হেরি ফান লজ্ঞা পাছ দ

্তরপ্র দোহাকার, কোন স্থী গাঁপে হার, ক্রেছ স্থাে যথেন চন্দ্র।

াহারে দেখিয়া থৈব্যা, কেহরা করয়ে শ্যা।, কেনি স্থী দেয় আনি পাণ।।

শ্রেল্য বিধিষ্ঠ; করে অভিশান স্ত, অন্তর্গত হইল তপন। দোহার বিরহ জার, শান্তি হেতু দিমকর, প্রকাশিল শীতল কিরণ। সুখে সঞ্জিনীর মঙ্গে, সুরত রঙ্গিনী রঙ্গে,

অঙ্গ ভলে বদিল পালজে।

বর কন্যা এক স্থানে, ক্রি স্থী সুখ্যানে, দোহে ভাষে সুখের তরক্ষে।।

স্তুচতুরা স্থিপণ: কুস্থা মাল্য চন্দ্র,

পূর্বাহে সমুগে রাখি ছিল।

कति शम कालिकार, नदा मानछीत होत.

इंडिंग्डि थिहा गत्न मिन ॥

্তবে কন্য হুট যনে। চাহিন্ন নাগর পানে আড় দুটে ঈদদু হাসিয়া।

লয়ে জার এক হার, গলে বুলি দিয়া তাঁ? সুখানিতে গেলেন ভাসিয়া॥

কহে কুমারী চাতুরী, ওলোও রস্মুঞ্জরী। সহচরি জিজাস নাগরে।

आिं कुलवाना वर्ला, नाहि कार कि वर्ला । तकन भाना पिटनमु अभिदित ॥

অবলা সরলা নারী, কি ছল ব্রুষতে নাতি। তাই ফিরি দিলাম কুমারে। महमामग्रास्य अकरात, . अञ्चल मम्बर्धाकात, একমালা দিলেন আমারে " न, ज्ञानि क्यान गाली, रिस्त यम जनमाली, কুলব'লা কয়ে হালাতন। মালা দিয়া স্থনাগর, সুখেতে বঞ্চি বানর, गिङ्गातर्भ कतिन शयम ॥ মুলার কি ওণ জানে, স্বালয় আকর্ষণে, ्र श्राप्त रक्ष भारेश गत्रको। গুৰ ব্যৱহৃত বুমনী, বুৰি সেই গুণ মৰি, यभूगांनि लट्डा (मरे माला।। প্ৰেষ্টি যত জেশ. বৈদ্য জানে সবিশেষ, ভাগ্যে दिधि देनम मिलाईल ! श्रांम देवमा अनिधि, आनि मिशं गटशेयधि," কত মতে শুক্রবা করিল।। प्रहेष जिल्ला मरे, शाहि तमरे बल हरे. 🗣 ভাই কই জিল্ঞাস নাগবে। যানসেতে সন্থ্যা করিন কত বিধিলেন নারী, কর্ত্ত। কি বর্ষিবেন পরে॥ ওনিত্র কুমরি কন, তন ওন স্থিগণ,

अनित्र अनात्र क्यांतीरतः

ঐ বে মালতী মালে; অপ্ৰ করেছি গলে, करिएनम स फिलाम किर्त्त ॥ এক निभी मथा मटक, डेम्राटन हिलाम बटक, मधिमा मन्यथरमाहिमी। शिज्ञा कुनरांना रना, जिज्ञा सादत रत्रशान: त्रमत्रक दक्षिश त्रिक्मी॥ मन इता मन इटन, मनशूत मृता कटत. বিদ্যুতের আয় লুকাইল্!. शत्नत दिराप्तारं क्रिम, खिमग्न अर्मक (मम. অবশেষ প্রাণ শেষ ছিল।। কালী আরাধনা করি, পাইয়া এ স্বাঙ্গুর্ন পঞ্চীহয়ে এখানে আসিয়া। **भट्डा भान महिनीट**ड, मन लहेवाटड किट्ट यद्रभानां जिलाम कित्रिया।। स्टिन्द्र मा निशा किति, कम साला निल किल मन मिए कर ना मिली। यमि नाकि सम मगु थाटक खिला खित छ। वरकन ना करत तकि रिष्ध पुष महत्री, विश्व किया यक्ष मही প্রাণ ছাড়ি যায় আরি ক্ষবে।

বিতর্ক কটাক্ষ শর; কুত্ররে জ্বর জ্বর, শরে শ্বর পঞ্চ শরামনে॥

য়তি রতি পতি দহে; নেহে দাহ নাহি সহে, কহ সধী ঠাকুর কন্যারে।

সানসে রতির মনে, একাসনে দুই জনে,
প্রাণাকরি যোড়শোপচারে।

পুলায় দেবতা শান্ত, না দহিবে রতিকান্ত, দেখ স্থী করি আয়োজন।

্যারের স্কাতুনী, ইক্সিতে রসমুঞ্জরী, অভিপ্রায় বুঝিয়া তথন।

শসরে ব্র কন্যারে, রাখি ছার দিল ছাতে, বাশির গেলেন স্থিগণ।

ূর্ক বপ্প ননে শীরি, রতি আবাহন করি, পূজাছলে জীমনমোহন।।

েরে দ্রব্য আয়োজন; একাদনে দুইজন, তারা পদে শ্রীমননোহন বলে।

िटिट छात्र प्रतन, शुका वाश वद्ध मारम,

इति गाउ वित्र अभागा

এীমনমোহনের বিহার ছলে পূজার আয়োজন।

भूकः। আর বিরহ ভর রবেদা হয় জ্ঞান।
পাইয়াছি প্রাণকাস্ত, মদনে করিব শাস্ত,
পুজিব সহ শাসন্ত, রতি পদ্ধতি প্রযোগ।

मिशाक्यदाइणि।

স্থিগণ সুচতুরা তার।

হরাবদ্ধ করিলেক দার।

দুইজনে একান্ত দেখিলা।

রতিকান্ত গৃলে প্রবেশিয়া।
প্রথশের রুড়ি শরাসনে।

নির্ভয়ে বিদ্ধিল দুইজনে।

জবলা কাঁপিছে শরামাতে।

দেখি লজ্জা, ভয়, ধৈর্য সাতে।

সহায় হইল তিন করৈ।

রাশিলেক করিয়া স্থানির।

যতবাধ মারিল কন্মপ্র।

তিনে সম্বিল করি দপ্র।

নৰাথ কাব্য !

ইন্দুপুত্র নীলামর দেনের শাপ বিবরণ।

বা। তারে পতিতবারনী হয়ে মনি না জার। তিলোক জারিনী নাম কো নালি সাত জালে।

भामा।

সর্কেশ্বর প্রতি তবে কন্ ওণাকর।
বিতারিয়া কহি স্থা গুন অতঃপর।
নেব, যক্ষ নহে এই রাজার তন্য।
সামান্য পুরুষ নহে জানিহ নিশ্যা।
অতি প্রিয় বর গুল্ল হয় কালিকার।
দেখিলে যে কন্যা এই, বর-কন্যা উরি গ্রনীলাম্বর ধরে নাম ইন্দের কন্য।
ছায়।বতা নামে জার সিম্ভিনী হয়॥
কালিকার মজে, উপাসনা দোহাকার।
পুজায়ে কালিকা পদ জানি সুর্ক্লিয়ার।।

একদিন সুরপুরে বদি স্করেশ্র। চতুপ'ৰ্শ্বে স্থুবৈষ্টিত যতেক অমর।। গদর্ক কিয়র আদি, দেবক্ষবিগণ। সভায় আ**ছেন বসি মবে বি**চক্ষণ।। অপ্ররিণনেরে আছ্যা দিল স্কুরপতি। আজি সত্য কর মেলি যতেক যুবতী । প্রনিয়া দেনকা আনি উলানী অপানী। जिटलाखमा डेमा तमा माटण विनापती ॥ इकडोट्ड थाकि स्टा (प्रवि मोलाप्टर) কটাকে জেখিয়া হা**লে মদনে ক**ভির ॥ । क्रोरण दिवश कृष्टिल पूर्वामा गूर्निद्य ' মদনে মোহিত হাস্ত বুঝিয়া-অন্তর । ক্রোধেতে বলিল শোন্ ওরে দুরাই র ইন্দুপুত্র বলি জুমি কর অহঙ্কার 🛚 এস্থানের যোগ্য তুমিনহ কর্নচিত**্র** भर्टी क्या कर शिक्ष कर स्वाक्षित এবে পিতৃ দতা ভাঁচে অমর বেক্টিত। এছানে অপারী হত্য দৃশ্য অসুচিত ii यनिया आहिएन, कामहरम गर्छ स्ट्रा মত্তে শিমা কামভোগ কর কর্ম কলে।।

যে ভাবে বিতৰ্ক তব সেই খানে গিয়া। হেঁথায় আসিবে সেই পীঠ নির্থিয়া। শাপ দিয়া শাপান্তর করি তপোধন। শিষ্য লয়ে তংগ্ৰিনে করিলা গমন। এত শুনি কান্দিতে লাগিল নীলামর। মকাতরে জানাইল দেবির গোটর।। চয়তে প্রিবং কালের অক আছাডিয়। কহিতে লাগিল দেবী কারণ জামিয়া। প্রারক্ষা থওন বাছা কভু নাহি ১৪। কশ্ৰকোটি শতান্তের ভুঞ্জে স্থানন্দর !! দুংথ ত্যাগ কর ব'ছে। স্থির কর মন। মম বর পুত্র তুমি কান্দ কি কারণ।। ভূতলে জন্মিবে, রাজগৃহে বাছাধন। ে চুকু হইবে বহু ছায়ার কারণ।। ছায়াবতী পাঠাইব মৃত্তু ভুবনে। স্থাবেশে দিলন ই ক্রিক দুইজনে॥... সদা অন্তরীকে আমি থাকিব সহায়। ভয় শা করিষ্পুত্র পাইবে আমায়॥ ্নীৰীগারি মধ্যে আমি সাক্ষাৎ হইয়া। ্মরার স্থানিব দোহে স্বর্গতে লইয়া।।

এত বলি আশ্বাসিয়া বিদায় করিল। প্রাণাম করিয়া মাকে দুঃখেতে চলিল। কম্পিত কৃতান্ত ভয়ে উপায় না জানি। শক্ষরী শরণে কাটে দিবদ রজনী।।

ক্রিছ নেশের রাজ। স্তর্গেনের বিবরণ:

হয়। বিষয় বাদিন ভাষ্মনা। রখা দিন পোল।
কালী কালী বল, শিয়ারেতে বাসমে শ্রন।
মিছে এ সংবাদ, সকলি অসান, মন ভূনি
কার, বল কে তোমার, ভবে জবে পার।
ভারে কাষ্ট্র সার, ভবে সাধ্যমার, ভ্যারদানে।

्रे भेगा।

किरिज्ञा स्त्रांत का भारत नत्रशिव। भारत, माल, स्त्रांत का भारतिष्ठे रिक।। हेक, मिर्छ, निक्कारि, भिक्क दलसँग्। मना क्रकेमिक मूटक कारलंद मनाना মহাপুণ্যবান্ রাজা ধর্মেতে তৎপ্র। রাজা রাজচক্রবর্তী সবে দেয় কর।। प्तिती नश कि**ष्ट्र** माञ्**टाम नाहि इ**य । কিন্তু এক দুঃখ রাজা বিহীন তনয়।। স্ক্রাংশী রাণীর নাম অতি পতিত্রতা। একান্ত কালীর পদে হয় ভক্তিরতা।। ছান মহাপাত্র ইয় রাজার সভায়। সতে পুত্ৰ হীন, এই মাত্ৰ ব্যথা পায় 🕆 এক দিন সভুবি_হজ, ব্লিয়া নির্জ্জন। প্রধান পাত্ত্রেকহে অভি খেদ মনে।। ওন ধনঞ্জ মহাপাত স্পাশ্র। দুখানলৈ জ্বলে সন্! আমার হৃদয়।। কুরের সদৃশ দেখ ঐশ্বর্যা আমার। পুত্র বিনা মিছে মোর অতুল সংসার।। জলচর বিনা যেন, শন্য জলাশয়। ছত বিনা নিশি যেন শোভা নাহি হয়। कल পूष्पं विना स्वंत छक्ष भूनग्राक। इ। গৃহিণী বিহনে গৃহ গৃহির আঁথার।। রাজ্য, ধন, জন আর চতুরক দল। उनके विक्रीम अर्भ मक्लि निक्सल !!

त जार छ धनर छ शुखर छ जन। পুত্রবিন। সৎসারেতে সব অক্রিণ।। ইহ কালে ক্রখোদর লে'কেতে গৌরব। প্রকা**লে নিস্তার্যে ন**রক রৌরব।। সকল নিশ্বল খোর হেন পুত্র বিনে। কেয়নে হুরিব আমি পিতৃগন ঋণে। পুরাণেতে শুনিরালি পণ্ডিত মুখেতে। পুত্ৰ হান নাহি পারে, নাইতে সর্বোতে।। যদি কিছু ঘাকে পুত্র প্রাপ্তির উপায়। विष्ठातिः। मञ्जोतन् रनस् यागात्रः ॥ নতুর। কি কাম মোর এই ধর্ম জনে। মোগ অচিরিব আমি প্রবৈশিয়া বনে॥ মন্ত্রী বলে মহারাজ করি নিবেদন। পুত্রপুত্র হয় লোক দৈব নিবন্ধন । নিরূপিত যাব। আছে হয় মহাশায়। কন্ম অনুসারে তাহা ভুঞ্জয়ে নিশ্চয় 🛭 কিন্তু দেবতারে **তুট ক্রিতে** যে পারে। দেবের প্রসমে হয় প্রসাদ তাহারে॥ -দেব তৃষ্টি উপায় করি যে নিবেদ্ধা। সর্বাত্ত সাহে শাক্ত আচ্তর্ণ।

. निटाबंड नीन पुड़शी त्नशिद्य ग:श्रा বাঞ্জাতীত ধন, বিতরণ কর তায়।। ্দে স্বার প্রার্থনায় জগত স্কুর। - অবশ্য প্রদান করিবেন পুদ্র বর দ एवं मञ्जी जाशमांत्र मदत भिट्टमंड(म 🗊 তব গুত্র দরশ্যেন সংযোগ পাব ত্রান।। র্থান্ড গুলি মহাবাজ। প্রশংস্থা করিয়। में.C+ कायाजाम यूग क्याप कवरा । ास पृथ्यो पु्रिटिय निरमस सराभास । ক্ষর বস্ত্র অলীক্ষারে করেন সন্মান ।। নহারাণী ২তের নিজা গোরী আরাধনা। ভল্লি তাবে কর স্কৃতি হয়ে একমনা।। ধারমনে করিল অভরা পদ সার। নিরতা জপে তার। করগো নিভার॥

মনমোহমের জন্ম বিবরণ।

पृथ। कि श्रांतम् शांतीहस्य हम्मावस्य। शांक्न वित्तेती ४ ति द्वति सम्म स्वतस्य।

लपूरित्रभनी।

पहेकार होते. शास सात्र•ामी. করে বহু স্তুতি নতি। राष्ट्र महत्यात्रं, ७७ देनदत्यात्रं, गर्न भारत खनवीं । নংলায়ত আমি, হৈল গভবালি. भागवत्य कालीकांत्र। ्रेश गरायाहरू इरेश मन्धाः ক্রিলেন স্থবিতার॥ ভবের ভবালী, ভাষয়ে ভবানী, मर्था इति दादा मिक। 🦠 ছাবিয়া **অন্তরে, সং**য়তার তরে, পুত্ৰ ছয় পাঠাইব।। ामथ बित्रज, তুর্থ ভরত, মনরথ চিত্ররখ।

ত্ৰ বাছাসব, হইলে লাৰব. কর পূর্ব মনোরথ।। আমার বচনে, ভুব্ন ভবনে, কর সবে আভিসার। कलिक मण्डत, छह मञ्जी घटत. ১ল ছয় স্কাচার এ ্শাকে কর পূর, সাতে স্তত্ত্ব, असम् कहा भूगारा মীলার সভিতে, মানিবে প্রীতিতে, . इ.स. तिव स्टाटाः মাতে কোন জন, দেবিয় ওচন, গতিবারে শক্তি বরে। दिन्तिया हत्त. हटल इस छन, कारण इय मद्धी घरत।। এক কালে প্রায়, নহারাণী ন্যায়, দবে ঋতুমতি হয়। .चेमां, नासनां, ट्रांमपां, वतमां, ভবদা, জলদা ছয়॥ कतिकात वटत. गटव गर्ड ४८त. ত্রনি সুখী মন্ত্রিগণ।

(2)

এক দুই মানে, গার্ভ স্থাকাশে,
সরার প্রকল্প মন।
প্রাদেশ মানে, নাণীর আবেশে,
নীলামর স্থাকাশ।
প্রাদেশ রাণী, পুর চক্রথানি,
প্রেশ আলো করে বাস।
করি রপ গণে, আছিল যে কলে,
নাই প্রেশ মেল দুর।
এই নব রপ, ক্রম্প সর্গ্র

রাজপুত্র দশনে রাজার উৎসাহ

গৃষ্য। কি হলে কি হলে। দুই, কালাকাল কপ হৈছি।

মান চাহে নিৰ্যাপ, স্বাণি নিৰানিতে নারি এ

নয়ন ছুইল কাল, জনিবাধ হোল কাল,

ভান্য করিল কাল, বল কি করি। যদি বা

স্থানিং জ্যানিং জন্য নল হয়ে থাকিং

ইদ্যো কালারে দেখিং দুবা পাশ্রিঃ

ভাষা কছে সেই কাল, কেবল কুলের কাল লাভুৱা অগত আলৈ, স্থাপ নাগ্রি ৪

ल्लिक क्रम्

শিশু মুখ, দেখি স্থা, বাড়িল রাজার। ব্ছধ্ন, বিভয়ণ, কার্ল স্পার : ্ন্রেমাহর, পুত্র বর, পাইফা রাজন । ভাগ ভাষে, পুরুষ করে, গৌরীর চরণ ৷ প্রজাগণ, ন্য মন, স্থানি শুভ বানী। া হয় ভাষা, জগৰাস্থ, কীশা বেণ্ সংমি ॥ সাম হর। সপ্তার। কেল্বা বাজার। হুনে, চজ, শুনি অহ ধহা নাহি খায় গ তাসা ত্রী, ভেরী ভুরী, করন্নে নিস্কম। হর্যচিতে, স্থানিতে, সুবৈ নিম্পন । পুর নারী, মারি সারি, গিলা রাজ্যকে। রাহ্মত্ত, রূপান্ত্ত, দেখি ম**য় স্নেহে** গ অপ্রসং, কেখি রূপ, চন্দ্রের স্বরূপ। াহিবানে, প্রাণ হানে, দেখি মুদ্ধ ভূপানী ं तक्क, रूटत यम, क्र**्रिट** मन्में। (अ माग, अमुनाम, जीमनरगाह्य।।

মশ্বথ কাৰ্য

তারা পদ, কোকনদ, জানি মাত্র সার। ওমা তারা, নিরাকারা, করগো নিভার।।

মননোহনের স্থাগন এবং মন্যুঞ্জার স্বিগণের জন্ম।

্যা: ওতে হর শোগেশ্ব আর কেন যোগতনন . যোগেশ্বী নিরি রার থেশ্বাতে না দেখা কেন ঃ

4.43:

এই রূপে নিল জন্ম থথা মধ্যেত্ব।
মহানদে হৈল পূর্ন রাজার ভবন।
জ্ঞাতি বন্ধু আত্মপন্ন করি নিমন্ত্রণ।
প্রধাসার খাদু জব্যে করান ভোজন।
ক্রেনতে হইল ছয় মজির সন্তান।
মন্ত্রীবর্গ করিলেন বহুধন দান।
সপতি আনন্দ অতি করিয়া এবেণ।
সকলের গৃহে গিয়া করেন দর্শন।
বিই দিনে যেই মত কুলাচার ছিল।
সপ্র আর মন্ত্রিগণ ক্রমে সম্পূর্লি।।

দিন দিন বাড়ে শিশু পরম স্থনর। সিত পক্ষে যুৱা যেন হয় শশধর।। ছয় মন্ত্রীপুত্র **স**হ লাপন কুমার। একত্র রাখিয়া রাজা দেখে চমৎকার ॥ মন্ত্রী পুত্রগণে রাজ। সম মেহ করে। আপন আলয়ে সদা রাখে সমাদরে॥ ९०० च वन्त्रत ज्ञारम दत्रम हहेल । বিদ্যা অধ্যয়ন হেনু প্রবর্ত করিল ॥ ত্যাল কালে দেবী অন্তরে জানিয়া। ছায়। আদি দাসিগণে কহেন ডাকিয়া। কন্ সবে চল এবে অরুর ভবন। ৰণিপুৰে গিয়া জন্ম লছ সাত জন। ত্রন ছায়া, জ**ন্ম** গিয়া রাজার গৃহেতে। ১৬**হ্ম জা**ফ চন্দ্রকলার গ**ে**র্ডতে॥ अथना, रियनां, भीनां, भवनां, हशनाः। বাহ ছয় মন্ত্রীগৃহে মহ চিত্রকল। ॥ মম বাক্যে ছয় জন হগতে জয়িকে। একত্র ছায়ার সথি হইয়া রহিবে॥ কিছুদিন পর পাবে স্বপতি তথায়। इतात आमिटव श्रमः महेशा दर्थात ॥

গুনিয়া দেবির আজ্ঞা করিল স্বীকার। অব্নি গ্মনে হৈল সবে আঞ্সার !৷ তথা মণিপুরে চন্দ্রহংস নরপতি। র্বার ভার্ব্যা চন্দ্রকলা, পুরুষ ভগবতী ।। ছ। मजी नाडी मह (पनी शृक्षा करह। সবে ধরিলেন গর্ভ কালিকার বরে । शाहिला अधाल मता प्राची केल महा। करा - तर मकाल नित्तम महाश्राः॥ দশ্যাস দশ্দিন পূর্নিত হুইল। ত্ৰুদিৰে সন্থ নাতী ক্ষ্যা প্ৰস্বিল। দেখি গাজা নত্রী সহ হন্ চনৎকার। श्वामिद्राम देवय दल प्रशः का लिकात । এরপ খরগ নহে যে।লকলা যিথি। ভুবন জিনিয়া রূপ যেন সৌদামিনী !! স্থের সাগরে মর্ম রাণীর সহিত। **আছিল যে কু**লাচার কৈল রাজনীত॥ মনোমত কন্যা রাজা দেখি আপনার। <u> এমননুঞ্জরী নাম রাখিল তাহার।।</u> নিজ মূল রম্য নাম রাখে মন্ত্রিগণ। প্রশাৎ বর্ণিক সেই নাম বিররণ।।

শশিকলা সম যেন বাড়ে দিন দিন।
দিলি মন্ত্রীকন্যা যত খেলে প্রতিদিন।
অপরপ রূপ গরে রাজার নন্দিনী।
কিবা চারু কেশপাশ ভুবনমোহিনী।
জিনিয়া হরিত্রা চাঁপা বেলার বরণ।
লবার সমান রূপ হেরে মুগ্র মন।

मनदगहरनत दिनग्डत्त्र ७ भतीका।

বিদেশৰ প্ৰক্ৰিকা ভূমি লপ্ত হৈ ক্ষেত্ৰ। তথান্তৰ কি শান্ত কৰিল মন্মাছিল। এক এক গুণো গুণা মন্ত্ৰী পুত্ৰগণ। সকল গুণোৱে গুণী ভোষাৰ নকন।

SHT-1

মন্ত্রী পুত্রগণ সনে রাজার নন্দন। একত্রে করেন স্কুথে শাস্ত্র অধ্যয়ন।। ব্যাকরণ স্বৃতিশাস্ত্র কাব্য অভিযান। রাজনীতি আদি করি নিদান পুরাণ।।

अञ विका महाविका आकि यठ इस। ক্রমেতে শিখিল সহ রাজার তনয়।। মন্ত্ৰী পুদ্ৰগণ সনে সখ্যতা ঘটন। একত্রেতে অধ্যয়ন শয়ন ভেজন। ক্ষণমাত্র কেই কারে ছাড়িতে না পারে। সকলেই করে মান্য রাজার কুমারে 🖰 চতুর্মশ্বরে ভৈল নিংগুণ বিদ্যায়। তে এক ভাগে সবে জিনিয়ে সভায় :: क इति दक्षम विनय श्रम वर्द्धन । বিদার প্রীক্ষা শুরু করে সে কারণ !! সর্ব্ধ ৪নে বিশারদ রাজপুত্র জানি आभीकीम कहिटलग भिटत घटर श वि ॥ ছয় মন্ত্রীপুত্রের করিলা পরীক্ষণ। একে একে ফহি ত|র সকল লক্ষ্ণ।। ধন প্রর প্রধান সচিব কথাতির। তার পুত্রে দেখিলেন অতিশয় ধীর। নানাশাস্ত্র বিশারদ সর্বাগুণান্থিত! আশীর্মাদ করিলেন গুরু নথোচিত।। मञ्जूषे इदेरम छक्र माक्तार मरात। ্বীরঙ্গোহন নাম রাখিল ভাহার॥

মৃত্যঞ্জয় পুল্লে তবে ডাকি অনন্তর। শাস্তের প্রীক্ষা লন্ জিজ্ঞানে বিত্র 🛭 মৰ্কাপেকা শাস্ত প্ৰতি প্ৰীতি অতি তায় **জিজান্যোহ্য নাম করিল প্রচার** । ভৃতীয় চিকিৎস। পড়ু সঞ্জয় নন্দন। দেখি ওক্ত নামূ দিল। জীওণ্ডোছন।। চতুথ নিপ্ত চিত্রে জীচিত্রগোহন। পঞ্চ পারের পুত্র রহু পরীক্ষণ চ উভিত্যেছের মাম করিল তথ্য। रकं दाश टोल भारन अधि छलकनः। সতএব রাখে নাম জীরাগমে হন। সেবে লয়ে গেলা গুলু নূপতি স**ৰ্ম**া সিংহা**সনে** বসিয়া আছেন নরপতি। পুলুরে বদন হেরি প্রফুলিত মতি।। নগণ ত্যোজিয়া কি আপনি শশধর। ভূ**তলে আইল রাজা সভার ভিতর** ॥ এক দুটে চাহিয়া দেখেন সভাজন। পিতার চরণ বান্দে ঐীমনমোহন।। এণমিয়া করপুটে আছে দাওাইয়া। মন্ত্রী পুত্রগণ তবে রাজারে বন্দিয়া।।

নিজ নিজ পি চার চরণে প্রানিন। রাজপুল পার্ষে, ছয় জন দাওাইল।। মন্ত্রিক মহ; সূথ হইল র জার। মনে বুঝিলেন এ প্রদাদ কালিকার॥ হাসি মৰ্বজনে জিজ্ঞাসিল মহা ভূপ। কি বিদ্যা **শিখিলে সরে** বলহে স্বরূপ :: ু পরীক্ষা দিলেন গুলু ক্রমে সবাকার। गडांत्रम मकत्वई हत् हन् बन्दकाङ्ग ॥ রজমোহনাদি নাম প্রবণ কৰিয়া। অধাপকে কহে রাজা বক্ প্রশংবিয়া। গুণ বোগ্য গুরু নাম দিয়াছে সংর। তাজি হৈতে এই নাম হইল নির্দ্ধান । अञ्चलि शुरक्ष ज्दर मेरीभन महन অন্তঃপুরে পাঠাইল সকৌতুক মুনে,॥ মায়ের চরণে, রাজগুত্র করে মতি। পুত্র মুখ দেখি রাণী প্রফ্রিত; অতি ॥ মেহ ভরে রাণী ফীর দুয়া ভুঞাইল। ভোজমাতে সধা সনে বাহিরে আইল ॥ মন্ত্রণা করিয়া তবে সধাগ্র সঙ্গে। রাজ অ,তঃ। লয়ে মৃগয়ায় য়ান রাজ।।

নেথে ঘোরতর বন আনন্দ হার্ম।

সারত কানন্দ ছায় সথা নাজে রয়।

গঞ্জান্তরে গৃহে মাত্র করয়ে গদন।

লেখি তবে নিজ মনে বিচারে রাজন।

লানন স্মাণে এক আবাস রচিতে।

মাত্রিক নিজেন্ আছো কুমার প্রীতিতে।

আতি মনোহার কেলা আ বাস বিচারে

নাম দহ পুত্র তথা স্থান বিশ্বাস

মনবোহনের উদ্যান বন্ন।

শুন ওছে পাছে যদি আবাদ রচিবে। বলকুগুলিনী কানী থাছেবে গুগিবে।। শিশি আনি কান্য যত উদ্দেশ করিবে। ান রভিপতি সহ সদ বিছরিবে।।

शहा:

্জার **আদেশে ধনপ্র** মন্ত্রীবর। জপ্ত **সমিধানে চলিল স**ত্র॥

বসিগাছে রাজপুত্র স্থাগণ সঙ্গে। নান। বিদ্যা বিচার করয়ে সবে রদ্ধে॥ মস্তিরে দেখিয়া বহু সন্মান করিল। পপতির অভিপ্রায় মন্ত্রী জানাইল।। শুনি হর্ষিত হয়ে রাজার নক্র। মন্ত্রিক কহিছে তবে মধুর বচন।। মম মন যোগ্য হাহা জানিয়া রাজন ! নিজ মন্ত্রণায় মন্ত্রী করহ রচন।। কালিকা আলয় এক তথায় রচিবে। স্বৰ্ষয়ী কালিকার প্রতিমা স্থাপিবে।। এতেক শুনিয়া মন্ত্রী বিদায় হইল। কর্মো বিশারদ কর্মি অনেক ডাকিল।। নগরের প্রান্তে যথা বন সহিধান। বিচিত্র আবাস মন্ত্রী করতে নির্মাণ।। **एमित्र श्रमारम करतः** ऋषित्क मिछि । মণি মুক্তাহারে ভিত্তি করে স্বর্থচিত।। চন্দ্রকান্ত, সুৰ্বকোন্ত, পদ্মরাগ মণি। নীলকান্ত, মণি তার স্তম্ভেত্রগাঁথনি।। মুক্তাহার দোলে গৃ**হে অতি শো**ভা পার । নির্মাণ কার্যা কালী রাখিল ভাহায়।।

কুমারের আবিষি রচিল শিলিপাগণ। অতুলনা পৃথিবীতে তাহার গঠন। শ্রত, নীল, লোহিত প্রতরে ভিত্তি করে : চন্দ্রকান্ত, সূর্য্যকান্ত, রাথে থরে থরে : আবাদের অইদিগে পুষ্পের কানন। মল্লিকা, মালভি, জাতি, মুধিকা, কাঞ্চন 🗈 বক, কুরুবক, হচন্দাক মনোহর। পলাশ, রস্কনাশোক, জবাদি, টগর 🛭 गाना वन करवित, मन्क, मान्नात । বৰ্ঝিল্টা, পদ্ম, মূৰ্থী, পাঞ্চল অপার॥ কুন্দ, কোবিদার, নাগকেশর স্থানর। গোঁদাগ পারুলজবা, গোলাপ বিস্তর।। **मकानि, तक्षनीगन्ना, ऋर्यामनिगन।** দৰ্ক ঋতু কুন্তুম উদ্যানে স্থলে;ভন।। দই পার্ষে পুগতোনী হুনার্গ রচিত। প্রান্তে দেবদারু আর বকুল বেফিত॥ ভানে ভানে সরোবর স্থন্দর নির্মাণ। শ্বেত্তবৰ্ৰ প্ৰস্তুহৈ নিৰ্মিত সুসোপান।। সরোবর খারে বেড়ি পুষ্পা তরুনা। তার প্রতিবিদে মন করে আকর্ষণ।।

ক্ষল, ক্ছার, কুম্দিনী শোভে নীরে। ক্রীড়া করে চক্রবাক, চক্রবাকী ফিরে ! বলাহক, সারস্থান জলচর্পণ। সরোবরে ক্রীড়া করে দেখিতে মোহ্ম কুছরে কেইকিল, অলি করয়ে ঝন্ধার। সমূর মমূরী কেলি, করে অনিবার।। পঞ্চবাৰ হাতে লয়ে আপনি কন্দৰ্প। সদা সুসজ্জিত ২য়ে করে অতি দর্প।। বসতের মঙ্গে তথা মূর্ত্রিন রহে। সুক্ক সুক্তিগণে অনিলনে দহে।। এইরূপে আবাস রচিয়া **মন্ত্রী**বর। জান।ইল গিয়া মনমোহন গোচর।। শুনির। কুমার নিজ স্থাগ**ণ সঙ্গে**। উদ্যানে প্রবেশ করিলেন অতি রক্তে।। স্থান শোভা দেখিয়া মানিল চমৎকার। ধনঞ্জয়ে করিল অনেক পুর**ক্ষা**র 🖟 मन्दर्र शिल ७८२ काली महभारन । पिरियो वोडिल खर्थ मा **४८**तं नग्रत्म ॥ তবে ভারে ভার সব দ্রব্য আনাইল। ্পরে। হিত আনি দেবী প্রতিষ্ঠা করিল।।

পূপ, দীপ, পশ্ধ, মাল্য, বস্ত্ৰ, অলক্ষারে।

মত, মধু, নৈবিদ্যাদি, যোড়শোপতারে।

ছাগ, মেষ, মহিষ, অশেষ বলিদানাঁ।
নিয়মিত করি দিল পূজার বিধান।

নির্মিত আবাদে তবে আসিয়া কুগার।

আগদেন বদিল সক্তে সংগ পরিবার।

দেখিরা উলানে শোভা প্রাক্রলিত মন।

অট্যালিকা রক্ষাদিতে অতি স্থাশোভন।

भ्नत्भाह्रत्नतं स्वश्नातित्भ मनमू अतीत क्रिशा वर्गन ।

> মন মোহিল মন্মথ মোহিনী। অঞ্চলাতঃ ভূিৱ গৌলামিনী।।

> > जिल्ली।

কপে প্রকুমার, সঁধা সঙ্গে স্থিবিহার, বসবাস কুস্কম উদ্যানে। প্রেল মহামারা, বাঞা কালী প্রহারা, অন্য আশা নাহি করে মনে।

এক দিন নিশিযোগে, শায়ন করিল বোগে, চিন্তা করি চণ্ডীর চরণ। कुर्दे काकिनगर, वट्ट मन्ह ममीत्रन. ি দ্রা যায় রাজার নক্র।। श्राप्तां प्राथिन तरक, वसूधन नरत्र नरक, উপনীত হৈল মাণপুরে। प्रिंथ प्रदे तालशामी, मत्न हम कांत्र मानि, किरिक्न मकल दक्षुद्ध ॥ প্রিবীতে স্থান ভাই, মনিপুর সম নাই, পরম সূথান চমংকার। ,৫৩ কহি স্থা সচ্ছে, উদ্যানে প্রবৈশি রক্ষে, উথলে আনন্দ অনিবার॥ দেখে পুষ্প নানাজাতি, তাহার সৌরতে মাতি कन्मर्र्भातः कत्रातः छम्य । मथानन मटक लटा, तिर्तिष्ट सूथी रहा, সেই স্থানে রাজার তনয়॥ চত্ত্রংস নরপার্তী, মণিপুর অধিপতি. ্ঞীমন্মুঞ্রী তার সূতা। আচ্মিতে তাররপ্র, স্থা সঙ্গে দেখে ভূপ

- उप्तारन **का**रेल संख्या ॥

समार्थ कावा।

च्ट्रात रक्षरगार्ग शतिहरू।

্যা। কিবে রনিক রসিকা বিহরে। অনক্ষেতে কল
লীহবে।। জ্যান হানিয়েল, সাধি নিজ কাল,
লাভ ভয়ে আরু কি ক্রে।। সময় পাইয়া,
মদমে মাজিলা- কুলু কুলু কুহরে। রুমো গ্ল পর, ভাধরে ভালে, ভামর অমরী পঞ্জেলা।
রুমের ভরজে, ভালি মানার্থেন লালাল মন্ত্রী মন্ত্র; স্থিলিল সেলি, করে নালা কেলি, ভামজের অল স্থেন্থ। ছেরি প্রন্ন

भाग ।

রাজপুত্র তারে স্বপ্নে দেখিছে যে রপ।
রাজকন্যা রাজপুত্রে দেখে দেইরপুরা।
কিছুমাত্র বৈলক্ষণ্য নাহিক ইহায়।
সমস্প্র দোঁহাকার কালীর ইচ্ছায়।।
স্বপ্লেটত কুমার, কন্যা-রপ নিরহিয়া।
বিহুল হইয়া পড়ে অবৈর্গ্য হইয়া॥

এীমন মোহন রূপ হেরি রাজকন্য। ধৈৰ্য্য হরি ধরণীতে পড়িলেন ধন্যা।। किक्षिः विचार्ध कित ८ हित मूहे अन। অনিমিথে দোহে হেরে দেছোর বদন 🗵 **उटत गनगु अ**दी इहेश जकाछत । সূদুস্বরে কুমারে জিজ্ঞানে যুড়িকর। কে তুনি কানিনী চোর ছেখায় আইলে। किंदिकरण गर द्वान इतिशा लहेरल ॥ ভক্তিভাবে বেই আমি কালি পুজিলান। সেই কলে হেনু পতি বুঝি পাইলাম।। চন্দ্রহ্ম ভূপ মণিপুর অধিকারী। **িনন্মুঞ্রী আনি তাহার কুমারী**॥ কি নাম তোমার কহ তনয় কাহার। विधित घष्टेमा हैश कानिलाय मौत।। এতেক শুনিয়া রাজপুত্র তারে কর। শুর ও রাজক্মারি মম পরিচয়॥ কলিক্ষাধিপতি স্কুদেন গুণধাম। र्डात छूठ क्रीमनरमाइम मम साम।। षाकि यामि ७७ स्वार्ग दिश आहेलाय। ় ছেল।র অমূল্য রত্ন দৈবে পাইলাম।।

উভয়ে উভয় মন আক্ষিত ছিল। বাক্যের কৌশলে স্থখ অধিক বাড়িল। কন্যার সঙ্গেতে ছিল সুখী ছয় জন। माला जानसम ছाल केल निर्माणम ॥ ইভিতে বুৰিয়া স্থিগণ মালা আঁনে। ছলেতে রাখিল রাজপুত্র <mark>সন্নিধানে</mark>।। र्रुड्द इमिक गांगतः दमदानि । দিল লয়ে মালা হাজক্মা গলে হাসি ত্রে আর মালা করে লয়ে রাজবালা। বড় বড় গলে তুলৈ দিল বরমাল । দোহার বিবাহ দোহে হর্ষিত অতি: স্থমিলন দুইজন যেন কাম রতি।। দেখি দোহাকার বিভা মুখী স্থিগণ। উত্তৰ বিষয় বটে ভাল এ স্থপন।

মনমোহনের স্বপ্নে বিহার।

দৃষ্য । কি হেরি অবলা বুঝি আর মাছি ছেরি। ভড়িতেরপ্রঞ্জ কিবা নর সেছে আছে ছেরি।।

कुनक इस्त ।

় হ'জ অঙ্কা যবে মনে প্রমোদ মানিছে। পঞ্বাণ করি সন্ধি মর্ম তার হানিছে।। বোর বাড়বানলে নিতান্ত অঙ্গ দহিছে: মৌনভাব মানদে নবীন অঙ্গ চাহিছে।। পাদ অত্র ভূমিতে নথে লিখি ধনি ধরা। অলিবর্গ ভাব জানি কৈল তণ্ণা সুত্বরা।। ভূপ নান্দনী তথায় রাখি মোদ অন্তরে। হাসিয়া কহে বরে চলপ্রিয়া গৃহান্তরে॥ এীমনমোহন হাসি গৃহ মধ্যে যহিয়া। তল্প মধ্যে কামিনী বার **সঙ্গ** পাইয়া॥ সাদরে সমানতের ধরি প্রিয়া করে করে। क्षामा क्लेज्कामि कावा नागरतस्त्र जाहरत। নব্য রঙ্গ হেতু কামিনী মনে সলজ্জিতা। সাধনে অনেক শেষ হৈল লাজ জজ্জিতা।। নাগ রঙ্গনার কাম ভুঞ্জিছে বিনি তর।
প্রেমঃজ্জু বান্ধিছে স্থবন্ধনে পরস্পরে।
ভূপ মানসে দুঁদুঁহার কেলি কে,ভুকে।
ভোরিছে প্রপূর্ণ বাসনা করে স্পকৌভুকে।
স্প্রেমাণে রঙ্গ ছাদ ভূকে প্রকাশিয়া।
ভাবকে কহে বিচিত্র নব্য কাব্য হাসিয়া

মনমোহনের মুক্ত্র

भानटकाम बादा । जान इति।

ইমন হাণিয়া হরিল আমার প্রাণ বিধুনননী।
কিবা শোডা ভারে কুন্তলের ভারে নিনিড়
নিরদ জিনি ॥ ডুক শরাসন, তাহে কালাস্তন,
গঞ্জবংগ বিনোদিনী। আকর্ণ পুরিয়ে, ভুজ বিনে প্রিক্তে, সন্ধান করিছ গনি ॥ প্রভাতে অক্তা, যেন দীওমান, ভাবণে কুণ্ডল গুণি।
হরিষে কুণ্ডল, হানয় কমল, প্রাল্ল হয় তথানি ॥

ं शक्ता

প্রথোগে বিহরর হৈয়ে সুম্পন। আচ্চিতে নিদ্রাভঙ্গ হৈল মনমোহন।।

আঁখি মৃদি নৃপস্ত ভাবে অতিশয়। সত্য কি স্বপ্ন ইহা না হয় নিক্ষ।। ভাবিল সাগ্ৰত নহি আছি প্ৰিয়াসস্ ইহাই ৰপন যাহ। বে!গ্ৰিড়াভল॥ এত অনুমান করি নিশ্চয় করিল। গ'র্মে রাজকন্যা ভাবি হস্ত বাড়াইল 🔻 থিয়ার না গায়ে পড়ে পড়িল শয্যায়। চৰকীত হয়ে তবে আঁখি মিলি চায় : তথন জানিল নিজ উদ্যানে শয়ন। ক্রীড়া যে করিয় সেই হইল থপন ।। মতন মুদিয়ে পুনঃ-দেখিবারে চায়। ক্ষণ মত্র তেয়ে থাকি করে হার হার।। নাম ধান রাজপুত্র সকল ভূলিয়া: খাটে হোতে পড়ে যোর নিশ্বাস তেজিয়া।। নিশাবুসের শব্দ যেন প্রদক্ষের বাড়। অচেতনে পড়িল হইল অঙ্গ জড়॥ तम-यार्नानि मद्द गृहास्त हिल। শব্দ শুনি ত্ৰন্ত হয়ে স্মীপে আইল ॥ **দেশে** রাজ-তনয় হইয়া অচেতন। ভূমে পড়ি আছে কিছু না কহে বচন।।

নিশাদের অনুভব, কিছুমাত্র হয় বিপদ ভাবিয়া সবে পাইলেন ভয়।। বন্ন সিঞ্চন করে স্থাতিল নীরে। আছু বস্ত ব্যক্তন কর্ম ধীরে ধীরে॥ বহু **যত্নে রাজপুত্র নয়ন মিলি**য়া / কিছুই ন। কহে মাত্র দেখয়ে চাহিয়া।। না হেয়ে ভাষিনী মে কামিনী রূপবতী। पूनर्कात मूटन शांधि न। कटर डाइछी॥ পুনঃ পুনঃ স্থাগণ যত জিজাসিল 🕆 গচেতন ন্যায় রহে, উত্তর না দিল।। বিষয় সঞ্চট নবে ভাবিয়া মনেতে: এহান্তরে গমন করিল সকলেতে। রাণী স্থপে জানায় অশিব সমাচার ব্যাকুল হইল ছবে, দেখিয়া কুম ব.। রাণী নিজ শিলৈপরি করাঘাত করি। পুত্র কোলে করি কাঁদে বিলাপ আচরি ॥ যতনে চেতন করি যত জিজ্ঞাসিল। কুমার কাহাবে কোন উত্তর না দিল।। पूर्व्यात नमन मुनिया स्मीटन बट्ट। পুত্র দুখে রানী: স্থপতির অকু দুহে॥

রাজপুঞ্ নেত্রমুদ্রি ভাবে অনিবার ছাড়িয়ে ভোজন নিদ্র। খেদিত অপার!! তিন দিন উপবাসী করি দবশন। क्रममे क्रम्म करत ज्ञारव गर्सक्रम । কি হলো কি হলো হায়। ভাবে নহারাজ উপায় জিজ্ঞাসা করে সভার বিরাজ !! নিত্য আসি দেখে রাজা পুত্রের বদন বাক্য না গুনিয়া হয় বিষাদিত মন ।। **४५ कियाम मार्य शिर्मन (क्थिया)** ছয় স্থা মাত্র কাছে আছুয়ে বসিয়া ক্রমে ক্রমে রাজপ্ত মিলিয়া নয়ন। দৈখিলৈন নিজ পালে সধা ছয় জন।। নয়ন প্রকাশ দেখি সুখী সখা ছয়। আনন্দিত মনে সবে মুদুস্বরে কয়।। বুঝি নিশা স্বপ্রভাত আমা স্বাকার। জাঁখিতে দেখিকু জাঁখি কমল তোমার॥ কি কারণ প্রিয়সখা ছইলে এমন। প্রকাশ করিয়া কছ তার শিষরণ।। (य, बाड्या क्रिंडर, छोरा व्यवना भानित। প্রাণ দিয়ে হিত হয় তাহাও করিব।।

স্থাগণ বাক্য শুনি রাজার নন্দ। আশাস পাইয়া তবে করি সম্বোধন।। ক**হিল, হে সখাচ**য় সেই বিবরণ। তোমাদের সনিধানে প্রকাশি এখন।। म निभि छेम्रांति आभि क्रिया भारत। স্থ্যে তোমাদের সহ করিয়া গমন।। রম্য এক দেশে, রম্য উদ্যানেতে গিরা। जुलिलाम त्रमा। এक तामादत प्रितिशा॥ রূপে জিনি রতি সেই রাজার নন্দিনী। প্রাণ মন নয়নের আনন্দ-দায়িনী।। গান্ধর্ক বিবাহ আমি করি তার সঙ্গে। রতি **রস ভুঞ্জিতে ছিলাম অতি** রঙ্গে॥ অক্সাৎ নিদ্রাভঙ্গ রঞ্চ হারাইয়া। ব্যাকুল ইইল মন আর না হেরিয়া।। কি কহিল কিছুই না, জানি তার পরে। जनमी कुन्मन गांव छनिनाम पर्देत ।। मूक्ट थत कार्तन मथा (मथर ভाবিয়া। এত বলি চক্ষু মুদে নিখাস ছাড়িয়া।। मर्थाभन याद्य मय कब्रिटल वर्दन । আদ্যোপান্ত বিষয়ণ করিয়া প্রতণ ॥

व्यान्ध्यं इहेन मत्त मनिन नपन ! সকলে মিলিয়া যায় রাজার সদন ৮ প্রণাম করিয়া কহে সব বিবরণ। শুনি রাজা ধনপ্রয়ে জিরোসে করি।।। মনে ভাবি মন্ত্রীবর কহিল রাজারে। ফেন স্বশ্ব মিথ্যা কি কখন হোতে পারে গ রাজা বলে কর ত্বরা যে খাকে উপায়। যতু কর হাহাতে কুমার স্কুছ হয়। শ্ৰীমনমোহন যদি সুত্ৰ নাহি হয়। অর্ণ্যে প্রেকেশ আমি করিব নিশ্চম।। এতেক বলিয়া দীর্ঘ নিশ্বাস ত্যজিল। সনদূথে মন্ত্রীবর কোটালে ভাকিল ॥ কোতোয়াল যেন কাল রণসিংহ নাম। যোড়করে মন্ত্রীবরে করিল প্রণাম ॥ মন্ত্ৰীুকহে কোতোয়াল ওন সাবধানে এই আঁত্তা প্রকাশ করহ সর্ব ছানে॥ ভিন্ন দেশ বাসী যে আসিবে. এই দেশে কহিবে সে দেশবার্ত্ত। কুমারে বিশেষে।। श्रिटि देश दक्किक केवर निरम्भाकन । সক্তে করি **অ'নে ফেন** ভিন্ন দেশি-জন।

কোতোরাল করে কর্ম আজ্ঞা জনুসারে।
হানে স্থানে নিয়োজন করিল সবারে।
বিদেশী পাইলে, কুমারের কাছে আনে।
স্থাগণে কহে রাজপুত্র সন্নিধানে।
দেশের বিবরণ কুমারে শুনায়।
মনোনীত কথা কিছু কোথাও না পায়।

যনমুঞ্জরীর স্বপ্ন ও নিদ্রাভক্তে বিলাপ।

ে শুন ছে নরপতি খ্য নিবেদন।

মনিপুর যাব আছে। কর্ছ রাজন।

जिशमी।

তবে গুণাকর কর, সর্বেশ্বর ঘলালার,
বিবরণ গুন চমৎকার।
নিগুর অবিপতি, চন্দ্রংস নরপতি,
শ্রিমন্মুঞ্জরী কন্যা তার॥
ছয়দল্লী তার হয়, নাম কহি নহাশায়,
নরপতি, গণপতি আর।

বলপতি, দলপতি, **জয়পতি, ম**য়পতি, এই ছয় সচীব রাজার॥

এছারে ছয় কন্যা, ক্রপে গুণে মহীধন্যা, সর্ক্রোষ্ঠা শ্রীরসমুঞ্জরী।

দিতীয়া ভানমুঞ্জরী, তৃতীয়া গুণমুঞ্জরী।
চিত্রকারি ঐচিত্রমুঞ্জরী।

পঞ্চমা রতুমুঞ্জরী, রত্ম ন্যায় সে স্থন্দরী. জ্রীরস-মুঞ্জরী আদি ছয়।

সদা সকৌতুক মনে, রহে স্থতি ভবনে, রাজকন্যা স্থি সবে হয়।

স্থিগণ লয়ে সঙ্কে, ত্রাজকন্যা আছে রক্তে. আ্চ্ছিতে শুন চম্বকার।

গৃক্তের কথিত রূপ, দেথে স্বপ্ন অপরূপ বিবরণ গুনিয়াহ তার।।

পুরুষ নম্মথাকার, উদ্যানে আইল তার, গান্ধর্ক বিবাহ তার সনে।

সহিত রসিক পতি, নানা রঙ্গে রসবতি. ভুঞ্জে রভি সকৌতুক মনে॥

ময়থের হয়ে বশ, বিহরিছে রতি রস, হেনকালে হয় নিদ্রাভস।

নাম ধাম বিশারিয়া. ঘনচাতে চমকিনা, কাঁদে আছাড়িয়া নিজ অস ॥ সদা করে হার হার, সঙ্গিনীগণেরে তাড়-যত কিছু জিজ্ঞাদে করিণ। কিছুই না কহে ব্যুণী, শিরে করাঘাত হামি, अि थिए कत्राः दाम्म ॥ ক্ষেক হড়ের পরে, ধরি সন্ধিনীর করে, নিজ শ্বপ্ন রভান্ত কহিল। ভূমি সূবে ব্যক্ত হৈয়ে, রাণীরে কছিল গিয়ে ক্ৰয়ার বিতথা জানাইল।। চন্দ্রকলা মহারানী, ক্মার বিতথা জানি, ধাইয়া গেলেন দেখিবারে। मना प्रिचि बाजवानी, श्राम विश्रम गानि. বিবরণ জানায় রাজারে॥ চন্দ্রহৎস নরপতি, শুনিয়া কন্যার গতি, অতি ব্যথা ছাদয়ে পাইয়া। একামাত্র কন্যা তাঁর, কন্যা পুত্র নাহি আর, তার দুঃখ দেখিলেন গিয়া ॥ দেখি অতি থেদমনে, আসি নিজ শিংহাসনে,

মন্ত্রীসনে মন্ত্রণা করিয়া।

হেন অপ্র মিথ্যা নয়, করি এই স্থানিকর, অন্বেষণে দুত পাঠাইয়া॥ সর্বরাজ্যে দূতগণে, পাঠছিয়া দুঃখ মনে, স্কুদাম আক্ষাণে ডাকাইল। বিনয় করিয়া রায়, বিবরণ কহি তায়, অন্বেশ হেতু পাঠাইল।। পুরোহিত সহোদর, স্থাম ব্রাহ্মণ বর. চলিলেন বিদায় হইয়া। ভ্ৰমিয়া অনেক দেশ, তথ্য না পাইয়া শেষ, উত্তরিলা কলিকেতে গিয়া। (पिशा दिए गिक्स, जिड्डाटम त्रक्रकशन, কোথায় নিবাস মহাশয়। ক্ষ্টে মণিপুরে ঘর, শুনি ক্ছে অনুচর. চল যথা রাজার তনয়॥ সুদাম জিজ্ঞাসে কথা, কি হেতু আমারে তথা চাহ তুমি লইয়া যাইতে। সে সব কহিল তবে, ভাবে দিজ অনুভবে, বুঝি পাব, চেষ্টা বা পাইতে॥ বিপ্র গিফ ভার মঙ্গে, উপনীত হয়ে রুছে,

দেখিলেন রাজার কুমারে।

নিরথিয়া রপ তার, মনে জানিলেন লার,

অনুকুলা কালিকা আমারে।।

কেথা বসতি করিয়া, চুরি করে তথা গিয়া,

বিশ্তোর ঘটনা দুফরর।

রজিলাম তার তথ্য, এপুরুষবর সভার,

মুপ্তরীর হাদয়-তক্ষর।।

বসক প্রণমি কয়, মন্ত্রীপুল্ল মহাশয়,

পরিচয় লহ এ জনার।

ংখানে আইল শেষ, শ্রমি নানা নেশাদেশ,

র্ঝি ইছা দুলা কালিকার।

भनमू अतीत मध्यान थानि।

ইমনভূপালি তাল হরি:

্যা। প্রাণ কেমন করে, কছিব কারে। কে করে ভারে। দিবা নিশি ভাসি আমি নয়ন নীরে।। প্রীভিডি আমিয় যদি জেনেছি সম্ভাবে। বিষ কি করিল দোঘ বলনা মোরে।। ধকমনে শরলা অভি বলে অবলারে। পাষাণো বরণ ভাল মুম বিচারে॥

भेम्र ।

ত্রাদ্ধণ দেখিয়া, মন্ত্রীপুত্র প্রণমিল। কোথায় নিবাস বলি জিজ্ঞাসা করিল।। বিপ্র কৰে মণিপুর দেশে স্থিতি হয়। স্কুদাম আমার নাম গুন মহাশয়। মণিপুর নাম গুনি রাজার নক্ষ। मूर्णि व्यन् मिलि व्याटक विष्युत वाहन ह **রাজপুত্র বলে তথা কেবা অ**ধিকাৰী। সে দেশের কথা কহ আমারে বিস্তারি॥ বিপ্র কছে প্রশু বেই, জিজ্ঞান্য ভোমার। সেই হেডু দেশে দেশে ভ্রমণ আমার।। সে দেশের রাজা, চন্দ্রহংস গুনধাম। তার কন্যা প্রায়ন্মুঞ্জরী তার নাম।। এক কন্যা খাত্র কন্যা পুত্র নাহি আর। স্বপ্নে দেখিলেন কন্যা জতি চমৎকার॥ মশ্বথ আকার এক পুরুষ রতন। স্থ্রযোগে তার সহ হইল মিলন।।

ইহা ভনি রাজস্বত অধৈশ্য হইল! পূর্ব্য বাহা অনুমত সকলি মিলিল। আন্দেক ক্রন্দন করি কহে সবাকায়। ঐক্য করিয়াছে বিধি এখায় তথায় ॥ মনচুরি করি যম এইত কামিনী। ্লামা সহ বিহরিল সে স্বধ বামিনী। তাহা বিনা দেখি আমি সব অন্ধকার সেই বিধুমুখি কি পাইব আরবার। হায় পূর্ণ চক্রাননে আছহ কোথায়। তোমা বিনে প্রাণ নাহি দেহে রাখা ৰায়।। অতএব দয়া করি প্রকাশ করিছে। আমার চাক্ষ হয়ে দর**শম দিবে**॥ এইরপ বহু থেদ করিয়া অপার। বাক্য সম্বরিল নেত্রে বহে জলধার॥ সুদাম বলয়ে আর খেদ কি লাগিয়া। নিজপ্রিয়া পাইবেন মণিপুরে গিয়া। যনোনীত কথা শুনি রাজার তনয়। খেদ ত্যজি হইনেন প্রফল হাদর।। কহিল বদ্যপি পিতা না দেন বিদায়। কেষনে তথায় যাব কি হবে উপায়।।

স্থাগণ করে তুমি খৈষ্যকর মতি। বুঝাইয়া লইব রাজার অনুমতি॥ কথা শুনি রাজপুত্র আনন্দ পাইল। তার সুথে সবাকার সুখ উপজিল ৷৷ মন্ত্ৰীপুত্ৰ হৰ্ষচিত্তে নৃপাণ্ডো আইল। প্রফুলিত দেখি রাজা তারে জিজ্ঞাসিল।। কুমার আমার কি হয়েছৈ ব্যাধিষুক্ত শতুবা তোমারে কেন দেখি হর্ষযুক্ত ॥ **্রাণ্য রভান্ত রঙ্গগোহন ক**হিল। শুনিয়া আনদে রাজা অধৈষ্য হইল।। বিপ্রগণে ভাণার করিল বিতরণ। বন্ধ উপচারে পুজে কালিক। চরণ॥ প্রফুল হৃদয়ে পুত্রে দেখিবারে যায়। পথে মন্ত্রীপুত্র কহে মৃপতির পায়।। যদি মণিপুরেতে না পাঠান তদয়। পুনশ্য তাহার পীড়া বাড়িবে নিশ্চয়॥ শুনি রাজা ধনঞ্জুয়ে জিজ্ঞাসে কারণ ৷ ক্ষে মন্ত্রী যাইবারে না কর বারণ 🛭 কারণ জানিয়া রাজা দিলা অনুমতি। পুত্রের সমীপে আইলেন শীত্রগড়ি॥

রাজ আজ্ঞায় মনমোহনের মণিপুরে গমন।

মদিরে একান্তে বাছ। মনিপ্র যাবে।
নাব মাথা থাও বাপ হরায় আদিবে।
কাইন্ নিভাৱে পুত্র নিক্তর জানিবে।
বিলয় কবহ মারে দেখিতে না পাবে।

अमा।

मयार्थ थिडारत एकि मलु स्म नक्त हिंद्री कितल हाँत हतन तक्त ॥ भिरत हम किया ताला मध हम लिल। लिति पूक्त मूम स्ट्रित कुड्रल॥ महातानी छेनिन्ना थूटल्य ममाहात। अख्यात स्टिह भाग निर्वा कामिना। विस्तल अख्रत तानी छथात्र कामिना। थूलकाला लहेलन कामिना काकिना। तालथूल मांड्रिम किना माहरत। थम्भूनि लिता तार्थ निक निर्ताथरत।

পুট্রের আনদে রাজা আনদে ভরিয়া। কহিতে লাগিল তাবে আশাস করিয়া । যদিও প্রমাদ গণি তব অদর্শনে। তথাপি না পারি তব ইচ্ছা নিবারণে। স্থদাম ব্রাহ্মণ, স্থাগণ সঙ্গে করি। মণিপুরে যাবে বাপ সাজাইয়া তরি।। আমাদের ত্যাগ করি বিদৈশে গমন। করেছ একান্ত তবে যাইবারে মন।। শীত্র করি আদিবেক বিলম্ব না হয়। চিত্তিত রহিন্ত মোরা জানিবে নিশ্চয়।। এরপ প্রবেগি ভূপ মলিন বদনে। নৌকা সাজাইতে আজ্ঞা দিল দাসগণে।। যদি মণিপুর দিশাসের প্রাক্ত্যা। তবু বৰ্ষ ভোগ্য নৌকা পুৰিত কয়য়।। সকল সম্ভারে, ডিক্সা থানি সার্জাইয়া। भिक्टे जल वस् भीटल फिल डेवारेश।। বড় বড় পাত্রে জল রাখে ধারে ধারে। য**়ে** মাজাইছে ডিকা যেশা বত পারে॥ था है निश्हानन आफि बहलक नात। খেলিবার ধেলা সব অনেক প্রকার॥

সঙ্গীতের উপযুক্ত লয় যন্ত্রটয়। বেণু বীণা আদি করি ষাছা মন লয়। स्मञ्ज जिन्नात नष्का कति मर्सकत। ম্পতিরে সকল করিল নিবেদ্ম।। পুত্র যাবে বিদেশে রাজার নাহি সুখ। কাদিছে প্রধান্ত রাণী হয়ে অগ্রন্মুখ।। মন্ত্রী আর মন্ত্রিনারীগণ দুখোচিত। রাজ্যের দকল প্রজা হইল দুখিত ৷৷ নিরূপিত দিনে তবে রাজার তনয়। রাজার স্থীপে চলে সঙ্গে স্থাচয়।। সমস্ত রজনী রাজা করি জাগরণ। রাণী সনে করে প্রাতে কথোপকথন !! অদ্য করিবেক পুত্র বিদেশ গদন। এই বাক্য कें**डिं** দোহে विश्वापिछ भन ।। यमनुः तथ উভয়ের । भारत नीत गरत। **(इनक्टिन मश्रजन धन्दम त्राजा**दत ।।

মনবেশিক্ষের মনিপুর যাত্র।

ভীম পলাসি বাহার, তাল জলদ তেতালা ।

গুলা। বসন্ত সমুত্র সম তার অর্থ বুল অনুমানে।

ফুলতরি অলিগণ, নাবিক তাতে বাধান,
কর্ণধার রতিপতি তরঙ্গ প্রনা। হিমাংত প্রকাশ তায়, কোকিলেতে সারি গায়,
অতি সমধ্র স্বর তনিতে এবণে।
সংযোগি সে তরি পর, জনায়ানে হয় পার,
ক্পার পাথার বোধ বিবহি তনে।

स्यु जिशनी।

কহে নরপতি, কুনারের প্রতি,
যাবে মণিপুর দেশ।
তোনার বিচ্ছেদে, অভিনয় খেদে,
বুঝি হবে প্রাণ শেষ।
জনক জননী, ত্যক্তি গুণমণি,
দূরদেশ তুমি যাবে।
বিলয় করিবে, নিশুয় জানিবে,
আর না দেখিতে পাবে॥

তবে মাজা ভার, কাঁদিয়ে অপার, কহে তারে কোলে করি। তাজিয়া আমায়, यहित काथाय, না দেখিয়া যাব মরি।। ত্বত বাপ মায়, জানেক বুঝায়, ° কান্ত শ্রুক্সের লাগি। হ্রে, ছির যতি, দেহ অনুমতি, **ठ**রণে বিদায় মাণি॥ **ত**टर महातानी, वाका पृष्ठ कानि. कानिता कानिता कर। ৰপু জায়ে খারে, জাসিবে সভুরে. विजय (यन ना इग्न। यन दिवास कार्य, विकास दिवास विकास मार्थ, করিছ কালিকা ধ্যান। তথনি অভয়া হইয়া সদয়া, করিবে তোমারে তাপ।। এতেক কহিয়া, জীদুর্গা সারিয়া, तका वांधि किल (क्ला। क्रमक क्रमसी, विक्रिया उपनि, **एटल मनिश्र इन्ट्रण** ॥

4

£48.

স্থা সমুদায়, পিতামাতা পায়. অনুমতি লয়ে সবে। 'কুমার সহিতে, চলে ছর্ষিতে, ডিন্ধায় গেলেন ভবে !! সাজান ডিকার, কি কহিব আয়, रगन वास्कर्ण यात्र। বসিবার হয়, অতি মনোছর, - চক্রাজ্বে শোভা পায়।। স্থাগৰ সাথে, বদিল ডিঙ্গাতে, कुशात, छ्रांच लेटा। बान डेर्फ नाथा, डाविजिहा कथा, जिन्छ। मदम त्रदम त्रदम ।। দে কচে স্বরায়, পাইবে তাহায়, অধিক বিলম্ব নাই। এতেক কহিয়া, কাণ্ডারে চাহিয়া, কহে ডিঙ্গা খুল ভাই॥ ্ছরি ছনি করি, ু খুলি: দিল ভরি, े क्षेत्रज्ञ अभिन रहि। छाते त्रांगे हत्न, जामन उथरन. काली क जी भटन करन ॥

दह (मण शांत, इहेल कुमांत. मिया निर्मि **চ**रल छति। কভু গার গাঁভ, ্মধুর সংগাঁত, क्ष (थटन श्राह्म) क्रिया • जटन मागुमरत, हरन दूथ छटत, रक् णिति मुद्दे शाटम । দেখি বহু স্থাম, তবে বর্দ্ধান, **बारम किथि गरव हारम** ॥ প্রণমি তথায়, मर्द्धमञ्जाहा, गर्क मक्रमाद्ध त्राहा। করয়ে প্রার্থনা, পুরুষ্য কামনা, যাতে এ যাতনা বায়।। এতেক কহিয়া, চলয়ে রাহিয়া, ক্ত আম রাখি দূর। ্রাথি সুত্তুর, नङ्घन**्र**क् मिक्तितहरू भेखू शूद्धः॥ লিক শৃত্তু নাথ, করি: প্রাণিপতি, क्रांति हरन कड़ आय। কৰে ছারা ছারি, ্রিকাহরে কাভারি, लिहिर्स किय हेमांम ॥

. 'b

वाहिया बाहियां, जाक्ती शहियां, गटेखाव इक्ल मन। निटन शकाकन, शतिश विर्माल, रहेटलन मंद्राक्षन ॥ স্থােশ হাম, করি যতিমান, कानीचाटि आित भटत। कालिका চরণ, कतिया शूलम, **व्हिल्स सूथ छा**त ॥ मिन्नु डागीहथी, नजरम सम्बद्धि, गरामरम् कति याग। ঢাপিয়া ডিন্সায়, সুখে দবে ধায়, কতু প্রেলে কতু গান।। **जिन्ना विद्या हत्न,** श्रूथा कि खेश्रान, शांत रहत वह मण। নীলাচল স্থাম, করি মনুয়াম, स्टेन ज्यानम् द्वम् ॥ জ ইন্টা পড়িয়া, প্রাণাণ করিয়া, जगकाच अहत्रत श्विरतील यम, सनि मर्सकन, विन क्षेष्ट्रक बेटन ॥

এইরপে চলে, তবে কর্মনলে, বিপদ ঘটিল ভার । যোর ঘন বাত, বহে অক্সাত. দিনে হলো অন্ধকার।। (यात्र स्थिशन, कतिरह शक्तन, যন ঘন বজাঘাত। না পারে কাঙার, সামালিতে আর, ভায়ে জড় পদ হাত।। রাজপুত্র কান্দে, ছিরু নাহি বান্দে, ভাবি রাজকন্যা ব্য**থা**। মরি নাহি দায়, 🌎 🍅 শার তো মায়, কহিবে ভোমার কথা।। আমার বিরহে, তব প্রাণ দহে, কেয়নে শীতল হবে। কর কি উপার, কিন্তুল এই দায়,

कृष्ठि यस क्षांत तर्य ॥

गनरेगांश्ट्रनतं क्षेत्रपात ताटका श्राट्यमा

ধ্যা। কোথী মা কুলকুওলিনী। তথ অকুলে-পড়েছি ফুলংদেছি দেহিছে জননী।। এদিন অধীনেই সহল বিহীনে, দিনময়ী গুৰু ভাৱ ভাৱিনী।। এমা ভ্ৰপাৱাৰাত, ভাৱা জানে সার, ভাষার চরণভ্রনী।।

9793

প্রান গর্জন সম গর্জে জলধর।

ডরনি তরণ ত্রাসে সবে সকাতর।

রঙ্গনাহনানি সথা কাদিয়া কাদিয়া।

কুমার প্রবোধ করে অভির হইয়া॥

ছির না হইল সেই ঝড় খোরতর।
লও ডও ডিজারে করিল অভংপর।।
আছাড়িয়া কেলে লামে প্রেতের গায়।

থও থও হরে ডিজা ভাজিল তথায়।
নিরপণ নাহি হয় কে গেল কোথায়।
অতজন মাত্র অভ গও কার পায়॥

বাজপুত্র, সার, তার, সারা, হয়ক ন। সাতে সাত খত এক স্থাম ভান্ধ।। ঢেউ লাগি কেবা কোথা হইল অন্তর। ना प्रत्य काकादत दक्क कादव अनस्तर ।। दाम्युख উक्टिश्यद्व कदम् जन्म्त्। 'অকুলে পড়িয়া ভাবে কালীরঞ্জন।। সামান্য তরণি মম হৈল ছারখার। চরণ তরণি দিয়া রাখ-মা এবার ।। বলিতে বলিতে চেউ রাথে লয়ে ধারে। তটেতে উঠিয়া চাহে না দেখে কাহাতে।: কি করি কোপায় যাই করে **অনু**মান। দিবাকর <mark>করিলেন স্বস্থানে প্রস্থান</mark> ॥ ভাবিয়া উত্তর মুখে গমন করিল। নগর কি**ঞ্ছ দুরে দেখিতে পাই**ল।।• **श्रिग्नात् वितंह, श्रिग्न प्रशांत विरम्ह**म्। ভাবিয়া বাড়ি**ল আ**রো অতিশর ধেদ।। मनमूर्थ मिहेशद्थ शंभन कतिया। নগরের ছারে তবে উত্তরিল গিয়া গ পরম স্থানুর রূপ দেখিয়া তাহার। , न भन्नी खुइनी क्रिकि मार्टनै हमश्कात ॥

ক্রিজ্ঞাসিয়া শুনিল তাহার বিষরণ। ত|त **पृश्राथ पृश्यिक इंडेल मर्कक्ष म** ॥ প্রহরী জানায় রিবরণ অধিপারে। দৈখিতে প্রমদা তবে চাহিল ভাহারে॥ আজ্ঞাক্রমে রাজপুত্রে লইয়া আইল। त्रक्रशुक्त अधिशीरत मन्नारम विम्ला। " প্রমদা সেখানে তারে করি নিরীকণ। यम्दन व्यक्षर्य इहेर्नन स्मर्रेक्षन् ॥ শহে ধৈৰ্য্য ধরি রামা **জিজ্ঞানে তাহা**য়। কে তুমি মন্মথাকার আইলে হেথায়॥ বিষাদ বচনে ক্লাঞ্চপুত্র যৌড় করে। ভাষার্ভ মুইর। তারে নিবেদন করে।। শুন হে ঈশরি জামি রাজার নন্দন। व्यक्तिद्वरक शाम्, नाम श्रीमद्वारन ॥ . याहेट७ हिलाम आगि भौनेशूत तमा। তরতে তর্নীতর্গ প্রাণ জাতে লোব।। ছत नथा न**्य हिल**्थाएवत नयाम। সবে-কোণা গোল আমি রখা ধরি প্রাণ।। বা হোক সাপ্রাদ্ধি এক জিজারি ভোষারে श्रुकेष मा दनि दुकुन अभेज नगरत ॥

সকল স্কুন্দরী হেরে, ভয় পাই মনে । তোমার জিজ্ঞাসি ইহা সন্দেহ কারণে।। কিবা তব নাম কেবা র:জ্যে অবিপতি। বিশেষ কহিতে মোলে হয় অনুযতি !! প্রদা বলেন শুন রাজার মক্ষম। বিং রিয়া বলিতেছি সব বিবরণ।। র্যতাক্ষ নামে এই রাজ্যের ঈশর। প্রমন আমার নাম তাহার কোঙর।। এক দিন সজ্জা করি লয়ে সৈন্যাগ भूग जारुवान सामा खारविन कासस ॥ তথায় আছয় এক রম্য সরে। বর । প্রহরে নির্দ্ধিত ছাট স্রতি মনোহর।। নেবকন্যাগণ আসি সেই সরোবরে। সকলে একত্র হয়ে জলক্রীড়া করে 🏶 আচম্বিতে আমি ঘাটে সঙ্গে সেনাগ্ৰ লজ্জিতা হই**ল দেখি দেবকন্যাগণ** ॥ তটেতে বসন আছে উঠিতে না পারে। ক্রোধাবেশে অভিশাঁপ দিলেন আ**যা**রে॥ সরাজ্যে মুবজি হও স্বদৈন্যে সহিত। माकारक छेठिया श्रह गरिव एतिए॥ 🗽

व्यवार्थ (गःवांका क्ष्यू ना इम्र नक्ष्यन। गरेमरना कामिनी क्रथ रहेन् उर्थन ॥ हिन रह क्षेत्रप्त नाम इहेल क्ष्यपा। এবে সভাসদ নারী সভেতে সর্বাদা।। শুনি রাজপুত্র থেদে নিশ্বাস ত্যজিল। ভনিয়া প্রমদা অতি দুঃখিত হইল।। একে মন আক্ষিত্ত আছিল তাহার। অধিক হইল, রাজপুল্ল দুঃশ্বে আর !! শূপস্থতে কহিলেন আ**খাস ক**রিয়া ^৫ মন পুরে রহ রায় নির্বিত্ত হইয়া ।। তব সধা সকলের উদ্দেশ করিব : কোমারে তে:মার দেশে পাঠাইয়া দিব। বিপদে কুমার তবে পাইয়া আশ্বাস। 🌉 ল ভাছার বাক্যে পরম বিশ্বাস ॥ প্রামদা দিলেন আজ্ঞা নত্রদার প্রতি। ইহারে আমার গুত্রে রাথহ সংপ্রতি।। পশ্চাৎ করিব যোগ্য স্থান বিবেচন। নৰদা পাইয়া আজ্ঞা করিল গ্ৰম ॥ अख्धपूर्व नरस भिन अभा छवरन। नियुक्त कतिया नित छाकि मानिगद्व॥

রন্ধন করিয়া রায় করিল ভোজন।
এম শান্তি করিলেন করিয়া শয়ন।
নিজ প্রিয়া প্রিয় ভাবি নিজা নাছি হয়।
চিত্তায় রজনী কাটে কোঞা স্থাচয়।

মনবোহনের প্রমদার সহিত মিলন।

মালকোষ রাগ, তাল হরি।

য়। মননেরে শাস্তকর কান্ত সর্কী বসস্ত এ বছে মলয়া মাকত, মন সেরে রোমাহিত, মলন ভুরস্তা। কোকিল মন্ত্রীণি ভার, যার খার ভাব গার, ভাষারি নিভারত ফলগণ নেয় ভাল, অলিকুল কোলাল

ं अस्तुः।

मजनात तरक ताजभूटक श्रोजीचेता। तितरह असमा चाम्र तरिएक नातिस्था

সিংহাসন ত্যাজি অন্তঃপূরেতে অ,সিয়া। নভদা সমীপে যায় হাসিয়া হাসিয়া ৷ জিজ্ঞাসিল কৃষ্ কে খা ঐসনমেহন। নত্রদা জামান, ভোজনাত্তেতে শরন।। শুনিয়া ডাকিতে তারে ঈদ্ধিতে কহিল। दुविहा नअना इति कुमार्ट्स अमिन । নৰ্মকথা কতক্ষণ বয় সংগোপন। অন্তর দহিছে জাসি দারুণ মদন।। পঞ্চানে বহা বিদ্য়িছে মুখে লাজ। সহিতে না পারি লাজ শিরে হানে বাজ ভাবে লাজে কি করিবে মন্মধে দহিলে: পরে বহু পাব লাজ সংপ্রতি বাঁচিলে। िस्ति अञ्चलार १८७० थ्यमना रुटिए । প্ৰশাৰ বাহি বহে । এন অভ্যন্ত দহিছে।। এইত পুরুষ রত্ন করিলা দর্শন। প্রাণ মন করিয়াছি ইহারে অর্পণ।। নম্রদা ক্রেন বিব। ভয় ঠাকুরাণী। মানস করহ পূর্ব কহি স্পাই বাণী।। কিয়া আমি কহি যদি অনুগতি হয়। শুনিয়া প্রমদা তারে স্থপ ভরে কয়।।

তবে রা**লপুত্রে তুমি বলহ মন্ত্রী**ণি। বিনা মূল্যে রাখ পাদে মোর মাথা কিনি ! অনুমৃতি **পাইয়া লে** কুমারে বলিল। গুনি রাজপুত্র তারে কম্পিত হইল।। निक थिया गरन सादि दिंगे गूर्य त्या ' দেখিতা প্রমনা তবে ত্যাকে লজ্জা ভয়।। হাদিয়া আদিয়া ধরি রাজপুত্র করে। 💛 नहरू कठोक शांति क्टूट मृष्ट्रपट्ट ॥ শুৰ রাজপুত্র আমি দেখিয়া তোমায়: প্রাণ মন সকল সঁগেছি তব পায়।। थालित में बंत इंड जागि मांभी छव। আগার মনের দুঃখ কর অরুভব ॥ যেই ক্ষণে দেখিলাম তোমার বদন। সেইফ্রাপঞ্বাণ হানিল মদন : সহজে তোমার নাম জীমনমোহন। অবলা ব্য়িতে বিষি করিল গঠন ॥ রতিপতি ভয়ে তব লইমু সার্গ ৷ মরি প্রাণ যায় থায় দেহ আলিকন।। প্রমদার মুধে এত ভানিরা কুণার। मटन बरन विखा करने कतिया विवास ।।

वृत्तित्र रहेल अर्ग मात्रग रक्षन । প্রিয়া সহ আরু না হইলে দরশন 🥫 অস্মীকারে প্রাণ্ড হইবে আমার। খীকারে অধর্ম গ্রনেতে প্রদার 🗵 সহজে মাচিকা নিজ রক্ষণ্ডের মার -বাটিলে প্রিয়ারে পাব মইয়া উদ্ধার : এত বিচাবিয়া তবে এবোধি কৰিল। অমন্তব আছো কেন আনাৰে হইল " মংপনি অধিপা আমি ভোষার আমিত यागारत अमञ याद्यां मा इत्र छेतिल । माधित रक्ष्मां मा करिश वामी काइ। जालिकन (पर्कोच नागोनल नरक।। এতবলি অধিপা, গরিয়া তার করে: ত্ত্রায় লইয়া গোল শ্যম আগন্তে। বিচিত্র পর্যক্ষোপরি করায় শয়ন। বিপরীতা বিপরীতে হইল মগম ৷৷ আছা মারি কি আশ্তর্ধা কল্ফী অবতার: আছারে আহারী ধরি করতে আহার॥ पाइीत बांट्यांगा कार्या कहिल माधन। ভবে রাজপুত্র সভোফিলা তার মন।।

যদি বা শুরুত্তি মহে তথাপিও ত্রানে ।
করিয়া বিবিধ কৈলি ভূথ স্প্রকাশে ।
পাইয়া নাগরবর চঞ্চলা নাগরী ।
রতিরস সাধানন করে মন ভরি ।
রাজ্যের ইশ্রী তবে প্রভাতে উঠিয়া ।
বাজির হইতে নারে লজ্যার লাগিয়া ।
রাজ সিংহাসনে গিয়া বসিতে না পারে ।
কি হইবে কিবা করি মনেতে বিচারে ।
বোপন প্রহাশ হৈলে লজ্জিত অপার ।
রাজ্য না পালিলে হয় বিতথা প্রজার ।

मनरंगाहरूद व्यथहित विहात।

রাগ মালেকেবি, তাল জলদ তেতালা বে। এক দলে ভূলে জলি নহে নানানে। মন বসরাজ: সদত বিরাজ, সুরজাননে । বছ শ্বিক বাবে, যত্ত করে ভারে, ভারে व्यस्ता, वाकिष्टिक शादि। मनितिस कनी, कन्नमादि छनि, श्वी वाकिस। मीनवर्ग जीवन, जाव कीवन, जीवम विष्टान, जाद वाँकि कि कीवन, यांद्र (१४) विषित स्वयं त्रिष्टे निषित् जावे श्रम्ब ।

. একবিলী জ্বন।

মনে নানারপ ভাবি ললনা।
বহু চিন্তা পরে করি ছলনা।
বুঝি নরলা অতি মন্ত্রীততা।
কহিল করে ধরি লাজ হুনা।
বুগময় মাল প্রথে রহিয়ে।
তুমি সব রক্ষ সপক্ষ হুয়ে।
কহি নিজভার দিয়া যতনো।
মিলিল সুখে উপপতি সনে।
দিবা যামিনী নহে শান্ত চিতে।
অবিরত আশা করে মিলিতেয়া
খদন মদে অতি. মন্ত হোয়ে।
বিহরতি প্রিয়া সে কান্ত লয়ে।

প্রিঃ উঠিতে করু নাহি দিয়া। বয় শয়নে গ্রেখনে লইয়া। नित्रिधि लाख रिहीन हर्त। कारिगाठ मार्थां जिल्लामें कार्य। নূপস্থত যদ্যুপি যুদ্ধনে : শায়ন করে সতি খ্যা করে করি নিদাভক নির্লাজবড়ী। রতি বিপর্ভ করে অস্তী॥ নপত্ত দাদ নহে রভিচে। তর করিছে রতি ভীত চিতে।। निक तमनी हहेटन उपिट्ट । ত্ব লয় নাহি মানে **জ**নিতে ।। মপস্ত বঞ্চিল এইনতে। কত দিবসে নিশি অর্দ্ধ গতে।। হইল সুনিদ্রিত দে অসতী। নয় কিছুত চেত্ৰ ধূমবতী।। म्भक्क मुख्ये कर्त अभरमा **निङ् রম্ণী ব্রিয়া বিম্নে!!** বর বার লোচনে নীর বারে। বদতি বিসাদতি মান ভরে ॥

তুমি বসি আছ্ত এসদনে। नित्रिधि मछ देश्दर महत्य ।। कानि गग मधा भरा मन्दर। চল নব বল্লভ সে লগ্ৰে।। দশসূত কাতর জাগি যেবে . বিবহ মহাবল বাড়ি তবে। করিল অধীর ভবেত ভয়ে : উঠি শীরবে কিছু ধীর হয়ে।। তির্বি হার বাহির **আইল** রে। বিরহ ভারে ভেত ধাইল রেশ। कृतुः श्रूम कार्यम मदशा निया। বন্ধ অনুভাপ করে বসিয়া।। मत्रकाम दम्हि श्रूमका अदर्। श्रमन दिलाहर साहि मुद्र । অতিশয় নিজয় আমি বটে। মম বিরহে তব দুঃখ ঘটে।। যত যত আছিল খেদ মনে। করি অনুভাপ কছে সঘনে !! নয়ন পরে উভুকান্ত পরে। ছিত্রণ পরাক্রম ভাপ করে।।

অতিশয় আকুল খেদ ভরে।
কভু রয় ধীর অধীর পরে।
কভু নিরথে অতি তাব ভরে।
বিধুবদনা সমুখে বিহুরে।
হিনত মুখে ধরি তার করে।
ধরিল যথা নিজ বক্ষোপরে।
হইল বিহ্নল সুখে তথনে।
নিদ্রা দিল হৈমবতী নয়নে।
ক্বিতা করিয়া ও সাধু বলে।
ভুবিশান করে বিরহ জলে।
আনন্দে শুনিয়া এ কুভূহলে।
হইল সুনিদ্রিত রক্ষতলে।

প্রবন্ধা রামকেলির;ে, তাল ঠুংরি 🕧

রজনীকর না কর দাহ করে। নম কান্তর
মারক দাহক রে। কুন্মা করের স্থাতিল
চাবক রে। হলিমারক মার সহায়ক রে।
মলহাচল চঞ্চল মাকত হে। চল নে স্থাল
গে দহিতামুত হে।। অলিরাজ বিরাজ
সহোগ ধহা। মাহি তপ্ত জনে করে যোগ তহা।

यसरकाहरमञ्जूषिक श्रीत्र श्रमम ।

क्षा ।

বকুল রক্ষের তালে মুদ্রিত নয়নে 🗆 মিদ্রাগত রাজপুদ্র আছে অচেতনে। দক্ষের দুহিতা **এক নাম রত্নাবতী** : বথে ভ্ৰমে পস্কজান্দি স্থীর সংহতি।। প্রমদার পু**জো**দ্যান মনোরম অতি। শোভা দেখি তথায় আইল রক্কারতী। বসন্ত সময়ে নানা পুষ্প বিক্ষিত। মনুগক্ষে মত্ত অলিগণ গায় গীত ৷ মলয়া অনিল তাহে মন্দমন্দ বহে। প্তথ গন্ধ সহ মিলি বিরহীরে দহে।। ফাব্রুণে আঞ্চণ শশি কিরহিণী জানে। হিমকর মহাভীম কর বলি মানে॥ फेनगटन **क्रमन करत यरकत पृ**हिण्। স্থী সঙ্গে হ্ৰান্তে আতি আছে প্ৰীড়িতা এইরূপে রত্নাবতী উদ্যা**নে বিহারে**। भा. इंदिए बाक शृंहक नितीकन करता।

দেখি রূপ রসকুপ গেল সে ভলিয়া: भनन आछन ऐड्टे शिखन छालिया ॥ সারথিরে কহি তারে, রূপে তুলি নিল। নিজ গৃহে গিয়া পূজাতলে গুয়াইল :: দোষ গাঢ়-নিক্তা নিদ্রাভ্য না করিল। 'भार्क रिक सम्ब दलनी भीहाईन ॥ রাজপুত্র চ**দ্ধু মি**লে প্রভাতে জাগিং।। চম্কি উঠিল চিত্রালয় নির্থিয়। भार्य होग। एन्थिन शहम क्रशरे । নাহি জিল্জাসিতে কন্যা ক্রহে তার প্রতি ৷ শুনহ পুরুষবর না ভাব বিষয়। नद्रलाक नर्श् धरे यक्तश्रुवी रहा। স্থদ য**ক্ষের কন্যা আমি** নভাবতী। দেৰিয়া তোমারে স্থুখ পাইয়াছি অতি।। ঘদি বা মান্ত্র তুমি রূপ দেবত্ল্য। আমারে কিনিদা লইয়াছ বিনামূল্য ॥ যদন দহিছে অঙ্গ কর পরিত্রাণ। রতিরস বিহরিয়া শীঘ্র রাথ প্রাণ্ শুনি রাজপুত্র মনে মানে চমৎকার। যথায় তথায় একি সম্কট আমার।।

যদিবা যক্ষের কন্যা অভি রূপবভী। তবুরাক্ষকন্যা বিনা নহে অন্য সতি। ভাবে এই পুরী হৈতে কেমনে যাইব। কি রূপে এ**খন আ**র প্রিসারে পাইব।। হাত ভাল ছিলাম সে স্তুখে ক্ষিতি তলে প্রিয়া পাইতাম এড়াইয়া কোন ছলে! ইহার বচন যদি না করি,স্বীকার। এখনি হারাব প্রাণ কি আর বিচার।। পাইব প্রিয়ারে কভু যদি প্রাণ পাকে। গ্রহণ করিতে তবে হইল ইহাকে।। দৈবের নির্বান্ধ **খ**িবারে শক্তি নয়। এতেক ভাবিয়া পুনঃ প্রবোধিয়া কয়। আমি নর সাপনি হয়েন যক্ষ কন্য। অস্ত্রত আভ্যা কেন করেন স্থান্য।। আমি অতি তুচ্ছ তব অত্যে স্থানিশ্য। তত্ত্ৰ**ব হেন আজ্ঞা স**মূচিত হয়।। রক্তাবতী বলে রাখ ও সব বিচার। দ্বরায় বাঁচায় প্রিয় জীনন জামার। এত বলি কটাক্ষ হানিয়া বসৰতী। কাতরে নাগর করে ধরি ত্রা অতি।।

বিচিত্র শ্যায় লয়ে রতি বিহরিল : মদৰে মাতিয়া অন্ধ শীতল করিল । এইরূপে কিছু দিন রাজপুত্র রয়। তথায় শুনহ আর যে বিপাদ হয়।। বিচিত্র য**েক্ষর সহ সে রত্বাবভী**র। •পুর্ব্ধে বিবাহের কথা হইমাছে ছির।। পরস্থা এ ঘটনা বিচিত্র জানিল। রত্নাবতী নিজ গৃহে মান্তবে আনিল।। রাথিয়াছে কি রূপে তদত্ত নাহি জানে: তথাপিত অন্যুষ্ট করি অনুমানে ! কোষে অনুমতি দিলু দুই অমুচরে। রত্বাবতীপুরে তোরা যাওরে সম্বরে 🛭 তথা আছে স্থন্দর আকার এক নর। অবকাশে ধরি তারে আনহ সত্তর ॥ রত্নাবতী জানে যদি নারিবে ধরিতে। সংগোপনে থাকিয়া ধরিকে সাবহিতে ॥ আদেশ পাইয়া দুই অনুচর ধায়। উপস্থিত হলো তারা আনিবারে তায়।

মনমোহনের পঞ্চশাক্ষরে কালীন্তর একং বন্ধন মুক্ত।

পূরা। বারে বারে এই বারে রক্ষ বালী এবারে।
কে জানে যা এত ঘরালা; জাতে আনার
ভব শারে। করিন্ত পূত এলেং লয়ে।
বার কেশে: নক্ষ করিল পানে;
বানেতে ডাকি ভোষারে। বন্ধনেতে
বায় প্রাণ্ড তালকরী কর আন।
বিনি হল ক্ষনান, মা কড় ভাজিতে নারে।
হটনায়ে দিবাপদ, ভারা চাতে তালেদ্দ,
থানেনা বিশ্বাপদ, বারেক যে ডাকে মারে।

ल्मा ।

দূষন ভীষণ দুই অনুচর গিয়া।
রক্লাবতী উদ্যানে রহিল লুকাইয়া॥
দুই দিন কিছুমাত্র নহিল উপায়।
তামিক করিল কার্যা তৃতীয় নিশায়॥
তাম নিশি রক্লাবতী রাজপুঞ্জ সজে।
কাশেব বিশেষ ভুঞ্জি রতি রসরঙ্গে॥

রদের আবেশে নিদ্রা যায় বোরতর। রাজপুত্র সদ। প্রিয়া বিহনে কাতর।। উৎকণ্ঠায় উঠিয়া আইল মে উদ্যানে। বাজ্কন্যা করি কান্দে সংখদ বিধানে।। माच कृत्य जामि सम्हे मुद्दे अनुहुद्ध । हाजभूरत दिश रेश जान**स अ**खंद । विवित्त मगीर्भ धति नईशा हिनन। এই লহ বলি তবে অথ্যে ফেলি দিন ॥ রাজপুত্রে, দেখিয়া বিচিত্র ক্রোধে জ্বলে। বন্ধন করিল তারে লোহার শিকলে॥ কর পদ বান্ধি গৃতে ফেলিয়া রা**খি**ল। রুহৎ প্রস্তর বুকে চাপাইয়া দিল।। ঞীন্নমোহন গোর বন্ধনে পড়িয়া। কালি কালি বলি ডাকে কাতর হইয়া। ष्ड्या, जानका, इकेनाविनी, क्रेमानी। क्या, डेका, अञ्चली, क्षवाम-नामिनी ॥ -লিহ বর্ণাত্মকা, একা, একান্ত ভারিনী। उकाता, उकाता, जरमा, जःविष्ठकातिनी ॥ लपूर्वा, बार्सिनी, शका, त्यादानक दना চপলা, ছিল্লানী, জয়া, ঝাপেনী, নিপুণা।।

ট ক্ষারা, ঠাকুরা, ভরহরা, চল চলা। নারায়ণী, তেজাস্থিরা, দানবেন্দ্রদলা।। ধনদাত্রী, নববয়া, পার্বেডী, ফলিনী। বরান্সী, ভবানী, মুওমালা, বিধারিনী॥ যোগাসনা রক্তামরা, লোলজিহ্না ধরা। रेरकती, ७५५, रहेप्यंग्रा, म्झाकातात र्तिथिया, फिलाबि, अन्नजा, मर्दागिति আমি অতি মূচমতি নাখি জানি ভক্তি॥ দারুণ বস্কুনে প্রাণ ছাটকট করে। তরাও তারিনী স্বরা ভাকিতেছি ভবে।। ডিঙ্গা ভঙ্গে পড়িলাম সিন্ধুতে যথন। রক্ষা পাইলাম আরি তব জীচরণ !! করগো উদ্ধার যোর বিপাদে হেতাব। তোমা বিনা কেছ নাছি করিতে নিভার: এইরূ**প সকাতরে অ**নেক ভাকিল। किलारमं करूनामग्री अखंद जानिन ॥ খভক্তের হৈতু মাতা সদাই কাতরা। বিচিত্র জন্মী মনে প্রকাশিল তার।॥ जिहिट खेत जनसी अखना नांच घटता এই।কথা শুনি অতি ব্যাকুল অন্তরে॥

পুত্রের সমীপে আসি কহিছে বচন। কুকর্ষে বিচিত্র চিত্ত, কেন বাছাধন ॥ নারবের সাধ্য কি আসিতে যক্ষপুরী। রত্নাবতী আনিল ইহারে করি চুরি।। যেরপ **সন্দেহ** তুনি মনে কর জার। নিশ্য **না জান কিছু ইহার নি**র্দ্ধার ।। विना भारत मध कत बर्र डेशयुक्त। এইক্সেন ইহার বন্ধন কর মুক্ত॥ মাতৃ আজ্ঞা বিচিত্ৰ লজ্জিতে নাহি পারে: আজ্ঞামাত্র মুক্ত করি দিলেক তাহারে।। স্কল। আশ্বাদ করি রাজপুত্রে কয়। কহ বাছা কোথায় যাইতে বাঞ্চা হয়।। ভয়ে রা**জ**পুত্র তার পদে ধরি বলে। যদি দয়া হইল পাঠাও ক্লিতি তলে।। ভীষণে দিলেন আজ্ঞা ুস্কস্রদা তথন। हेहाँद्व लहेबा कर शृथियी भमन ॥ স্ত্রদা বিচিত্তে রাজপুত্র নতি করে। 🦓 ভीষণ পাইয়া আজ তাকে পৃষ্ঠে धरंत्र ॥ লইয়া রাখিল কিডিডলে সিদ্ধু তীরে 🛊 মুক্ত হয়ে রাজপুত্র তীরে তীরে ফিরে॥

ভূমিতে ভ্র**মিতে দেখে এ**ক যোগীবর। নবীন বয়স তার রূপ মনোহর। তীরে বসি করিছেন গৌরীর পূজন। দেখি রাজপুত্র তারে করিল বন্দন ॥ উঠিয়া সম্ক্রাসী কাল্দে পড়িয়া ভূমিতে। রাজপুত্রে বুন্দিলেন উঠি আচ্ছিতে। . কারণ না বুঝি মনমোছন বিষয়। সভয়ে জিজ্ঞাসে হেন কেম মহাশ্রয়॥ আমি রাজপুত্র হই আপনি সম্যাদী। আমারে বন্দনা কর অতি ভয় বাসি।। সল্লাসী বলেন রায় সল্লাসী মানিছ। অপেন সেবক জনে জেনে মা জানিছ।। গুনি চমৎকার মানি তারে উঠাইয়া। <u>এরক্ষোহ্ন জানি আলিজন দিয়া।।</u> আনন্দে বিশ্বল হয়ে জিজ্ঞাসিল তারে। কহ সধা হেথায় আইলে কি প্রকারে।। ভাহারে কহিল আপনার বিবরণ अभि हमद्यात गानि मिखित नम्दन ॥ নিজ বিবঃশ বিভারিয়া কহে তারে। ग्रासन्त गरन घरने छ। गिराह अउदत

্রিরঙ্গমোছন-স্থার বিবরণ।

নুষকাপী। তাল চিমেতেতালা।

ইনি হৈ চউক, প্রাণ যায় যাউক, আমার
লোদ নাহি ভাছাতে। ভোমাবে পাইলাস

কর্মক করে লাজেতে। লোকে বলে
লোকিনা হছল কুলেতে। জামি বলি
শাদিনে জাইলাম কুলেতে।।

श्राम

শারসমোহন কহে গুন মহাশয়।
বান্ত পরি ভাসি যাই দুংখিত হাদয়।
উঠিয়া তৃতীয় দিনে তীকের উপর।
দিকোলয় দেখি এক কানন ভিতর।।
বিচিত্র নির্মাণ পুরী অতি চমৎকার:
নাত পাঁচ ভাবি হেন আলয় কাহার।।
ভব্ব হয়ে আছি তার দারে কতক্ষণ।
হনকালে আইল রমণী এক জন।।
আমারে দেখিয়া অন্তঃপুরে গেল তুরা।
তথ্নি আইল পঞ্জামা মনোহরা।।

ঈবদ হাসিয়া ভারা কহিল আমায়। কে তুমি পুরুষ-বর আইলে হেথায় 🖰 যক্ষকন্যা হই মোরা এই পঞ্চ জনে। নির্জ্জন কাননে বাস করি সংগোপনে আপনি কে মহাশয় দেহ পরিচয়। শুনি কহিলাম সব করিয়া বিনয়॥ বিধরণ শুনি পঞ্ যক্ষের তন্যা। কহিল পুরুষ বর কর ভূমি দয়া।। রতি দান দেহ পঞ্চিরহিনী জনে : এইপুরে রহ্ স্থাে আমাদের সন্নে।। শুনিয়া কম্পিত আমি না ক্ষুৱে বচন ছন্তিতের নাায় তবে রহি কতকল।। কহিলাম দেহ ক্ষমা আমি নুঃখী অতি। দে কথা না মানি করে ধরি শীন্তগতি। श्रह मरध्य लर्ग निवयामरन वंत्राइल। मामिशन मह वस् ऋक्षमा कतिल। তবে ভোজনাত্তে হারাইয়া ধৈর্য মুল। রতিদান চাহিলেক হইঃ। ব্যাকুল।। বিদ্যালভা, খার্লভা, তরুলভা আর । রামলতা, শ্যামলতা নাম পঞ্মার॥

্রকে মন ব্যথা ভার হলে। পঞ্চনারী। ভাগ্ৰক কি কৰ দুঃধ বুঝাই বিচারি।। क श्रीकादत श्रांगप्र वृत्विश्रा निर्कातः ाहारमत भिक्छ क्रिय अभीकात ॥ বাদি অতি রূপকতী ভারা সুনিশ্রে। জারু নিজ দুঃশে স্থে সনে নাহি হয় দ লতে আমি একক হইল পাঁচ তার।। पृश्र्यंत्र **উপরে** দূর্য **হইলাग** সারা ॥ एएलक्ना पूर्वा नांती तत्न बुश्यव। একজনে আশী কলা হইল ঘটন। ার দুঃখ জারুমান কর মহাশয়। প্রনি হাসি চলি পড়ে রাজার তন্য ।। হাসিয়া হাসিয়া বলে পরে কি হইল । পুনর্কার **মন্ত্রীপু**ত্র কহিতে লাগিল ॥ তাহাদের সঙ্গে আমি আছি এই মতে চমং**কার শুন ত**ার এক মাস গতে।। জ্যেষ্ঠাভট্নী ভাষ্ট্রদের প্রিয়লতা নামা। ভগ্নিগ**ে দেখিতে আইল সেই** রামা।। দৰে **হতে তাহারে দেখি**রী পঞ্জন। পুরু মধ্যে আমারে করিল মকোপান । ¹

ক্ষেত্ৰক দেখিয়া আমি থাকিয়া গোপনে পরস্পর মুখচাতে বিষাদিত মনে । জ্যেষ্ঠা প্রিয়লতা তথা আইলেন তবে। ভधी उधी रानेश शिनिन छोडा महत् । রতিভোগ লক্ষণ দেখিয়া ভগ্নিগণে। কহে প্রিয়লও। অতি বিষাদিত মনে। একি বিপরীত দেখি কহ ভায়িগণ। কোন পুরুবের সহ করিলে গিলন।। द्रिक किल प्राचि व्यक्त मन्त्र कार्यायत्। ইহার কারণ কিবা বলহ সত্র । বিবাহিতা নহ তোরা একি চগৎকার। কাহার সহিত রতি করহ বিহার 🖰 শুনি পঞ্জিগনীর মূথ শুখাইল। বঞ্চনায় ভুলাইয়া রাখিতে নারিল !! চরণে মরিয়া তার **শান্তনা** করিয়া। সব কথা তাহাকে কহিল বিস্তারিয়া॥ প্রিয়লতা কছে তবে ক্লাগর কোপায়। শুনি তারা করিলেক বাহির আমায়॥ ্ হাসিয়া হাসিয়া তবে কেতুক করিয়া। প্রিরলতা কহে সম করেতে ধরিয়া।

ভাল মুনচোর **তমি হেথা**য় আইলে। মন পঞ্চ ভগিনীর মন ভুল হিলে।। দ্ৰে অল অনক্ষেতে গ্ৰ উচ্চিন। ্কিত না হয় দেখি উল্থিত মদন।। দেখিয়া তোমার রূপ জীরক্ষমোহন। লেই দিতে তোমারে আমার হয় মন ৮ াঞ্জার হানে বক্ষে রক্ষা নাহি আর: উভন পালেতে বদ্ধ নহে পলাবার।। ্রতেক কৌতুক করি ভাট্নিগণ সঙ্গে। ্রানাদি ভোজন তবে করে অতি রক্তে।। 🕫 ভগ্নী শয়ন করিল এক ঘরে। গাচেরে নিম্নিত দেখি প্রিয়লতা গারে ৷ নিঙ্গ গুণ প্রকাশিল সেই রসবতী। নিন্তকে আমার কাছে আসি লযুগতি !! কহিলেন প্রাণমাধ দিয়া রতি দান। কাম সিদ্ধু হইতে করহ পরিতাণ।। তব রূপ রসকুপ দেখে মোহময়। পহিছে **আমার অজ হও হে সদ**য়।। আসিলাম প্রিয়ভাতে অত্যন্ত গোপনে। ইক্ষকির রাখ প্রাণ আলিক্ষন দানে॥

চমৎকার আমারে লাগিল বাক্য তার। কি করিব করিলান তারেও স্বীকার।। তৃষ্ট হয়ে প্রিরলত। কৃষ্টিল আমারে। সঙ্গে করি লয়ে আধি যাইব তোমারে॥ কি করিবে পাঁচ ভগ্নী আমি লয়ে নাব। দৃই জনে দিবা নিশি মহাস্থা পাব।। করিত মনের স্থুখ সেখিয়া নির্জ্জন। মন আশা পূরাইব মনের মতন।। এতবলি তিন দিন চৌর্য্য রতি করি। प्रकृषे दक्ष**मी जास्त्र** एकिश स्नादी ॥ নিদ্রিতা ভবিনিগণ প্রিয়লতা জানি ! উঠাইল আমারে ধরিয়া বাম পাণি।। নিজ সথী সূপ্রভাকে তবে উঠাইয়া। निः गरक विलल हुमा माश्रात लहेशां॥ दाहिद्र आहिल देव किशिल छाहा । বায় ভবে চলৈ রখ তাহার ইচ্ছায়।। গোদাবরী নদীতীরে নিভৃত কানন। তথা গিয়া বিহার করিয়া কতক্ষণ ॥ ্ত্রতীয় প্রহর রা**ত্তে তবে** রসবতী। ব্লকতলে নিদ্রা পেল আমার সংহতি॥

দলীও নিদ্রিতা তার রথের উপর। ্ঠিলাম ত্রায় পাইয়া অবসর॥ ানঃশ্বেদ প্রস্থান করি অত্যন্ত গোপন ্কৃথা খাই ঠিকু নাই করি হে গমন দ থ্যসাহইন রবি পাইলাম ত্রাণ্। ্রুনে ক্রেনে সিন্ধতীর করি দরশন ॥ রেমা পাইয়া স্থান অতি মনোহর। ভগার **বসিয়া আমি ভাবি** বজ্ভর ॥ ্লাথা গেল প্রিয়স্থা রাজার নন্দন। গ্য স্থা স্থ্যে কারো না হয় দর্শন ॥ মনেতে না লাগে পুধ চিন্তামাত্র সার। অঞ্জলে পরিপূর্ব কাঁদি জনিবার।। ত্তি ক**রিলাম বহু তব অন্নে**য়ব। জানে স্থানে চাহি, নাহি পাই দরশন া নক্ষাদীর বৈশ ইরি ছিলাম হেধায়। ্ৰ শুভ **দিবস আজি দেখি**য়ে তোমায়।। পনি রাজপুত্র এত বিষয় অন্তর। শীরক্ষ**োহনে একং সিলা** বহুত্র ॥ ার প্রিয়সখা তুমি আমার কারণ। 📉 জ্বিয়ে ছয় রামা করিলে ত্যজন।।

এতবলি পুনঃ ভারে করি আলিম্ন ! হ্রবিতে গথে চলিলেম দুই জন।। সিদ্ধাতীরে রম্ম এক উদ্যান দেখিয়া: সংখ্য সঙ্গে রঙ্গে তথা প্রবেশিল গিয়া 🗓 নানাজাতি পুল্প তায় বসতের কালে। মনোহর পক্ষী এক দেখে ব্রহ্ম ভালে 🔠 প্ৰ-বৰ্বক্ষ, নীলম্বি পাথা তার। পু**চ্ছ শূত্র**বর্ণ, চ**ঞ্**লোহিত আকার॥ পক্ষী দেখি চমৎকার মানিল কুমার। হেন পকী নয়নে না দেখি কভু আর s রাজপুত্রে দেখি পক্ষী অস্থিব হইয়া। তাহার করেতে আসি বসিল উড়িয়া।। পক্ষী কहে गारक मिथ পক্ষी मिहे सह। গক্ষীরপী নর এই জানিবে নিক্য়। পদাকুরি খুলি দেখ দাস আগনার। খোর পাকে পড়ি পাই এরপ আকার। শুনি চমুৎকার মানি রাজার নক্ন। খুলিয়া দিলেন তার গ্লাচের বন্ধন।। मन्त्रा इहेल शकी रक्षम थुलिए । **জ্ঞানমো**হন বলি চিনিল ত্রিতে #

পরস্পর মিলি করে দৃঢ় আলিকন ।
তাননদ সাগরেকায় হয় তিন জন ॥
বিধির ঘটনা ক্রমে হতেছে মিলন।
ক্রেভিত তিন জন হইল এখন ॥

ভানমোহন স্থার বিবরণ ও রাজ্য প্রাধ্য

য়ানিনী কালাছে। তাল তিওটা প্রান প্রভাপে বুমি, প্রাণ কুমি কি ভূপাত হলে। আমার আশারে তুমি, জনানে শহিলে। আশা উদ্ধারিতে মন। নোলহে তব সদন, সেই পথ হল সে দে; লাবে কি ক্ষরিলে। লাফ ভয় শাস্তমতি, গরহ প্রবল অতি, ইহারে দমন কর।

লমু ত্রিপদী। বিত্যানে, জিজ্ঞানমোহনে, জিজ্ঞানিল রাজস্কত।

অতি চমৎকার, ঘটনা তোমার, কহ সথা কি আছি তু॥ মন্ত্ৰীপুত্ৰ কয়. ভন মহাশয়, कारमाभा छ विवयन। ভগ্নাষ্ঠে যবে, ভাসি যাই তবে. শোচেতে ক্যাকুল মন।। দিতীয় বাসেরে. উদিত ভাস্করে. উঠিলাম यदन 'छीटन । कालिक हटा. कतिया यहा. जीदत खीदत याहे शीदत ॥ প্রবেশ করির গিয়। रेमन अति ताश, रेमना मिसू था थ, তরক্ষেতে প্রবেশিয়া ॥ অতি কোলাহল, চ্ছুরম্ম দল, मभारक मकरन व्याष्ट्र। দেখিয়া আমায়, জানায় রাজান, ভূপ এল মোর কাছে।। জিজ্ঞানে রাজন, তবে বিবরণ. क्ष्णि ग्रितंश।

∞নি হাউনতি, হ্ইয়া ভূপতি, किला निज পরিচয়।। बोद्धानरगहन, छन्द काइन, চিত্রপ্রে মোর ধান। াজা চিত্রেশ্বর, তাহার কুমার, চিত্রাপদ মোর নাম।। ^্ল**্বিশ**শেল, বিহীন তন্ত্র, मना पुरुष छोठं गान। ार्श को नामिनी ना ना विश्वानिनी, কালী প্জে একাসনে॥ ডবে ম; অভয়া, হইয়া সদয়া. কহিলেন তার তরে। ধ্য মহারাণী, কহি ঘেই বাণী, পুত্ৰ পাৰে জন্মান্তরে 🗈 ভলতে তোমার, না হবে কুমার, अन याद्य ब्राज्य ब्राट्ट । মুল্লা কারণ, রাজা যাবে বন, मम मार्क उथा भारत। अति निक रात्म, भूछ निर्कित्भारय, हाकार्यम मगर्रिट्य।

তবে দুই জনে. নিবিড কাননে, গিয়া যোগ আচরিবে॥ কহি এই কথা, অন্তর্ধান মাতা, ৱাৰ্গী **মোৱে জানাইল**। শুনি ততক্ষণে, প্রাকেশিয়া বনে, अस्तिकारिकारिकः। তোমারে দেখিয়া, আনন্দিত হিয়া. कुछ इहेलांग मत्न। আর্গি শুভদিন, তমি হে প্রতীণ, আমি তোমার কারণ॥ व्याप्ति भुष्ताति . कालीव महाशे. দেখা হয় তব স্থে। ভাঁছার বচন, না হয় খওন, মিলিল এতেক ক্ষণে॥ ত্মি দেবী দাস, পুরমন আশ, চল বাপু রাজ্যে যাই। আসিয়া শীকারে, পায়েছি শীকারে, স্বীকারে শীকার পাই॥ কম্পিত সঘন, শুনিয়া বচন, মুখে নাইক্ত টে বাণী।

সম্ভ্রে বন্দিয়া, বিনয় করিয়া. কহিলাম মুড়ি পাণি॥

জাজা যেই সব, দাসে অসম্ভব, আমি অতি দীনাশ্রিত:

তই হাজ্যভার, ন্য প্রতি ভার-নহে তাহে মহ প্রতি :

িছু **না শুনিয়া,** করেতে ধরিয়া, নিজ রথে তুলি নিল।

মঙ **মৈন্যগ**ে।, সভ্র গমতে। চিত্রপুরে উভরিল।।

খিনিরা **যথন,** ডাকি প্রজাগণ, রাজ্য অভিযেক করে।

োজ সিৎহাসনে, বসায় হতনে, শোরোপারি ছত্র ধরে।।

চামর ব্যক্তন, করে প্রজাগণ,

जामिक्ड ग्रन मृद्य ।

অতি সমাদরে, নানা উপহারে, ভোজন করান তবে॥

আদি রাণিগণ, পুত্রের মতন, অভি সমাদর করে।

राग डेलरांग, भरती डेहान. হয় প্রতি বারে **যরে**॥ দিবা অবসাথে. শ্বায় শুনুনে, পালাইল বিভাবনী: জীদর্গা ঝরিয়া, প্রভাতে উঠিয়া-दिमित्तम मुख्य करिया। য়াজা তিত্রাক্ষর, ডাকি মভাসন, মন্ত্রণ করিলা সার। র:জা সিমুলার, বিপুনাক রায়, কন্যা এক আছে তার ৷৷ क्रमही मामिनी, प्राथ (वाहिनी, মম বিভা কেবুরায়। निर्थं नत्रदात, . यभ शृख वरत. বর নিজ দুহিতায়॥ সিমুলার পতি, গত্র পাঠে অতি. হর্ষতি হয়ে ভাটে। লিখে এত্যতর, লয়ে পুত্রবর, अन्। आदम सम भारहे॥ অ'জি ওভ দিবা, দিব কন্যা বিভা. হৈল মম ভাগ্যোদয়।

লয়ে এম পাত, সহ পাত যাত, অবিলয়ে মমালয়।। छ है পত नहा, जल बाख निहार. ब्यानाइन गर्गाणावः ट्या हाल्य. गुट्य निज्ञान. হইলেন তাঞ্সার।। ्रतंत्र प्रतनः याना (कालांश्टल, বরবেশে গোরে লৈয়া। िलि पृथ्वेहरत, मिश्रुल बहारत, উপনীত देशल शिक्ष्या फेटरे वांका श्रीन, जुड गुर्थ खिम, বিলুপাক আঞ্যান। নবে সমাদরে, 🐪 লয়ে নিজ পুরে, भारत कन्। केन मान।। বিধি অনুসারে, বাজ ব্যবহারে, বিকাহ করিয়। সুখে। ব'সর বঞ্জিয়া, প্রভাতে উঠিয়া, কন্যাসহ সক্ষেত্ৰে।। লিখায় হইয়া, স্বারে লইয়া,

ত্বে আসি নিকেডনে।

সকল অপিয়া. রাণীরে লইয়া: हिजांकन (शल दरम ॥ তবে সুযত্তে, বসি হপাসৰে, প্ৰজা পালি প্ৰতাৰ। আযার শাসনে: সুধী প্রজাগনে. गदर देशन दशीकुछ॥ नांटन भीनजरन. बमनी बगटन. ক্রে তুষি সর্বজনে। जुर्थी श्रकांशन, पूत्रथ दिरमाहन, দার সুত ধন জনে। আমারে প্রশান্দে; প্রিয় সর্ব্বিদ্ধান नट्ट इन्तृ शतस्त्रतः! সবংশে নিধন. হত শত্রগণ इहे कृष्य अक्षेत्रना

জ্ঞানমোহনের পক্ষীরূপে ভ্রমণ

কাণিনী লুমকাপী। ভাগে চিমে তেভালা লাখাব উড়ে গেছে মনপাথী, সই। কে আর আনিয়া দিবে কাবে বা কছিব স্থী।। ভাগে পিঞ্জরে ছিল, পলকেতে পলাইক, পুলা দেব এবে হল, ঝোরণে আঁপি। কছে জিভারাচরণে, ওজলা কি পোধ্যানে, পালিলে এক যন্তনে, দিল দে কাঁকী।।

शक्र

ইরপে রাজ্যপালি হয়ে রাজ্যেশর।
ক্রেকালে আইলেন এক যোগীবর।।
হতি তেজ্পপুঞ্জ যোগী কান্তি জ্যোতির্ময়ঃ
ব্রুমে প্রণমি জিজ্ঞাসিয় সবিনয়।।
কাথা হইতে আগমন গমন কোথায়।
মালয়ে মহাশয় কিবা অভিপ্রায়॥
মাশীর্বাদ করি তবে কন্ যতীশ্বর।
ানা তীর্থ করি ভাবি দেশ দেশান্তর॥

(5.)